15, II

त्रैमासिक

श्रीः

श्रीस्वाध्याय

हेमन्ताङ्क

वर्ष
१५
सं० २०१२

संख्या
२
पौष

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः

वार्षिक
मूल्य
४)

इस अङ्कका
मूल्य १।-)

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

विषय-सूची

ग्राहकोंको आवश्यक सूचना

'श्रीस्वाध्याय' वी० पी V. P. P. द्वारा उन्हीं ग्राहकोंको भेजा जाता है जो आरम्भसे स्थायी ग्राहक हैं और वी० पी० भेजनेके लिए कार्यालयको पत्र द्वारा सूचित कर देते हैं । बिना लिखे स्थायी ग्राहकोंको भी वी० पी० नहीं भेजी जाती । नये ग्राहकोंको तो वार्षिक मूल्य ४।) मनीआर्डर द्वारा प्राप्त होने पर ही अङ्क भेजा जाता है । जिन ग्राहकोंने अभी तक १५ वें वर्षका मूल्य नहीं भेजा है वे अब शीघ्रातिशीघ्र सवाचार रुपये भेजकर नववर्ष विशेषाङ्क तथा यह 'हेमन्ताङ्क' मंगवा लेवें । जो सज्जन गत वर्षके वसन्ताङ्क(अप्रैल १९५५) से 'श्रीस्वाध्याय' के ग्राहक बने थे उनका मूल्य भी इस अंकमें समाप्त हैं अतः वे भी अपना वार्षिक मूल्य ४।) शीघ्र भेज देवें । अन्यथा उन्हें आगामी अङ्क प्राप्त न हो सकेगा ।

गत ता० ६ दिसम्बरको मैं शिष्टमण्डलके साथ महामहिम श्री राष्ट्रपतिजीसे भेंट करनेको दिल्ली पहुंचा था । ता० ११ दिसम्बरसे ही मुझे श्लेष्मज्वर (इन्फ्लूएन्जा) हो गया और बादमें पाण्डुरोग (पीलिया) का प्रहार हुआ, अतः कई दिन तक मैं कोई भी कार्य न कर सका और न सोलन जा सका। इस अवधिमें इष्ट मित्रों और स्नेही सज्जनोंके अनेक पत्र और ज्योतिष सम्बन्धी कार्यके लिए शुल्क एवं सूचनाएं पहुँची, उनका समय पर उत्तर नहीं दे सका इसके लिए क्षमा प्रार्थी हूं । अब मेरा स्वास्थ्य पूर्वापेक्षा ठीक है, फरवरीके प्रारम्भमें सोलन पहुँचकर कार्य निपटानेका प्रयत्न करूंगा ।

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी

❀ श्रीः ❀

श्रीस्वाध्याय

❀—✳—❀

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—
सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य
श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

—❀—

संरक्षक—

धर्ममार्त्तण्ड राजासाहब श्री १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी० आई० ई०, सोलन।

श्रीमान् रायबहादुर सेठ तोलारामजी गजराजजी जैन, लाडनूं [राजस्थान]

सहायक—

श्री १०५ मती स्व० माँजी महारानी साहिबा [सिरमौरीजी] बघाटराज्य।

आयुर्वेदमहोपाध्याय श्री पं० गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी, सीतावर्डी, नागपुर।

श्री नरेन्द्रनाथजी 'मोहन' मैनेजिङ्ग डायरेक्टर डायर मीकन ब्रूरीज लिमिटेड, सोलन ब्रूरी।

श्रीमान् हीरालाल मोतीलालजी पुजारा, ध्रांगध्रा (सौराष्ट्र)

श्रीमान् पं० लक्ष्मीकान्तजी शर्मा, चीफ रेवेन्यू अकाउण्टेण्ट, भरतपुर

श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकेदार, भरतपुर।

श्रीमान् भाई चूहरमल्लजी मुञ्जाल, चूहरमल्ल एण्ड को०, कटरा बड़ियां, देहली।

श्रीमान् लाला श्यामलालजी मित्तल, अनूपशहर [उत्तरप्रदेश]

★-❀-★

सम्पादक और व्यवस्थापक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य

प्रकाशक—
श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

'श्रीस्वाध्याय'के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक—

जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५१) रु० से ३००) रु० तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ला १०, पौषशुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४।) और एक प्रतिका १।−) एक रुपया पांच आना है।

(३) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदन की ओरसे प्रार्थना-पूर्वक मँगवाये जावेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे, अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जावेंगे, अन्यथा नहीं।

(४) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र पत्रिकाएँ सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) के पते से भेजने चाहिएँ।

(५) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(६) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर ही लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विनमासकी विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमीका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषांक न लेना चाहें तो बीचमें किसी भी समय से ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ४।) रु० न लेकर वर्ष-समाप्ति (आषाढ़) तकके शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जायेगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ३।) रु० और एक अङ्क का मूल्य १।−) मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मँगवाने पर उक्त मूल्यमें ग्यारह आने वी० पी० रजिस्ट्री खर्चके अधिक बढ़ जायेंगे। वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बनकर पूरी फाइल मँगवाने में ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डरके कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिये। वार्षिक मूल्य वा एक अङ्कके मूल्यका नोट या टिकट लिफाफे में कदापि न भेजें।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहक के पास कोई अङ्क न पहुंचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा।

व्यवस्थापक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

श्रीस्वाध्याय

(हेमन्ताङ्क)

स्वराष्ट्रशिरसां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम्।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति —श्रीराष्ट्रालोक

वर्ष १५	सोलन, पौष शु० १० सोमवार सं० २०१२ वि०	संख्या २

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै॥
—अ० वा० आचार्य

निवेदनम्

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

अशेषा सन्मान्या मुहुरनु विशेषा अपि तथा
स्फुरन्तो लक्ष्यन्ते य इह विषया वा विषयिणः।
सदा सापेक्षास्ते परमगतिमन्तो वरकलं
भजन्ते यां पुण्या प्रतिपदतुला सा विजयताम्।१॥

पुमांसो वा योषा अदितितनया वा दितिसुताः
समिद्धाः सिद्धा वा प्रकृतिपतिता मूढमतयः।
समीहन्ते कां चित्करुणमसृणाऽपाङ्गशरणां
स्वसंवित्त्यै दिव्यां गुरुदृगमला सा विजयताम्॥२॥

सम्पादकीय विचार—

आत्म-शुद्धिके पथ पर

आ ब्रह्मन् ! ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्,
आ राष्ट्रे राजन्यः शूरः इषव्यो
अतिव्याधी महारथो जायताम् ।
दोग्ध्रीधेनुः; वोढा अनड्वान् आशुः सप्तिः,
पुरंधिर्योषा, जिष्णुःरथेष्ठाः सभेयो युवा अस्य
यजमानस्य वीरो जायताम् ।
निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु,
फलवत्यो नः ओषधयः पच्यन्ताम् ।
योगक्षेमो नः कल्पताम् । (यजुः)

यह अतिप्राचीन एक वैदिक प्रार्थना है। प्राचीन भारतमें शूर बुद्धिमान् सम्पन्न एवं समृद्ध राष्ट्रकी कैसी उत्तम कल्पना थी, उसका एक स्पष्ट चित्र ऊपर वर्णित है। शत्रुजयी वीर, सभाचतुर और विवादपटु युवाओं की आज भी राष्ट्रको आवश्यकता है। किन्तु क्या हमारी यह आकांक्षा पूरी हो रही है ?

अन्न धान्यकी अब देशमें कमी नहीं रही। भीषण बाढ़ोंके बाद भी अन्न-नियन्त्रणकी आवश्यकता नहीं हुई। यही नहीं संयुक्तराज्य अमेरिका द्वारा गेहूंकी दी गई भेंट तकको अस्वीकार करनेमें स्वाभिमानी भारत सरकारको संकोच नहीं हुआ। किन्तु क्या देशकी जनताकी आत्मा भी परितुष्ट हुई ?

उदारधी एवं मनस्वी तथा दार्शनिक प्रधानमन्त्री का अभिनव व नूतन भारत मूर्त्तरूप धारण कर रहा है। नांगल-भाखड़ा, तुंगभद्रा दामोदर बांध, मयूराक्षी, सिन्दरी पीराम्बुर, चित्तरंजन, रोरकेला, बिल्हाली, दुर्गापुर, कोसी तटबांध राष्ट्रके शुभ दृढ़ संकल्प एवं अदम्य उत्साह और आशावादके प्रतीक हैं। किन्तु, प्रश्न यह है क्या नव-निर्माण के साथ साथ दासता एवं पराधीनताके अवशेषोंका भी अन्त हो गया ?

लाखों नरनारी हँसते हँसते कारागारों (जेलों) में गए, सैंकड़ोंने प्रसन्नतापूर्वक छाती पर गोली सही, सहस्रोंने माथे पर बल भी पड़ने न दिया और स्वाधीनता सूर्यकी उपासनामें अपना तन-मन-धन न्योछावर कर दिया। किस उद्देश्यकी सिद्धिके लिए ? 'रामराज्य' की स्थापना के लिए । स्व० महात्मा श्रीगांधीजीके स्वप्नोंका क्या रामराज्य देशमें स्थापित हो गया ?

भक्तशिरोमणि श्रीतुलसीदासजीने रामराज्यकी निम्न कल्पना आजसे लगभग ३५० वर्ष पहले देशके सम्मुख रखी थी।

"बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग ।
चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय सोक न रोग ॥
दैहिक दैविक भौतिक तापा ।
रामराज नहिं काहुहि व्यापा ॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती ।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती ।
चारि उ चरन धर्म जग माहीं ।
पूरि रहा सपने हूं अघ नाहीं ॥
राम भगति रत नर अरु नारी ।
सकल परम गतिके अधिकारी ॥
अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा ।
सब सुन्दर सब विरुज सरीरा ॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना ।
नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना ॥
सब निर्दम्भ धर्मरत पुनी ।
नर अरु नारि चतुर सब गुनी ॥
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी ।
सब कृतग्य नहिं कपट सयानी ॥

इस कल्पनाको मूर्त्तरूप देनेके वास्ते क्या कोई पग उस दिशामें उठाया गया है ? क्या हमारे देशके शासक शुचिता के साथ प्रशासकीय व्यवहार करते हैं ? क्या आज जनता

डाकुओंके आतंकसे आतंकित नहीं ? क्या आज साधारण से साधारण कामके वास्ते उत्कोच देनेकी आवश्यकता नहीं रही ? क्या भ्रष्ट शासनकी अर्थी रवाही हो गई ?

इन सबका उत्तर क्या है ? राजस्थानके गांवोंमें जाकर पूछिए, वहां डाके कौन डलवा रहा है ? जनताके मनमें यह धारणा क्यों बैठ गई है कि यह अधिकारलोलुप सत्ता-भिलाषी तथाकथित नेताओंके संकेत पर हो रहा है। पकड़े डाकुओंने कांग्रेस अध्यक्ष श्री ढेबरके सम्मुख सुना है कि इस बातको स्वीकार किया है कि वे पदभ्रष्ट मन्त्रियोंके संकेतके अनुसार ये कार्य कर रहे हैं ! यदि यह सत्य है तब प्रश्न उठता है कि जब बाड़ ही भक्षक हो रही है तब खेतकी कौन रक्षा करेगा ?

पतनकी सीमाका अन्त यहीं पर नहीं हुआ, राजस्थानमें भूस्वामियोंने सरकारके विरोधमें हिंसात्मक आन्दोलन उठाया है। सरकारी भवनों पर इन्होंने आक्रमण किए। सरकारी सामान जलाया, सरकारी फाइलें जलाईं और भवनोंको फूंक दिया। खोई सत्ता पानेके वास्ते और जन-प्रतिनिधियों द्वारा कानूनको वापस लिवा जानेके लिए किया गया। परन्तु ये यहीं तक नहीं रुके। कहा तो यहाँ तक जाता है कि इन्होंने प्रसिद्ध डाकू बलवन्तसिंहकी मध्यस्थतासे पाक-सरकारसे एक गुप्त समझौता किया है और इसके फलस्वरूप पाक सरकार इनको हथगोले और बन्दूकें दे रही है, कराचीसे हथियारोंकी तीन किश्तें आ चुकी हैं और ये बाड़मेर और जालौरके जमींदारोंके गढ़ोंमें छिपा कर रखे गए हैं। यह लोकप्रवाद और दन्तकथा भी हो, तब भी इसका विचारमात्र भी चिन्ताजनक है और यह इस बात का सूचक है कि हम वैयक्तिक स्वार्थोंकी रक्षाके लिए देश-हितका बलिदान करने और देशको बेचनेसे भी नहीं चूकते। पतनकी क्या यह पराकाष्ठा नहीं है ? इस पतनका कारण क्या है ? सौ बातकी एक बात यह है कि हम भगवान् मनु द्वारा बताये इस मन्त्रको भूल गये हैं—

"धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः"

आज इसका पुनः स्मरण करानेकी आवश्यकता है। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि राजनीति शास्त्रका एक यह सिद्धान्त है कि जनता जैसी होती है, जिस योग्य होती है, जिस प्रकारकी होती है—वैसी ही उस देशकी सरकार भी होती है। जनताका चरित्र यदि भ्रष्ट है, गिरा हुआ है, पतित है तो सरकार भी भ्रष्ट होगी। आज हमारी सरकार है। हमने अपने मतोंसे इसको शक्ति और सत्ता दी हैं। यदि सरकार भ्रष्ट है तो इसके लिए उससे कम दोषी हम नहीं हैं। अतः जनताको तथाकथित नेताओंसे बचना चाहिए। अपने हृदयको टटोलना चाहिए। क्या हम अपनी छाती पर हाथ रखकर यह कह सकते हैं कि हम शुद्ध पवित्र हैं, लोभसे मुक्त हैं, अपने क्षणिक लाभ और स्वार्थके कारण दूसरोंको भ्रष्ट करने और ललचानेका प्रयत्न नहीं करते ? नमककी खानमें नमक ही नमक होता है, यह कहनेसे काम न चलेगा। इस दूषित चक्रको कहीं न कहींसे तोड़ना ही होगा। चक्र-व्यूहका भेदन सामूहिक रूपसे यदि सम्भव नहीं तो 'अभिमन्यु' ही क्यों न आगे बढ़ें। वैयक्तिक चरित्र-शुद्धि पर ध्यान देने और यहांसे आरम्भ करनेसे ही हम देशव्यापी भ्रष्टताका उन्मूलन कर सकेंगे। प्रश्न यही है कि वैयक्तिक चारित्रिक शुद्धिका उपाय क्या है ?

शिक्षामें सुधार होना चाहिए। आजकी शिक्षा व्यक्तिके चरित्र, मनकी शुद्धि, बुद्धिकी शुचिता और आत्माकी पवित्रता पर ध्यान नहीं देती। शिक्षणालयों द्वारा दी गई उपाधियां हाटकी क्रय-विक्रयकी अन्य वस्तुओंके समान बिक्रीकी वस्तुएं हो गई हैं। ये आज विद्वत्ता और बौद्धिक उच्चताके चिन्ह नहीं रहे हैं। अतः शिक्षा-प्रणालीमें आमूल-चूल परिवर्तन होना चाहिए। शिक्षाका मापदण्ड बदलना चाहिए। शिक्षाके प्रति हमारे दृष्टिकोणमें भी परिवर्तन होना चाहिए। किसी व्यक्तिकी उच्चताका सूचक उसकी सचाई, ईमानदारी, हृदयकी शुद्ध भावना, त्याग एवं सेवावृत्तिको मानना चाहिए, न कि वैभव और सम्पत्तिको और उसके बल पर प्राप्त उपाधियोंको। धनकी पूजा जब तक समाज करेगा, तब तक उसका दास भी बना रहेगा और चारों ओर व्याप्त भ्रष्टताका भी अन्त न होगा। भ्रष्टताका मूल कारण धनकी बढ़ी महिमा है और इसकी पूजा है। इसकी पूजा अब समाप्त होनी चाहिए। एक दिन वह समय था जब इस देशमें राजशक्ति और वैभव त्यागी ऋषि-मुनियोंके चरणोंमें झुकनेमें सब अपना गौरव मानते थे। जनतामें आज पुनः उसी दृष्टिकोणको उत्पन्न करनेकी आवश्यकता है। तब संग्रहकी नहीं त्यागकी पूजा होगी

बलिदान आदर पाएगा और संचय नीची दृष्टिसे देखा जाएगा। क्या आज जो शिक्षा हमारे शिक्षणालयोंमें दी जा रही है, वह इस आवश्यकताको पूरा करती है? निस्सन्देह हमें कुशल चिकित्सक, निपुण इंजीनियर, चतुर शिल्पी और योग्य कारीगर चाहिए, किन्तु इन सबसे ऊपर हमें सच्चे, ईमानदार, त्यागी, वीतरागी, लोकसेवक, तपस्वी विद्वान् चाहिएं जो देश और समाजकी सेवामें अपना जीवन उत्सर्ग कर दें और प्रतिफलकी अपेक्षा न करें। जो वस्तुतः वेदकी इस आज्ञामें विश्वास करते हों—

"ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥"

इस भावना और बुद्धिसे काम करने वाले जब नागरिक होंगे, तब भ्रष्टताका भी अन्त हो जायगा। पग-पग पर दिखाई देनेवाली भ्रष्टता—जो उत्कोच (रिश्वत) और स्वपार्श्वियों (सिफारिशों) के रूपमें सिर उठाए सर्वत्र दिखाई दे रही है, जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमें, समाजके प्रत्येक वर्गमें, राष्ट्रिय जीवनके प्रत्येक क्रिया कलापमें और जिससे देशके महामान्य व्यक्ति भी मुक्त नहीं हैं— भी इस देशमें दिखाई न देगी। एक सहस्र वर्षकी पराधीनताने हमारे मन और हमारी अन्तरात्माको पर्याप्त कलुषित कर दिया है। यह कालुष्य और कालिमा शिक्षा एवं संस्कार द्वारा ही परिक्षालित हो सकता है। अतः अभिनव भारत के निर्माणके वास्ते शिक्षा प्रणालीमें क्रान्तिकारी परिवर्तन आवश्यक है। क्या इस ओर ध्यान दिया जायगा?

शान्ति और अशान्तिके मध्य

सोवियत रूसके प्रधानमंत्री मार्शल बुलगानिन और सोवियत रूसकी कम्युनिष्ट पार्टीके प्रथम मंत्री म० क्रुशेव को भारत बर्मा और अफगानिस्तानकी यात्रा, इन देशोंमें रूसी नेताओंका हुआ विराट स्वागत और इन नेताओं द्वारा दिए गए भाषणोंकी प्रतिक्रियाने विश्व-शान्तिको आगे बढ़ाया है यह नहीं कहा जा सकता। हां, यह कहा जा सकता है कि एशियापरसे पश्चिमी देशोंका प्रभाव घट गया है और अब एशियाई देश अपनी आर्थिक एवं औद्योगिक प्रगतिके वास्ते एकमात्र पश्चिमी देशोंकी सदिच्छा और शुभ-भावना पर निर्भर नहीं रहे हैं। दूसरी बात यह कि १९४६ से सोवियत रूसको घेरनेके लिए एंग्लो-अमरीकाने जो नाकेबन्दी की थी, चारों ओर जो घेरा डाला था, वह छिन्न-भिन्न हो गया। पीटर दी ग्रेटके कालसे सोवियत रूस भूमध्यसागर और हिन्द-महासागर तक पहुंचनेके वास्ते प्रयत्नशील है। किन्तु उसके ये प्रयत्न सदा विफल होते रहे। जारोंके कालमें क्रीमिया युद्धने रूसके बढ़ते पगोंको रोक दिया। इधरसे निराश होकर रूसने चीन और पीतसागर तथा प्रशान्तमहासागरकी ओर बढ़नेका प्रयत्न किया। पर यहां पोर्ट आर्थरके महान् संग्राम और जापानकी वीरताने उसका मार्ग रोक दिया, दूसरे महायुद्धने उसका प्रशान्तकी दिशाका मार्ग खोल दिया। मास्को-पेकिङ्ग-युतिसे विस्तृत चीनी तट रूसके पोतों के स्वागतमें खुला पड़ा है। फिलिपीन और हवाई द्वीप अब उसकी गतिको रोक नहीं सकते। किन्तु "बगदाद-पैक्ट" द्वारा तुर्की, ईराक, ईरान और पाकिस्तानने रूसका भूमध्य-सागर और हिन्दसागरकी ओर बढ़ना रोकनेका प्रयत्न चालू रखा है। इसी प्रकार सीटो (साऊथ ईस्ट एशिया डीफेंस एग्रीमेंट—दक्षिणपूर्व एशिया प्रतिरक्षा करार) द्वारा उसको जावा समुद्रमें बढ़नेसे रोकनेकी विफल चेष्टा की गई। अटलांटिक-पैक्ट बगदाद-पैक्ट और सीटो द्वारा रूसको घेरनेका प्रयत्न निष्फल हो गया, मास्को—काबुल-दिल्ली-रंगून-जकार्त्ता मैत्री युतिने इस घेरेको छिन्न-भिन्न कर दिया। इसके अतिरिक्त मिश्रको चेकोस्लावियाने शस्त्रास्त्र देकर, रूसने बांध बांधनेके वास्ते आर्थिक सहायता देकर पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीकामें पश्चिमी राष्ट्रोंके शतियोंके प्रयत्नोंसे स्थापित प्रभावरूपी-गढ़को ध्वंस कर दिया है। पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीका अब तटस्थ राष्ट्रोंके बढ़ते और बलिष्ठ होते संघकी ओर बढ़ते हुए (यद्यपि यह संघ अभी कागज पर नहीं आया) 'पंचशील' के समर्थक एशियाई और अफ्रीकी राष्ट्र एक सूत्रसे बन्धे हुए हैं और अपने देशको युद्धकी ज्वालाओंकी आंच और आतपके स्पर्शसे दूर रखनेको उत्सुक हैं। सोवियत रूस उनकी इस बातको माननेके लिए तैयार है। इस प्रकार बांडुग-सम्मेलन से उत्पन्न नूतन एशिया-अफ्रीकी शक्ति और बढ़ गई है। यह नूतन शक्ति शान्तिकी उपासक है। पश्चिमी राष्ट्रों और सोवियत रूस और उसके अनुवर्ती राष्ट्रोंके मध्य यह शक्ति मध्यस्थता कर सकेगी यह आशा नहीं की जा सकती। यह नवीन शक्ति यदि अपनेको भावी महायुद्ध

की ज्वालाओंके संस्पर्शसे बचा सकें, तो भी यह बहुत मानना चाहिए। किन्तु सोवियत रूस इनकी मैत्रीका लाभ पाकर पश्चिमी राष्ट्रोंके सुरक्षित गढ़में प्रवेश पा गया है। इस तथ्य से नकार नहीं किया जा सकता।

किन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि विश्व-शान्तिका पग आगे बढ़ा है, उसके चरण दृढ़ हुए हैं। क्योंकि वाशिंगटन और मास्कोके मध्य उद्जनोंका परीक्षण करनेकी होड़ अभी चालू है। दोनों इन महाविनाशी बमोंके विस्फोटसे विश्वके विस्तृत नील गगनको धुंआयित कर रहे हैं। यह ठीक है कि सोवियत रूसने अपना प्रतिरक्षा व्यय दश प्रतिशत घटा दिया है, किन्तु जर्मनीकी एकता, कोरियाकी एकता, हिन्दचीनकी एकता, फारमूसा, काश्मीर, इजराइल आदि की विवादास्पद समस्यायें जहाँकी तहाँ हैं। ये अग्नि-स्फुलिंग किसी भी समय चटक कर महायुद्धकी आगको भड़का सकते हैं। इस कारण आज भी विश्वकी समस्या गम्भीर चिन्ताका विषय है। क्या तीसरा महायुद्ध होकर रहेगा? इस कारण आज भी विश्व शान्ति और अशान्तिके मध्य झूल रहा है।

भारतीय भावनाका ह्रास

राज्य पुनर्गठन आयोगकी सिफारिशोंके विरोधमें देशके विभिन्न भागोंमें जो आन्दोलन उठा, उसने एक सत्यको हमारे सामने स्पष्ट कर दिया है। भारतीयताका विकास नहीं हुआ है और भारतीयताकी भावना हृदयके अन्तरतम प्रदेश तक नहीं पहुँची है। विदेशी शासनके नीचे जो लोग एक साथ रहे, एक नहीं १४० वर्ष रहे। वे आज एक साथ रहनेसे नकार कर रहे हैं और अपनी मांगको पूरा करानेके वास्ते बसोंको आग लगाने, ट्रामोंको जलाने और सरकारी भवनोंको तोड़नेसे भी नहीं हिचकते! यह एक आश्चर्यजनक बात प्रतीत होती है, किन्तु यह एक सत्य है। प्रान्तीय अस्मिता, भाषाभिमान और जातीयगर्वने आज हमको अन्धा कर दिया है और हम भारतको भूल गए हैं। भावना और विचारकी एकताकी आवश्यकता तीव्रतासे अनुभव की जा रही है। किन्तु हम भूतकी ओर देखनेके अभ्यस्त हैं, भविष्यकी ओरसे हमने आंखें मूंदी हुई हैं। हम आज यह देख ही नहीं पा रहे हैं कि एक राज्यमें एक ही भाषा बोलने वाले रहे, यह सम्भव ही नहीं। उद्योग धन्धोंके बढ़ने, यातायातके साधनोंका विकास होने, कल-कारखानोंके खुलनेसे जन-संख्याका स्थानान्तरित होना अनिवार्य है। यदि इसको रोका जायगा तो आर्थिक विकासकी गति रुक जायगी। इस अवस्थामें एक भाषाका एक राज्य न युक्ति-युक्त है और न देशके औद्योगिक एवं आर्थिक विकासमें सहायक है। किन्तु आज इस सत्यको अनुभव नहीं किया जा रहा है। कल्पित भयानक चित्र जनताके सम्मुख रखे जा रहे हैं, और उसकी भावनाको क्षुब्ध किया जा रहा है। आज भी "आमार बंगदेश" की प्रबल भावना देशके एक भागमें व्याप्त है। दूसरे भागमें गेरुआ-ध्वज फहरा रहा है। तीसरे में नारा लगाया जा रहा है 'राज करेगा खालसा'। ये विभिन्न मनोवृत्तियां बता रही हैं कि भारत मांकी अर्चनाका भाव हमारे मनोंसे कितना दूर है। इस पर भी हम अपने को देशभक्त कहते हैं! देशकी एकता और देशकी अक्षुण्णता के मार्गमें ये प्रवृत्तियां बाधक हैं। राज्य-पुनर्गठन आयोग के प्रतिवेदनने उनको और भड़काया है, एवं उत्तेजित किया है, घटाया नहीं। इन भावनाओंका नियंत्रण करनेके लिए 'प्रादेशिक कौंसिल' स्थापित की जा रही है। ये सत्ता शून्य अधिकारहीन संस्था होगी। परामर्शदातृ संस्था होगी। अल्प-संख्यकोंके हितोंकी रक्षा करेगी और आर्थिक विकास के मार्गको प्रशस्त करेगी। इनकी संख्या ५-६ होगी। प्रादेशिक कौंसिलकी स्थापना एक आशाका चिन्ह है। भविष्यमें इनके कारण इस बातकी सम्भावना बनी रहेगी कि १५-१६ राज्योंमें विभक्त भारत कालान्तरमें ५ या ६ अंगमें विभक्त हो और वह भी शासन सौकर्यके विचारसे। जाति, भाषा, आदिकी दृष्टिसे नहीं। इस दृष्टिसे राज्यपुनर्गठन आयोगकी रिपोर्टने देशकी बड़ी सेवा की है। इसके कारण वास्तविक स्थिति हमारे सामने आ गई। इसने बता दिया कि हमारे देशका शिक्षित समाज भी, बौद्धिकवर्ग भी और उनके जन-नायक मध्य-युगमें रहते हैं और वे भूत को देखते हैं, भविष्यको नहीं। इस कारण भारतकी एकता को जो लोग अक्षुण्ण रखना चाहते हैं, जो भारतीय राष्ट्रीयताके उपासक और पुजारी हैं जो भारतीय संस्कृति और सभ्यताको विकसित देखना चाहते हैं उनका उत्तरदायित्व बहुत बढ़ गया है। सरकारी सेवाओंमें इंजीनियरिंग, वन चिकित्सक आदिको भारतीय बनाने मात्रसे यह महान् कार्य

[शेष पृष्ठ ४३ पर]

सिंहस्थमें विवाह, कुम्भ महापर्व और अर्धकु क निर्णय

ज्योतिर्विज्ञानाचार्योंके शिष्टमंडलकी श्रीराष्ट्रपतिजीसे भेंट

गत गुरु पूर्णिमाको दिल्लीमें उ० भा० ज्योतिष-सम्मेलनने जो प्रस्ताव स्वीकृत किये थे उनको कार्यरूपमें परिणत करनेके लिए श्री १०८ त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश-दत्तजी महाराजके सहयोगसे ता० ६ नवम्बरको सनातन धर्म प्रतिनिधिसभाके नवनिर्मित भवन भूपेन्द्रहाल नई दिल्लीमें विद्वत्परिषद्का विशेष अधिवेशन हुआ। इसमें पंजाबके तीनों प्रसिद्ध पंचांगकार (श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी, श्री पं० मुकुन्दवल्लभ मिश्र, श्री पं० रामशरणदास ज्यो०) दिल्लीके सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० यमुनाधरजी ज्योतिषाचार्य, इन्द्रप्रस्थीय ब्राह्मणसभाके प्रधानमन्त्री श्री पं० राज शिवशंकरजी आदि और दिल्ली तथा बाहरके १०० से अधिक विद्वानोंने भाग लिया। सिंहस्थ गुरुमें विवाह और उज्जैनके कुम्भ-पर्व, हरिद्वारकी अर्धकुम्भीके निर्णय पर विद्वानोंके विद्वत्तापूर्ण ओजस्वी भाषण हुए। श्री पं० यमुनाधरजीका यह प्रस्ताव सर्वसम्मतिसे स्वीकृत हुआ कि आवश्यकतामें सिंहस्थ गुरुमें विवाहादि कार्य हो सकते हैं। श्रीस्वाध्याय सम्पादकने सिद्ध किया कि प्राचीन गणना और परम्परानुसार उज्जैनका कुम्भ और हरिद्वारकी अर्धकुम्भी सं० २०१३ में होनी चाहिए। इस पर मतभेद होनेके कारण निर्णयार्थ ५ विद्वानोंकी एक उपसमिति बनी थी। पंचांगकर्त्ताओंके गणित एवं प्रमाणोंको देखकर स० ध० प्र० सभाकी विद्वत्परिषद्ने घोषणा कर दी है कि हरिद्वार की अर्धकुम्भी सं० २०१३ में ता० १३ अप्रैल१९५६ को होगी और नवीन गणनानुसार उज्जैनका कुम्भ २०१४ में। काशीके कुछ पंडितों और मंडलेश्वरों तथा अखाड़ों के महन्तोंके २०१४ में उज्जैन कुम्भकी घोषणाको लक्ष्य में रखकर विद्वत्परिषदने भी २०१४ का निर्णय किया। परन्तु काशीविद्वत्परिषद्, जगद्गुरु शंकराचार्य एवं श्रद्धेय श्री १०८ करपात्रीजी महाराजने प्राचीन परम्परानुसार उज्जैन कुम्भ के लिए २०१३ का ही निर्णय दिया है। प्राचीन गणनासे २०१३ में होनेके कारण मध्यभारत सरकार उज्जैनमें मेलेका प्रबन्ध २०१३ से २०१४ तक रखेगी।

सभी प्रमुख पंचांगकार परस्पर परामर्श करके मुख्य मुख्य त्यौहार व्रत एक ही दिन लगाया करें, यह विद्वत्प-रिषद्के मन्त्री श्री पं० रघुनाथदत्तजी 'बन्धु' शास्त्रीका प्रस्ताव भी सर्वसम्मतिसे स्वीकृत हुआ।

इसी सभामें यह भी निश्चित हुआ था कि ७ प्रमुख ज्योतिषाचार्योंका एक शिष्टमंडल श्रीराष्ट्रपतिजीसे मिल-कर प्राचीन ज्योतिर्विज्ञानके उद्धारके लिए सरकारी सहयोग प्राप्त करे। तदनुसार ता० ६ दिसम्बरको सायंकाल ६ बजे यह शिष्टमंडल श्री गोस्वामी गणेशदत्तजीके नेतृत्वमें राष्ट्रपति भवन नई दिल्लीमें राष्ट्रपतिजीसे मिला। राष्ट्रपतिजीने श्रद्धापूर्वक स्वागत किया। शिष्टमण्डलके प्रवक्ताने प्राचीन ज्योतिषके चमत्कार पूर्ण गुण उनके सामने रखे। जिससे राष्ट्रपति बहुत प्रभावित हुए। सवा घण्टे तक उन्होंने सब बातें ध्यानपूर्वक सुनीं और कुछ प्रश्न भी किये जिनका प्रवक्ताने पूर्ण सन्तोषजनक उत्तर दिया। श्रीमहामहिम राष्ट्रपति जीने शिष्टमण्डलको आश्वासन दिया कि वे सरकार की ओरसे भारतीय ज्यौतिषपद्धतिके उद्धारके लिए पूरा यत्न व सहायता करेंगे। इसके लिए उन्होंने योजना चाही जोशिष्टमंडलने तैयार करके भेज दी है। शिष्ट-मंडलमें निम्नलिखित सदस्य थे—

श्री गोस्वामी गणेशदत्तजी महाराज।
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य।
श्री पं० यमुनाधर ज्योतिषाचार्य।
श्री पं० मुकुन्दवल्लभ ज्योतिषाचार्य।
श्री प्रो० काशीराम शर्मा ज्योतिषाचार्य।
श्री पं० मुकुन्दराम शर्मा ज्योतिषाचार्य।
श्री पं० विशुद्धानन्द गौड़ ज्योतिषाचार्य।
श्री गो० गिरिधारीलाल शास्त्री ज्योतिषी।
श्री पं० राजशिवशंकर ज्योतिषी।

शिष्टमसंडलने श्री राष्ट्रपतिजीको जो लिखित योजना बनाकर प्रस्तुत की थी वह इस अंकके अन्तमें दी गई है। वहां देखें।

वस्तुस्थिति क्या है ?

आत्मसाक्षात्कार किसको ?

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

वाङ्मय भी और ज्योतिर्मय भी दोनों ही आत्मसत्ता में स्फुरित होते हैं। इन दोनोंका 'है' अथवा 'नहीं है' दोनों ही प्रकारका प्रकार बोधमें आता ही है। आत्माकी सत्ता चित्ता तथा आनन्दताका बोध आत्माको ही रहता है। आत्मा स्वभावतः शक्तिघन है, इसी कारण उसको महासत्, महाचित् तथा महानन्द कहा जाता है। अतएव महासत्ता महाचित्ता तथा महानन्दता आत्माकी नैसर्गिक शक्तिके ही प्रकार हैं। आत्मातिरिक्तकी उत्पत्ति स्थिति अथ च लय कुछ भी नहीं होता। यह केवल काल्पनिक ही है।

आत्मा अपनी तिरोधान शक्तिसे स्वयं तिरोहित-सा होकर निगृहीत सा होता है और अनुग्रह शक्तिसे प्रकट सा होकर अनुगृहीत सा होता है। निगृहीत दशामें जीव और अनुगृहीत दशामें शिव कहलाता है। यह कहलाने वाला और कहने वाला पृथक् नहीं होता। पृथक् न होने पर भी प्रत्यक्ष और परोक्ष भावोंको अपने आपमें अपने आनन्दके लिए कल्पना करके उन आनन्दोंका उपयोग और उपभोग करता रहता है।

'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंने हमारे पिछले कई लेख पढ़े होंगे। उन पर यदि उन्होंने मनोयोगसे मनन किया है तो उन्हें इस लेखको समझते चिर न लगेगा।

हां, तो देखिये--कहींसे भी शब्द स्फुरित हो, क्या उसका वास्तविक मूल आत्मा नहीं, यदि आत्मा मूल नहीं तो मूल क्या है ? जैसे कोई पुरुष अपनी वंशावलीका इतिहास सुनाते हुए किसी पुरुषको मूल पुरुष बताता है, पर क्या वस्तुतः वह मूल पुरुष होता है ? नहीं, कारण मूलके मूल पर दृष्टिपात होते ही मूल मूल नहीं रहता और वह भी तूल ही तूल दिखाई देने लगता है। वास्तविक मूल आत्माको छोड़ दूसरा हो ही नहीं सकता, कारण आत्माकी सत्ताकाल्पनिक नहीं वह तो स्वयं सिद्ध है। यह बोध आत्मा के अनुग्रहसे ही होता है। सभी दशाओंमें तुष्टि, पुष्टि, बोध, आनन्द सभी कुछ परोक्ष भी और प्रत्यक्ष भी आत्माको ही होने पर भी आत्मातिरिक्तोंको ही हुआ-सा काल्पनिक व्यवहारमें प्रतीत माना जाता है।

'वह श्याम है' यह बोध रामको होता है। यह ऊपर ऊपर कहनेके लिए यह बात ठीक है, 'किन्तु राम क्या है' इसका निर्णय हुए बिना 'उसको बोध होता है' यह कहना गलत ही होगा। जबकि राम सभी प्रकार आत्मातिरिक्त कुछ सत्ता ही नहीं रखता तो बोध आत्माको ही होता है, ऐसा अपने आप सिद्ध हो जाता है। ऐसे ही 'वह श्याम है' यहांका 'श्याम' जिसका बोध होता है वह भी आत्मातिरिक्त कुछ भी सत्ता नहीं रखता, तब जिसका बोध होता है वह आत्मा ही है, फिर 'आत्माको ही आत्माका बोध होता है' ऐसा अनायास ज्ञात हो जायगा। ऐसे ही आत्माका ही आत्माको बोध होता है यह भी स्वयंसिद्ध हो जायेगा।

'तुम भगवान् हो', 'तुम शिव हो,' 'तुम राम हो,' 'तुम कृष्ण हो,' 'हे शिव तुम सर्व समर्थ हो,' 'हे ! जगज्जननी मां ! तुम बड़ी दयालु हो' इन सभी प्रकारके प्रत्यक्ष बोधोंमें बोध्य और बोध आत्माको छोड़ दूसरी कोई सत्ता नहीं रख सकता। अतएव हमें अवश हो मानना ही होगा कि सभी प्रकारके प्रत्यक्ष बोधोंके स्थलोंमें भी बोध और बोध्यकी सत्ता एक ही है। जब परोक्ष और प्रत्यक्ष बोध भी आत्मातिरिक्तको नहीं होता तो अपरोक्ष बोध आत्माको छोड़ किसी दूसरेको कैसे हो सकेगा ? देखिये—हाथ पैर फैलाकर लेटे हुए देवदत्तको किसीने पूछा—"आप कौन हैं ?"

देवदत्तने कहा—'मैं देवदत्त हूँ।'

पूछने वाला—'आप अपनेको जानते हैं ?'

देवदत्त—'जी ! हां मैं अपने आपको जानता हूं।'

पूछने वाला–'आप जानते हैं कि जानने वाला कौन है ?'

[शेष पृष्ठ ११ पर]

दिव्य सन्देश

[लेखक—श्री पं० भगवतीस्वरूपजी त्रिवेदी शास्त्री]

यह धर्मशास्त्र सम्मत है कि मनुष्य सच्चिदानन्द परमात्मा रूपी सिन्धुका बिन्दु है अतः मनुष्यमें भी अगांगी भावानुसार कुछ गुण अवश्य होने ही चाहियें और होते भी हैं। परन्तु वह शक्ति स्वयं मायाके साथ होते हुए इससे परे है और मनुष्य अज्ञानतासे लिप्त है, मायावश ईश्वर अवतार लेता है तथा अनेकों मायावी कार्य करता हुआ सृष्टिमें आदर्श स्थापित करता है और सृष्टिको अपने का भान होनेसे वंचित रखता है।

अतः मनुष्यका सत्-चित्से आनन्दानुभव जभी हो सकता है कि यह मायाका पर्दा हटे, सच्चिदानन्दकी झांकी हो, जिस प्रकार तैरनेवाला दोनों हाथोंसे पानी हटाता हुआ सश्रम आगे बढ़ता है वैसे ही मायाका पर्दा हटाने और ईश्वरत्वमें लय होनेके लिए सप्रयत्न रहना पड़ता है। माया सिन्धुको वही तैराक पार कर सकता है जो मोह-अहंकारकी काई (सिवार) को हृदयसे बिल्कुल हटा चुका है, एवं विवेक व सत्गुरु कृपाकी सबल भुजायें जिसकी पूर्ण संयोगिनी है। जिसने क्षणभंगुर सांसारिकतासे मोह नहीं तोड़ा तो यह समुद्र पार होना अतीव कठिन है।

माया ठगिनी है, संसारकी बाटमें आनेवालोंको फँसाती है, ब्रह्मज्ञानी कबीर लिखते हैं :—

माया महाठगिनी हम जानी।
त्रिगुण फांस लिए कर डौले, बोले मीठी वानी।

इस मायाके पाससे निकलना ही जीवनकी सफलता है इस पाशको तोड़नेके लिए शारीरिक बलकी आवश्यकता नहीं, अपितु साधु सन्तके वचनामृतरूपी शक्ति व उनका सुधारूपी सत्संग ही पर्याप्त है, इसके बलसे मनुष्य शीघ्र ही मायापाशसे मुक्ति पा जाता है। सन्त महानुभावोंकी कृपा से सत्सेवीको कभी सांसारिक दैहिक, दैविक भौतिक ताप नहीं सताते और मोहसागरसे भी उनकी कृपा-नौका बिना प्रयास तर जाती है।

भगवान्‌ने श्रीमद्भागवतमें कहा है—

निमज्ज्योन्मज्जतां घोरे भवाब्धौ परमायनम्।
सन्तो ब्रह्मविदः शान्ता नौर्दृढेवाप्सुमज्जताम्॥

अतः भगवान्‌की प्राप्तिके लिए अन्य साधनोंको त्याग साधु पुरुषोंकी वन्दना ही सर्वोत्तम साधन है। येनकेन प्रकारेण साधु सेवा करना भक्तका प्रधान धर्म होना चाहिए, जभी वह मायाको समझ सकेगा और उसे त्यागता जायगा—

यथोपश्रयमाणस्य भगवन्तं विभावसुम्।
शीत भयतमोऽप्येति साधुसंसेवनस्तदा॥

जिस प्रकार अग्नि द्वारा शीत, भय, अन्धकार तीनों नष्ट होते हैं उसी प्रकार भगवदाश्रयसे शीत रूपी पाप, भय रूपी मृत्यु एवं अज्ञान रूपी अन्धकार नष्ट हो जाता है।

किन्तु हमारे कहनेका यह भी तात्पर्य नहीं कि आप २४ घंटे रामबागमें उनके समीप ही पड़े रहें, उनके चरण चुम्बन करते रहे, किन्तु उनकी प्रदत्त भगवत्सम्बन्धी शिक्षा वचनावली को—

"भाव कुभाव अनख आलस हू।"

अक्षरशः पालन कीजिए। लिखा है—

कस्तरति कस्तरति मायाम्?

यो संगस्त्यजति, यो महानुभावं सेवते, निर्ममो भवति।

यहां एक बात खास कही गई, साधुसेवाके साथ निर्मम होना ही कहा है। साधुसेवा तो येनकेन प्रकारेण मनसावाचा कर्मणा हो ही जायगी। किन्तु जब तक मित्र पुत्र कलत्र सम्बन्ध है, मोहत्याग तो क्या सत्संग भी कठिन है, किन्तु इतना है कि सत्संगभवन तक जाने और वहां बैठे रहने तक आप गृहस्थका मोहत्याग अवश्य कर सकते हैं, यह सुलभ भी है दुर्लभ नहीं, ममताका त्याग ममत्वपूर्ण वस्तुओं में रहकर नहीं होता, सत्संग भी एक ममता है और साधु संग भी, और आज हमारे स्वनामधन्य महात्मा जन भी तो गृह छोड़ मठ बनाए बैठे हैं परिवार त्याग शिष्यशिष्याओं के बन्धनोंसे आबद्ध हैं। उनके दुःखमें दुखी उनके सुखमें

सुखी एक पारिवारिक जीवनकी सी ही व्यवस्था है, किन्तु सन्तोंके विषयमें ऐसी शंकाएं करनी चाहिए नहीं—

तुलसी या संसारमें सबसे मिलिये धाय।
ना जाने का भेषमें नारायण मिल जाय॥

अतः सब कुछ यथासम्भव धीरे धीरे त्यागकर सन्त सेवामें पूर्ण आस्था रखते हुए अपने आपको भगवान्की शरणमें अर्पित कर देना चाहिए, शरणागति योग ही सबसे बड़ा योग है, शरणागतकी चिन्ता स्वयं भगवान् करते हैं। उसे उठाना गिराना ईश्वर इच्छा बन जाती है. किन्तु जो अपने आपको भगवान्के अर्पण कर चुका है,न तो वह गिरता है और न ही अशान्तिको प्राप्त होता है, किन्तु उसे उत्साह प्रदान करते हैं, श्रीमद्भगवद्गीतामें लिखा है—

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः।
स्त्रियो वेश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परांगतिम्॥

अर्थात् हे अर्जुन! स्त्री, वेश्या, शूद्रा आदि पापी भी यदि अपने आपको मेरे अर्पण कर देते हैं तो परम गतिको ही प्राप्त होते हैं, और आगे कहा है—

किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा।
अनित्यमसुखंलोकमिमंप्राप्य भजस्व माम्॥

अर्थात् तू इस अनित्य सुख रहित शरीरका मोह त्याग मुझे भज, पुण्यशील ऋषि और महर्षि भी मेरी शरण आते हैं, इसलिए—

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः॥ ९,३४

भगवान् कहते हैं मेरेमें मन रखो मुझे पूजो मुझे नमस्कार करो और अपनी आत्माको मुझे समाहित कर दो तो मेरेको प्राप्त हो जाओगे। लिखा है—

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज

वैसे शरणागतको भी यद्यपि कर्तव्यबुद्धिसे नित्य नैमित्तिक कर्मोंका अनुष्ठान करना पड़ता है पर अंगत्व बुद्धि नहीं, क्योंकि शरणागति धर्म त्यागांगक है अतः भक्तोंको भक्ति निष्यन्तके लिए विहित कर्मोंका अनुष्ठान आवश्यक होता है, क्योंकि वे अंग है।

यः कर्मफलं त्यजति, कर्माणि सन्यसति,
ततो निर्द्वन्दो भवति।

अतः भक्तिमें कर्म और फल दोनोंका त्याग आवश्यक है। जो ऐसा करता है वही संसार सागरसे पार हो सकता है। अपितु औरोंको भी तार सकता है, भगवान्ने कहा है—'मद्भक्ति युक्तो भुवनं पुनाति' तथा नारदजी कहते हैं—जो भगवद्भक्त शरणागति योग धारणकर भगवान्के आनन्द सागरमें गोते लगाता है।

स तरति, स तरति, स लोकास्तारयति।

(पृष्ठ ९ का शेष)

देवदत्त—'मैं जानता हूं कि जानने वाला मैं हूँ।

पूछनेवाला—आप किसको जानते हैं?

देवदत्त—'मुझको, अपनेको, अपने आपके जानने वालेको अपने आपको, समझे।'

पाठक समझ गये होंगे कि यहां बोधा और बोध्य दोनों ही देवदत्त अपने आप ही है।

ऐसे ही वही देवदत्त हाथ पैर सिकोड़ने पर भी दूसरा नहीं होता। उस समय भी वही अपने आपका बोधा और बोध्य होता रहता है। यही अपरोक्ष साक्षात्कार है, स्वयं साक्षात्कार अपरोक्ष हो, प्रत्यक्ष हो, अथवा परोक्ष ही क्यों न हो, होता आत्माको ही है दूसरेको नहीं और आत्माका ही होता है। इसीलिए यह स्वयंसिद्ध बात समझते विद्वानोंको चिर न लगेगा कि आत्म-साक्षात्कार आत्माको ही होता है। इस काल्पनिक अनन्त व्यवहारके बाहर भीतर सभी ओर आत्मातिरिक्त वस्तु हो ही नहीं सकती। हां, यह सम्पूर्ण आत्म-शक्तिका चमत्कार है। प्रकाशके भी प्रकार और विमर्श के भी सभी प्रकार आत्माके अपने आपमें अपने आपके लिए किये जाने वाले, समझे जाने वाले, चाहे जाने वाले चमत्कार हैं और इनसे चमत्कृत रहनेवाला आत्मा ही है। प्रकाशके सभी प्रकार ज्योतिर्मय और विमर्शके सभी प्रकार वाङ्मय कहे जाते हैं। यह वस्तु स्थिति है।

विशेष जानकारीके लिए "श्रीआत्मविलास" श्री महानुभवशक्तिस्तव' 'श्रीश्रीविंशतिकाशास्त्र' 'श्रीमन्दाक्रान्ता स्तोत्र' आदि रहस्य शास्त्रोंको पढ़ना चाहिये।

शान्तैर्घोरैर्घोरतमैः स्वं रूपैर्नामभिश्च या।
निगृह्णात्यनुगृह्णाति पिबन्ती स्वरसासवम्॥
सृजन्त्यवनयदतीयमात्मनात्मानमात्मनि।
नित्यं समरसानन्दा महाऽनुभवमश्नुते॥

श्रीश्रीविंशतिकाशास्त्रके इन श्लोकोंके रहस्यको हृदयङ्गम कर लेनेसे निःसंशय निःसंशयता प्राप्त हो सकती है। पाठक श्रीश्रीविंशतिकाशास्त्रको भली-भाँति पढ़ें।

सहस्रांशु-सूर्य

[ले०—श्री पं० राजेन्द्र झा 'विमल' शास्त्री ज्यौ० आ० सा० आ० बी० ए०]

भारतीय ज्योषि-शास्त्र के प्राचीन आचार्योंने सूर्यके पर्यायवाची नामोंमें "सहस्रांशु" (हजारों किरणों वाला) शब्द का प्रयोग कर वस्तुतः अपनी महान् अनुभव शक्ति का परिचय दिया है। आजके प्रखर विज्ञानकी चकाचौंधमें जब हम उस शब्दका रहस्य चित्र देखते हैं, तब हृदय आश्चर्य और अभिमानसे ओत-प्रोत हो जाता है। यहां यही सहस्रांशु शब्द विचारणीय है। सूर्य संसार के सभी चराचर पदार्थोंको प्रकाश और ताप प्रदान करता है। किन्तु जब हमारे सम्मुख आधुनिक प्रकाश-विज्ञान (लाइट फिजिक्स) के विश्लेषण खड़े होते हैं, तब हमें सूर्यके नित्य दिखाई पड़ने वाले सफेद प्रकाशकी रूपरेखा विचित्रता भरी ज्ञात होती है। जिस प्रकार अनेक शाखा प्रशाखाओं और पल्लवोंके संघटनरूपको हम वृक्ष कहते हैं, उसी प्रकार पृथ्वी पर स्पष्टतया फैलने वाला सूर्य प्रकाश विविध किरणोंके सम्मेलनका स्वरूप है। तत्व यह है कि मुख्य प्रकाश देने वाली किरणोंके अतिरिक्त सूर्य किरणों में और भी अनेक प्रकारकी किरणें होती हैं जो चर्मचक्षुओंसे परे की वस्तु हैं। हमारी नेत्र-शक्ति केवल सफेद प्रकाशको देख पाती है। परन्तु वस्तुतः यह प्रकाश भी श्वेत नहीं है। सच तो यह है कि त्रिपार्श्व (Prim) की सहायता से देखने पर सूर्यके इस श्वेत प्रकाशमें सात रंगों (बैंगनी, आसमानी, पीला, नीला, हरा, लाल और नारंगी) के अस्तित्व का पता चलता है। यहां ध्यान देनेकी बात है कि वेदमें "सूर्यका सप्ताश्व (सात घोड़ों) के रथ (चक्र या कक्षा) पर बैठे" का जो वर्णन है सो वे सात घोड़े इन्हीं सात रंगोंके आलंकारिक रूप हैं। इन रंगोंकी छवि सूर्योदय के समय हरी हरी दूबों पर पड़े हुए ओस कणोंको मोती जैसे चमकाती रहती है। इन्द्रधनुष तो सातों रंगों का चित्र ही है। आचार्य वराहमिहिरने "बृहत्संहिता"में लिखा है—

सूर्यस्य विविधवर्णाः
पवनेन विघट्टिताः कराः साभ्रे।
वियति धनुः संस्थानाः
ये दृश्यन्ते तदिन्द्रधनुः ॥

भाव यह है कि सूर्यकी अनेक रंगकी किरणें जो वायु द्वारा अवरुद्ध होकर आकाशमें (जलयुक्त) मेघ पर पड़ती है, उनका धनुषाकार (सूर्य बिम्बकी गोलाईका अर्ध रूप) होना इन्द्रधनुष कहलाता है। आश्चर्य है कि यद्यपि वे रंग सर्वदा सूर्य प्रकाशमें सटे रहते हैं; किन्तु फिर भी सूर्य प्रकाश उज्ज्वल ही ज्ञात होता है। अस्तु, यहाँ यह भी जानिए कि सूर्यके श्वेत प्रकाशमें जिन विभिन्न किरणोंका संमिश्रण है, उनमेंसे कुछ तो दृश्य और स्पष्ट हैं और कुछ किरणें तो नेत्रसे क्या त्रिपार्श्वसे भी नहीं देखी जा सकतीं। किन्तु, वैज्ञानिक कब मानने चले? उन्होंने कुछ ऐसे यन्त्र भी तैयार किये जिनकी सहायतासे सूर्यकी गुप्त-किरणोंका पता हम सभी ज्ञात कर सकते हैं। उपर्युक्त सात रंगोंका त्रिपार्श्व द्वारा पर्यवेक्षण करनेसे बैंगनी रंग एक सिरे पर और लाल रंग दूसरे सिरे पर देख पड़ते हैं। शेष रंगोंकी रश्मियाँ इन दोनों रंगोंके मध्य आती हैं। अदृश्य किरणों से कुछ तो लाल रंगके परे तथा कुछ बैंगनी रंगके परे होती हैं, जो क्रमशः 'परालाल' और 'पराकासनी' किरणें कही जाती हैं। इन अदृश्य किरणोंके चमत्कार पूर्ण कार्य ज्यौतिषियोंके हृदयमें कौतूहल सा उत्पन्न कर देते हैं।

परालाल किरणें

हम बता चुके हैं कि लाल रंगके परे वाली किरणें "परालाल" कहलाती हैं। इनमें ताप उत्पन्न करनेकी अपूर्व शक्ति है। फोटोग्राफीमें तो इन किरणोंसे अत्यधिक लाभ होता है। जिन बहुत दूर स्थित वस्तुओंके चित्र लेने में फोटोग्राफीकी युक्तियां 'टांय-टांय फिस' हो जाती हैं—इन किरणोंकी सहायतासे उनके चित्र आसानीसे लिये जा सकते हैं। इतना ही नहीं, उन पदार्थोंके भी चित्र लेनेमें

कोई परिश्रम नहीं, जिन तक हमारी सीमित नेत्र-शक्ति नहीं पहुंच पाती।

पराकासनी किरणोंका चमत्कार

बैंगनी रंगके परे वाली 'पराकासनी' किरणोंको सूर्य प्रकाशमें महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इन किरणोंकी उपस्थिति जानने और कृत्रिमतासे उत्पन्न करनेके कई साधन ज्ञात कर लिए गए हैं। मेरा अनुभव है कि स्फटिक (क्वर्टज) पराकासनी किरणोंके लिए पारदर्शक होता है। स्फटिकके लैंस या कांचके त्रिपार्श्व द्वारा सूर्यके सफेद प्रकाशका वर्ण-पट प्राप्त करने पर बैंगनी या कासनी रंगकी रेखाके परे एक और रेखा देखी जाती है। इस रेखाका अग्रभाग फोटोग्राफी प्लेट पर स्फटिकके त्रिपार्श्व द्वारा बनने वाले वर्णपटका चित्र लेनेसे काला हो जाता है।

क्योंकि पराकासनी किरणें रासायनिक क्रिया करनेकी शक्तिसे फोटोग्राफी प्लेट पर झट प्रभाव डाल देती है। कुनैन (बुखारकी दवा) पर जब पराकासनी-किरणें पड़ती हैं तो आसमानी रंगका दृश्य-प्रकाश निकलने लगता है। कुछ और भी ऐसे पदार्थ पाये जाते हैं, जिन पर पराकासनीका प्रभाव डाला जाय तो उनमें चमक आ जायगी। वह चमक या मन्द प्रकाश "प्रतिदीप्ति" कहा जाता है।

प्रथम महायुद्धके पश्चात् पराकासनी किरणोंका अनुसंधान-कार्य बहुत प्रगतिशील हुआ। वैज्ञानिकोंने इन किरणोंको कृत्रिम विधियोंसे उत्पन्न कर विविध प्रकारके लोक-हितकारी सदुपयोग खोज निकाले हैं। प्रारंभिक अनुसंधानोंसे केवल यही ज्ञात हुआ था कि पराकासनी किरणें कीटाणु नाशक और रासायनिक परिवर्तन करनेकी क्षमता रखती है। इधर अधिक छान-बीन करनेसे पता चला कि पराकासनी किरणोंमें भिन्न-भिन्न तरंगे होती हैं। इसलिए कुछ ही किरणें कीटाणुओंके नष्ट करनेमें विशेष शक्तिशाली हैं। अभी इसका नाम नहीं रखा गया है। यहां यह लक्ष्य करनेकी बात है कि 'वैदिक कालमें' भी इन कीटाणु-नाशक किरणोंका आभास मिल गया था। यही कारण है कि प्रभात संध्या वन्दनमें सूर्योपस्थान के एक मंत्रमें ऐसी प्रार्थना की गई है कि "सूर्य मुझे पापोंसे बचावें और रातमें मैंने वचन, हाथ, पांव, पेट और जननेन्द्रिय द्वारा जो पाप किया है उसे लुप्त करें। एवं उस पापसे मुझमें जो कुछ विकृति आयी है, उसे मैं सूर्य ज्योतिमें (होम करता हूं) नष्ट होवे।" यहां पाप शब्दका मल या कीटाणु अर्थ करना उचित है, इसलिये कि मन प्रेरक है और तथाकथित सभी अंग कर्मेन्द्रिय हैं जिनके द्वारा हमारे अन्दर बाह्य कीटाणु या मल प्रवेश कर सकते हैं। हां, तो पराकासनी किरणोंका जो अंश सूक्ष्म कीटाणुओंको नष्ट कर डालता है, उसे कृत्रिम रूपसे उत्पन्न कर व्यवहारमें लानेके लिए वैज्ञानिकोंने एक "स्टेटी लैम्प" नामक लैम्पका निर्माण किया है, जो सस्ते दाममें मिलता है और साथ ही टिकाऊ भी होता है। इस लैम्पके प्रकाशमें चीरफाड़के काम अधिक किये जाते हैं। क्योंकि इससे आपरेशनके औजारोंके कीटाणु बहुत शीघ्र नष्ट हो जाते हैं, वायु भी शुद्ध होती है। विस्कुट और रोटी बनानेके कारखानोंमें भी इस लैम्पका व्यवहार बराबर बढ़ता जा रहा है।

पाश्चात्य देशोंकी मुख्य खाद्य वस्तु मांस, मछली, आदिको अधिक समय तक सुरक्षित रखनेके लिए बड़ी तत्परताकी आवश्यकता पड़ती थी। बरफसे कुछ लाभ अवश्य होता था, किन्तु फिर भी वे पदार्थ कीटाणुओंके विषाक्त प्रभावसे अछूते नहीं रह जाते थे। स्टेटी लैम्पने सदाके लिए निःसन्देह कर दिया। इसकी किरणोंमें मांसके टुकड़ोंके कीटाणु शीघ्र नष्ट हो जाते हैं, और साथ ही मदिरा, चाय, दूध आदि पीनेके पात्र भी निःसंक्रामक बना लिए जाते हैं। लैम्पके आविष्कारकोंका अनुमान है कि वह दिन दूर नहीं जब यह लैम्प जन-साधारणकी वस्तु हो जायगी। इस लैम्पमें एक और विलक्षण गुण यह है कि जिस दिन सूर्य न दीखे, ठण्ड असह्य हो जाय उस दिन इस लैम्पके प्रकाशमें धूपका सुख मिल सकता है। कारण कि धूपमें पराकासनी किरणें प्रचुर मात्रामें रहती हैं और उन्हींके आधार पर उक्त लैम्पका आविष्कार हुआ है। हमारे यहाँ तो लोग प्राकृतिक धूपका ही इतना सेवन करते हैं कि उन्हें स्टेटी लैम्पके बहुतसे लाभ बिना व्ययके ही प्राप्त हो जाते हैं। आप जानते हैं कि आधुनिक "फोटो-इलेक्ट्रिक सेल" (अलादीनका चिराग) रेडियोकी जान है। इससे हम दूरके शब्दों और वस्तुओंको आसानीसे सुन और देख सकते हैं। किन्तु आपको आश्चर्य होगा कि इलेक्ट्रिक सेलमें भी पराकासनी किरणोंकी लहर ही काम

करती हैं। अस्तु, इन किरणोंके अतिरिक्त वैज्ञानिकोंने अनुसन्धान से और भी कई छोटी छोटी किरणोंका पता लगाया है।

किरणोंकी लहर

जिस प्रकार वायुके झोंकेसे जल राशिमें तरंगे उठती हैं, उसी प्रकार सूर्य प्रकाशमें भिन्न-भिन्न लम्बाईकी लहरें होती हैं और इन्हीं लहरोंके पारस्परिक संघर्षसे सातों रंगोंकी रश्मियां बनती हैं। अपनी बातकोंठीक-ठीक समझानेके लिए हमें "अंगस्ट्रम" वैज्ञानिककी परिभाषा देखनी पड़ेगी। कहते हैं, उक्त वैज्ञानिकने सफेद प्रकाशमें स्थित सातों रंगोंकी तरंगोंकी लम्बाइयां वर्णपटके आधार पर अलग-अलग ज्ञात करके सेण्टीमेटरकी परिभाषाके अनुसार उन लम्बाइयोंको व्यक्त करनेकी सरल युक्ति निकाली और अपने नाम पर ही इसका व्यवहार किया।

सेंटीमेटरका आधार इसलिए लिया गया कि अंगस्ट्रम् की इकाई बहुत सूक्ष्म होती है और १०,००,००,००० एक सेण्टीमेटर होते हैं।

जिन तरंगों या लहरोंकी लम्बाई ८००० अंगस्ट्रम् से अधिक होती है, वे तापवाहिका बनती है। उनसे आँखों को प्रकाश नहीं मिलता, हां सूर्यकी गर्मी इन्हीं तरंगों द्वारा मिलती है। यही "परालाल" किरणें हैं जिनका वर्णन हम पहले कर चुके हैं। ४००० और ८००० के बीचकी लम्बाईकी लहरोंका प्रभाव पड़नेसे हमें चाक्षुष-प्रत्यक्ष यानी आँखोंमें प्रकाशका संवेदन उत्पन्न होता है। जब तरंगकी लम्बाई ८००० अंगस्ट्रम्के लगभग हो तो लाल रंगके प्रकाशकी और ४००० अंगस्ट्रमके लगभग हो तो बेंगनी रंग के प्रकाशकी सम्वेदना उत्पन्न होती है। पराकासनी किरणों की लहरकी लम्बाई तो २७६०० से भी अधिक है, किन्तु उसके कीटाणु नाशक अंशकी तरंग २५३७ अंगस्ट्रम् लम्बी हैं। इसे लघुपराकासनी कह सकते हैं।

विशिष्ट किरण

परालाल किरणोंकी तरंगोंसे भी लम्बी १-१० सेंटीमेटर तक पहुंचने वाली तरंगें "हर्जियन" कहलाती हैं। इन किरणोंमें बेतारके समाचार, रेडियोके भाषण और गाने को एक स्थानसे दूसरे स्थान तक ले जानेकी विशेष शक्ति है। लघु पराकासनीसे भी छोटी किरणें होती है, उन्हें क्रमशः एक्स किरण, गामाकिरण और कास्मिककिरण कहते हैं। एक्सकिरणका एक भेद 'रेडियम' है। एक्सकिरण इतनी तीव्र होती है कि दूसरे पदार्थोंमें झट घुस जाती है। आजकल इन किरणोंसे बहुतसे काम लिए जाने लगे हैं। सन्तान निग्रह विज्ञानके विशेषज्ञोंका कहना है कि सन्तति निरोधकी अन्तिम और निःसन्देह विधि "अस्थाई नपुंसकी करण" है। इस विधिके प्रयोगमें पुरुष की जननेन्द्रिय एक्सकिरण (X Ray) या रेडियमके बायुमंडलमें कई बार रखी जाती है। प्रभाव यह पड़ता है कि शुक्रकीटों (Spermato Zoon) की परिपक्वावस्थाको प्राप्त होनेकी शक्ति जाती रहती है, जिससे वे डिम्ब (गर्भाशयकी मुख्य वस्तु (Ovum) से नहीं मिल पाते। अतः गर्भस्थिति असम्भव हो जाती है। विशेषता यह कि पुंस्त्व शक्ति निर्बल नहीं होती और सम्भोग-क्षमता बनी रहती है। हां, एक्स-किरणोंसे कास्मिक-किरणें अधिक महत्वपूर्ण हैं। सम्प्रति वैज्ञानिकोंका ध्यान इस ओर बहुत आकृष्ट हुआ है और वे इन किरणोंकी पूरी छानबीन कर रहे हैं। हाल ही अणुबम के अनुसन्धानके सिलसिलेमें रूसी वैज्ञानिकोंने जो "विश्व किरण" नामक आविष्कारका अनुभव किया है उसमें कास्मिक किरणोंकी शक्ति ही महासांघातिक सिद्ध हुई है। कहते हैं ये किरणें हमारे वायुमंडलमें कहीं बाहरसे आती हैं। इस प्रकार सूर्यकी किरणोंका मौलिक विवरण और दिनानुदिन विज्ञानकी प्रखर उन्नति देखकर हम इस विश्वास पर बैठते हैं कि हमारा 'सहस्रांशु' शब्द यथार्थ सिद्ध होकर ही रहेगा, इसमें सन्देह का प्रवेश नहीं।

—

सदुपदेश

मनुष्य सब प्रकारकी जीवधारी जातियोंमें श्रेष्ठ है। उसको अपने इस जीवनसे लाभ उठाना चाहिए। यदि मनुष्य होकर भी पशु-पक्षी-कृमि-कीटोंके समान खाने, पीने, सोने, बच्चे बच्ची पैदा करनेमें ही लगा रहा, तो यह ज्ञानपूर्ण नर-जीवन व्यर्थ ही गया। उसे तो अपने धर्मको जानना, ईश्वरको जानना, मोक्ष प्राप्त करना है।

———

षट्तिला एकादशीकी शास्त्रीय महत्ता

[लेखक—श्री पं० मदनगोपालजी शर्मा ज्योतिषाचार्य]

हेमाद्रिके अनुसार माघकृष्ण एकादशीको ही "षट्तिला एकादशी" व्रत निष्पन्न होता है। इस वर्ष उपरोक्त षट्-तिला एकादशी व्रत ७ फरवरी १९५६ माघ कृष्ण ११ मंगलवारको सम्पूर्ण भारतमें सभीके लिए एक ही होगा। व्रती को चाहिए कि माघकृष्ण 'एकादशी' को प्रातःकाल स्नान करके, "श्रीकृष्ण" इस मन्त्रके १०८ या १००८ जप करे। उपवास रखे, रात्रिमें हरिकीर्तन जागरण और हवन करे, और भगवान्‌का यथा विधि पूजन उपचार करे। पश्चात्—

'सु ब्रह्मण्य नमस्तेऽस्तु महापुरुषपूर्वज।
गृहाणार्ध्यं मया दत्तं लक्ष्म्या सह जगत्पते !

अथवा—

"कृष्ण कृष्ण कृपालुस्त्वमगतीनां गतिर्भव।
संसारार्णवमग्नानां प्रसीद परमेश्वर!॥
नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन!
गृहाणार्ध्यं मया दत्तं लक्ष्म्या सह जगत्पते!॥"

इस मन्त्रसे भगवान्‌को अर्घ्य प्रदान करे। "यह षट् तिला एकादशी" है। इसमें— (१) तिलोंके जलसे स्नान करे (२) पिसे हुए तिलोंका उबटन करे, (३) तिलोंका हवन करे, (४) तिलमिश्रित जल पिये, (५) तिलोंका दान करे, और (६) तिलोंके बने (मोदक, बर्फी या तिलसकरी, अथवा तिलोंसे बने अन्य पदार्थ आदि) का भोजन करे। तो सम्पूर्ण पापोंका नाश और पुण्योंका संचय होता है। सद्यःआरोग्यता प्राप्त होती है, और रोगोंका नाश भी होता है। षट्तिलाके लिए शास्त्रवचन इस प्रकार है—

तिलस्नायी तिलोद्वर्त्ती तिलहोमी तिलोदकी।
तिलभुक् तिलदाता च षट्तिला पापनाशिनी॥

इस "व्रत" का संक्षिप्त कथानक इस प्रकार है। इस व्रतकी महती श्रेष्ठताके बारेमें ब्रह्मर्षि नारदके प्रश्न करने पर ऐतिहासिक प्रसंगमें भगवान् श्रीकृष्णने इस प्रकार बतलाया था, वह कथा इस प्रकार है— प्राचीन कालमें भगवान्‌की परमभक्ता एक ब्राह्मणी थी, वह भगवत्सम्बन्धी उपवास और व्रत भगवान्‌की यथाविधि पूजाके साथ २ किया करती थी और नित्यनिरन्तर भगवन्नामका भी स्मरण करती थी। कठिन व्रत करने और पति सेवा एवं गृहकी सम्भाल रखने आदिसे उसका शरीर कृश हो गया। यद्यपि व्रत और उपवासके बीचमें उसने गृह मकान और सुवर्णका दान ब्राह्मण और कुमारी कन्याओंको बहुत दिया, परन्तु अपने जीवनमें भगवान् तथा प्राणियोंकी तृप्ति हेतु अन्नका एक दाना भी दानमें नहीं दिया। प्राणिमात्रकी तृप्ति हेतु उसके द्वारा अन्नका दान सम्पादन न होनेके कारण हे नारद! मैंने यह विचार किया कि व्रत और उपवाससे इसका शरीर तो शुद्ध हो गया और मेरे धाम अर्थात् बैकुण्ठमें सदेह आने योग्य भी यह हो चुकी। परन्तु अन्न दानके बिना इसकी तृप्ति कैसे होगी। यह सोचकर मैंने भिक्षुक (कपाली) का रूप धारण करके उस साध्वी ब्राह्मणीके सामने भिक्षाकी याचना की, परन्तु उस क्रोधा ब्राह्मणीने मुझे कुछ भी अन्न नहीं दिया, अन्तमें बहुत कुछ कहने सुनने पर (बड़बड़ाने पर) उसने मिट्टीका एक बहुत बड़ा ढेला भिक्षापात्रमें कपालीको समर्पित किया।

कृपालु भक्तवत्सल भगवान् उसीसे प्रसन्न हो गये और ब्राह्मणीको बैकुण्ठका बास दिया। परन्तु वहां मिट्टीके परम मनोहर मकानों (गृहों) के अतिरिक्त उसे और कुछ भी नहीं मिला। तदनन्तर भगवान्‌के द्वारा प्रेरित देवबन्धुओं की आज्ञासे- वहीं पर उस भगवद्भक्ता ब्राह्मणीने "षट् तिला एकादशी" व्रतका सविधि सम्पादन किया, जिसके प्रभावसे उसको इच्छित वस्तुओंकी प्राप्ति हुई।

व्रतार्थी उपरोक्त षट्तिलामें श्वेत और कृष्ण दोनों प्रकारके तिलोंको उपयोगमें ले सकता है, इस कार्यमें दोनों प्रकारके तिल प्रशस्त माने गए हैं। तिलके प्रयोगसे आरो-ग्यता और सर्वसमृद्धि प्राप्त होती है, और तिलदानसे सभी प्रकारके पापोंका नाश और पुण्योंका संचय होता है।

नियमकी एकादशियोंका स्मारकपत्र

श्रीस्वाध्यायके विज्ञ पाठकगण! आप लोगोंके लाभार्थ हमने अधिक मास सहित २६ एकादशी जो नियमकी

एकादशियोंमें भी मानी जाती है उनका एक स्मारकपत्र नीचे प्रकाशित करवा रहे हैं—

एकादशी तालिका	फलाहार
(१) मार्गशीर्ष कृष्ण एकादशी	बादाम
(२) मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी	बिल्वफलका गुदा
(३) पौषकृष्ण एकादशी	तिलमिश्रित गुड़
(४) पौषशुक्ल ,,	सवत्सागौदुग्ध
(५) माघकृष्ण ,,	गुड़मिश्रित तिल
(६) माघ शुक्ल ,,	कतारी (ईख या गन्नेका टुकड़ा)
(७)फाल्गुन कृष्ण ,,	सिंघाड़ा (पानीफल)
(८) फाल्गुण शुक्ल ,,	धात्रीफल (आंवला)
(९) चैत्र कृष्ण ,,	चिरंजीदाना
(१०) चैत्र शुक्ल ,,	लवङ्ग
(११) वैशाख कृष्ण ,,	खरबूजा
(१२) वैशाख शुक्ल ,,	गौमूत्र
(१३) ज्येष्ठ कृष्ण ,,	काकड़ी
(१४) ज्येष्ठ शुक्ल	आमका अमरस
(१५) आषाढ़ कृष्ण ,,	मिश्री
(१६) आषाढ़ शुक्ल ,,	अंगूर (अभावमें किसमिस)
(१७) श्रावण कृष्ण ,,	गौदुग्ध
(१८) श्रावण शुक्ल ,,	केवल गुड़
(१९) भाद्रपद कृष्ण ,,	बादाम
(२०) भाद्रपद शुक्ला ,,	पपीता (एरंड काकड़ी)
(२१) आश्विन कृष्ण	केवल तिल
(२२) आश्विन शुक्ल ,,	मूली
(२३) कार्त्तिक कृष्ण ,,	कदलीफल (केला)
(२४) कार्त्तिक शुक्ल ,,	बिल्वपत्र
(२५) अधिक मास कृष्ण एकादशी	तुलसी पत्र
(२६) ,, मास शुक्ल ,,	सवत्सा गौदुग्ध

नोट— अधिकतर उपरोक्त एकादशी व्रत सधवा और विधवा स्त्रियां किया करती हैं, उनके लिए यह तालिका उपयोगी होगी।

सङ्कष्ट चतुर्थी

[लेखक—राजगुरु ज्यौतिषालंकार श्री पं० तारादत्तजी]

माघ कृष्ण चतुर्थीको संकष्ट चतुर्थी कहते हैं। इस दिन गणेशजीकी उपासनासे सङ्कटोंका नाश शास्त्रमें वर्णित है।

जिस मासकी अमावस्या मकरार्क वाली होती है उसे माघ मास कहते हैं। मकरराशि कन्याराशिसे पांचवीं होती है। पञ्चमस्थान सन्तान स्थान है। कन्या पार्वतीजीकी राशि है। गणेशजी पार्वतीजीके पुत्र हैं। इसलिए गणेशजीकी मकर राशि है। माघकी अमावास्यामें सूर्य चन्द्रमा अवश्य मकर राशिमें होते हैं। सूर्य आत्मग्रह और चन्द्रमा मनोग्रह है। इसलिए जिस प्रकार सूर्योदयसे पहले प्रकाश हो जाता है उसी प्रकार माघ कृष्ण पक्षमें प्राणियोंके आत्मा और मनका सम्बन्ध मकरराशि वाले गणेशजीसे हो जाता है। चतुर्थी गणेशजीकी तिथि है। इसलिए माघ कृष्ण चतुर्थीको गणेशजीसे आत्मा-मनका विशिष्ट सम्बन्ध होता है। अतएव इस दिन कष्ट-निवारणके लिए गणेशजीकी उपासना युक्तिसे भी सिद्ध होती है।

कन्या कुमारीका नाम है। इसलिए 'स्वनाम सदृशाः' इत्यादि बृहज्जातकादि ग्रन्थोंकी उक्तियोंसे कन्या राशिका कुमारियोंका अधिष्ठातृत्व सिद्ध है। भगवतीका कुमारियोंसे प्रेम है। भगवतीकी प्रीतिके लिए कन्या पूजन किया जाता है। कन्यार्कसे आरब्ध आश्विन शुक्ल पक्षमें भगवतीका पूजन किया जाता है। मीनार्ककी कन्या राशिमें पूर्णदृष्टि होती है। इसलिए मीनार्कसे आरब्ध चैत्र शुक्ल पक्षमें भी भगवतीका पूजन किया जाता है। 'अवकहड' चक्रके अनुसार भी 'पार्वती' इस प्रसिद्ध नामकी कन्या राशि है। इस प्रकार पार्वती रूपा भगवतीका कन्या राशिसे विशिष्ट सम्बन्ध स्पष्ट है। इस चक्रके अनुसार 'गणेश' इस प्रसिद्ध नामकी मकर राशि भी सिद्ध होती है।

मनुष्य जीवनका उद्देश्य क्या है ?

सुप्रसिद्ध अंग्रेज मि० जेम्स साहबके मार्मिक प्रश्नोत्तर

[लेखक—भक्त श्री रामशरणदासजी]

अभी उस दिन पिलखुवाकी बात है कि मैं शौच स्नानसे निवृत्त होकर संध्याबन्दन करके अपने पूजाके कमरेमें श्री ठाकुरजीकी पूजा करके जाही रहा था निचेसे अपने एक व्यक्तिने आवाज दी भक्तजी ! जरा नीचे आइये अपको एक अंग्रेज साहब बुलाते हैं। मैंने यह सुना तो चित्तको बड़ा दुःख हुआ और मैंने मन ही मन कहा कि आज कौनसा पाप उदय हुआ कि जो प्रातःकाल श्रीठाकुरजी महाराजके दर्शन न कर एक म्लेच्छ गोभक्षक अंग्रेजसे मिलना होगा ? प्रातः काल गोपालकृष्णकी पूजाको छोड़ गोभक्षकी पूजा क्या यह उचित है ? हमने उन्हें बुलाकर समझाया कि साहबसे कह दो कि दो घंटे बाद मिल सकेंगे इससे पहले नहीं। वह अंग्रेज बाजार चला गया और दो घंटे बाद जबमें नीचे आया तो देखा सामने कोट, बूट, टोप, नकटाई धारण किये अंग्रेज आ रहा है। उसने आते ही पूंछा क्या टुमारा ही नाम भक्त रामशरनडास है ? मेरे यह कहने पर कि हां मेरा ही नाम है तो उसने झट अपना हाथ मेरे हाथसे मिलानेके लिए आगे बढ़ाया, मैंने अपना हाथ पीछेको हटाते हुवे कहा कि साहब मैं आपसे हाथ नहीं मिलाऊंगा।

साहब—वैल टुम अमसे हाट क्यों नही मिलाटा ?

मैं—साहब यह भारतीय पद्धति नहीं पाश्चात्य पद्धति है। हाथ मिलाना हमारी भारतीय सभ्यता संस्कृति नहीं बतलाती, यह आपके देशकी बातें हैं। आप अब मेरे परम-पवित्र ऋषियोंके देशमें खड़े हैं इसलिए अब यहांकी बातें करिये।

साहब—टुम अमसे हाट मिलानेमें क्यों डरटा है ?

मैं—साहब मैं डरता नही हूँ मैंने अभी घर पर पूजा की है अभी मुझे मंदिरमें जाकर आशुतोष भगवान् श्रीशंकर जी महाराजकी पूजा करनी है। यदि मैंने आपसे हाथ मिला लिया तो मुझे सचैल स्नान करना होगा, इस लिये मैं आप को स्पर्श नहीं करूंगा।

अंग्रेज—अमारे हाट में क्या पर गया है ? अमारे टुमारे हाटमें क्या फर्क है एक ही बाट है ?

मैं—ना, ना साहब फर्क है, बहुत फर्क है और पृथ्वी आकाशका अन्तर है।

अंग्रेज—असें समझाओ बटावो क्या अन्टर है ?

मैं—साहब बहुत बड़ा अन्तर है। मैं श्री गंगा यमुना के बीचमें रहने वाला धर्मप्राण देवभूमि दिव्य देश भारतमें जन्म लेने वाला ऋषियोंकी संतान सनातनधर्मी हिन्दू हूँ इसका मुझे गौरव है। भगवान् श्रीश्यामसुन्दरकी असीम कृपासे मुझ सनातनधर्मी हिन्दूके हाथ आपके हाथोंसे बड़े ही परमपवित्र हैं। मैं जिन हाथोंसे नित्य अपने प्राणप्रिय श्रीठाकुरजी महाराजको हाथ जोड़ता हूं, जिन हाथोंसे नित्य श्रीतुलसीजी महारानीका पूजन करता हूं, जिन हाथोंसे पूज्य भूदेव ब्राह्मणोंके श्रीचरणोंको छूता हूँ, जिनसे संतों की चरण धूलीको अपने मस्तक पर लगाता हूँ, जिन हाथोंसे पूज्य गोमाता जिसमें ३३ करोड़ देवी देवता वास करते हैं उसकी सेवा करता हूं, जिनसे अपनी पुज्या माताजी के श्रीचरणोंकी सेवा करता हूँ, जिनसे नवदुर्गाओंमें पूज्य ब्राह्मण कन्याओंको दुर्गा मान चरण धोता हूं। जिन हाथोंसे चरणामृत लेकर पीता हूं, जिनमें पतितपावनी कलिमलहारिणी पतितोद्धारिणी श्रीगंगा, श्रीयमुना, श्रीसरयू, श्रीगोमती, श्रीनर्मदाका परमपवित्र अमृतमय जल लेकर पान करता हूं, जिनमें श्रीठाकुरजी महाराजका प्रसाद लेकर पाता हूं, जिनसे देवताओंके निमित्त यज्ञहवन में आहूती देता हूँ, जिनसे दान पुण्य करता हूं, जिनसे श्रीकृष्णगुणगानके समय मस्तीमें आकर ताली बजाता हूं, जिनसे आशुतोष भगवान् श्रीशंकरजी महाराज पर जल चढ़ाता हूं, जिनसे भगवान् श्रीगणेश नवग्रह, देवी देवताओं को हाथ जोड़ छींटे लगाता हूँ, जिन्हें शौच जाने पर दस-दस बार पीली मिट्टीसे मांज कर धोता हूँ, जिनसे श्रीकृष्ण

नामकी माला घुमाता हूँ, जिनसे पूज्य ब्राह्मणोंको, संतों को भोजन कराता हूँ, जिनसे देव मंदिरोंको प्रणाम करता हूं, जिनमें जलका लोटा ले भगवान श्रीसूर्यको अर्घ्य प्रदान करता हूँ, जिनमें अपने परमपवित्र ग्रन्थ वेद, शास्त्र, पुराण रामायण गीता महाभारत श्रीमद्भागवत ले पाठ करता हूं, जिनमें श्रीव्रजरज, श्रीगंगारज, श्रीअयोध्या—रज ले माथे पर लगाता हूं, जिनसे हर मंगलवार शनिवारको बंदरों को श्रीहनुमान मानकर लड्डू जिमाता हूँ, जिनसे गोमाता को मीठी लोई खिलाता हूं, जिनसे घी बूरा से चिंटवाल जिमाता हूँ, जिनसे पक्षियोंको चुग्गा डालता हूं, जिनसे कुत्तोंको श्रीभैरवका स्वरूप मानकर दही बड़े खिलाता हूँ, जिनसे विषैले जहरीले नागको भी नागपंचमीके दिन दूध पिलाता हूं, जिनसे दूवरी आठेको दूब घास तककी पूजा करता हूं, जिनसे केला, बड़, पीपल, तुलसी आदिको जल देकर हरा भरा करता हूं। जिन्हें मैंने कभी भूलकर भी परस्त्रीके नहीं लगने दिया, जिन्हें मांस मछली, अण्डे मुर्गोंको नहीं छूने दिया, जिन्हें कभी साबुन, क्रीम, पाऊडर, सोडा, सिगार सिगरेट, पानीका बरफ, चाय, चीनीकी प्यालियोंका स्पर्श नहीं होने दिया, जिनकी पवित्रताकी लाख कष्ट उठा कर भी रक्षा की, आज उन्हीं पवित्र हाथोंको व्यर्थ ही आपके हाथोंसे मिलाकर जबकि आपके हाथ बहुत अपवित्र हैं और जो हाथ कभी जन्मभर नित्य टट्टी जाने पर भी मिट्टीसे मल कर नहीं धोये गये, जिन हाथोंसे पूज्य गोमाताको मार मार कर गर्दन पर छुरियां चलाकर, काट काट कर, बोटी बोटी कर खाया गया, जिनसे मुर्गी अण्डे, मछली, मेंढ़क, तीतर, कबूतर सब जीव मात्रको कष्ट पहुँचाया गया, मारा गया, खाया गया, जिन्हें निरपराध जीवोंके खूनसे रंगा गया, जिनसे करोड़ों जीवोंका कचूमर निकाला गया, जिनसे शराब सोडा, चायकी सब की जूंठी प्यालियोंको चाटा गया, जिनसे सिगार सिगरेट का धूंवा उड़ाया गया, जिनसे कुत्तोंको मलमल कर न्हलाया गया, जिन्हें परस्त्रियोंके गलेमें डाल बाजारोंमें घूमा गया, जिनसे मूत्रेन्द्रियको पकड़ कर खड़े खड़े मूता गया, जिनसे हाथमें बन्दूक ले लाखों जीवोंका संहार किया गया, जिनमें गंदे गंदे अखबार, उपन्यास, परस्त्रियों के फोटो रहे, जो कभी गऊ ब्राह्मण साधु संतोंके सामने नहीं जुड़े, जो परस्त्रियोंसे मिलते रहे ऐसे गंदे हाथसे मिलाकर क्यों पापका भागी बना जाय? आपके हाथोंसे न जाने कितनी गोमातायें काट कर खाई गई हैं और गोहत्या आपके सर पर चढ़ी हुई है, हम अपनी गोमाताके हत्यारोंको अपना कैसे मानें? उनसे हमारा क्या सम्बन्ध? उनसे हम अपना पवित्र हाथ मिलाकर गोहत्या अपने मथ्थे पर चढ़ाकर व्यर्थ ही क्यों नर्क जांय? आप जैसोंके जो हाथ दिन रात निरपराध जीवोंको मारें काटें, जो शराब कबाबमें डूबे रहें, जो कभी मिट्टीसे भी मल कर शुद्ध न हुये हों उन्हें छूनेसे क्या लाभ? हानि तो बड़ी भयंकर है, पर लाभ तनिक भी नहीं, इसलिये हम नहीं छूना चाहते। समझे आप हमारे और अपने हाथका अन्तर या नहीं?

अंग्रेज—वैल अमारी समझमें आया टुम ठीक कहटा है। अम टुमारी बाटको ठीक मानटा है, टुम सच्चा आडमी है, टुम चापलूस नहीं। टुम अमको नहीं जानटा हम दीनबन्धु खण्डरूजके साथ भी रहा अमारा नाम जेम्स साहब है। अमसे टुमारा मालवीय गाँधी सब हाट मिलाटा रहा और सभी बड़े बड़े लोग मिलाटा रहा।

मैं—मालवीयको गांधीको आपसे कोई कार्य होगा वह हमारे लिये कोई प्रमाण नहीं, वह परमात्मा नहीं, हमारे लिए शास्त्र ही प्रमाण है। बड़े बड़े बाबू लोग आपसे हाथ मिलाते हैं सो वह तो आपके साथी काले अंग्रेज ठहरे। आप गोरे अंग्रेज वह काले अंग्रेज, इसलिये आप दोनोंकी खूब घुटेगी ही। गांधीजी आपके देशों में रहे और आप लोगोंका घरका खाते पीते रहे, बाईबिलका पाठ करते रहे, हमें तो हमारा प्राण प्यारा सनातनधर्म ही सब कुछ है। पूज्य ब्राह्मणोंका आदेश उपदेश ही सब कुछ है।

अंग्रेज—अम टुमसे कुछ पूछना मांगटा है, अम प्रश्न करना मांगटा है।

मैं—जरूर पूंछो जो हम जानते हैं सो बतायेंगे।

अंग्रेज—टुम मनुष्य जीवनका उद्देश्य क्या मानटा है?

मैं—हम सनातनधर्मी मनुष्योंके जीवनका एक मात्र उद्देश्य अपने सत्य सनातनधर्मकी शरणमें रहते हुये, शास्त्रानुसार चलते हुए, वर्णाश्रम धर्मका पालन करते हुये येन केन प्रकारेण जिस प्रकार भी हो, जैसे भी हो श्रीकृष्ण प्रेममें निमग्न हो जाना है। व्रजकी गलियोंमें घूमते हुये ऊंचे स्वरसे श्रीकृष्ण, श्रीकृष्ण, श्रीराधे श्रीराधेकी ध्वनि लग

समाधिस्थ हो जाना है। ब्रजमें रहकर श्रीकृष्णगुणगान करना ब्रजरजमें लोटपोट हो जाना, ब्रजवासियोंके टूक मांग-मांग कर खाना, संतोंके श्री चरणोंसे चिपट जाना, रोते हुए अश्रुधारा बहाना, वृक्ष लताओंके नीचे डेरा जमाना, श्रीकृष्ण प्रेमकी मस्तीमें झूमना ही जीवनका उद्देश्य है। हमारे जीवनका उद्देश्य विषय भोग भोगना, सिनेमाँ नाटकोंकी खाक छानना, चायकी प्यालियां चाटना, कुत्ते पालना, शराबकी बोतलें पी जाना, निरपराध जीवोंको मारकर खा जाना, परस्त्रियोंको रिझाना, सिगार सिगरेटके धूंवे उड़ाना, नश्वर तुच्छ मलमूत्र के मैले इस शरीरके पीछे पागल हो जाना नहीं है। श्रीकृष्ण प्रेमका प्यालापीकर मस्त हो जाना और जीवमात्रको सुख पहुंचाना है।

अंग्रेज—तुम ब्रज किसको कहता है ?

मैं—ब्रज श्रीमथुराजी श्रीवृन्दावन, श्रीगोवर्धन आदि को पुकारते हैं।

अंग्रेज—वही मथुरा जहां तुमारा श्रीकृष्ण हुआ है ?

मैं—हां वही मथुरा वृन्दावन, वही मथुरा वृन्दावन मेरे प्राणोंका प्यारा जहां कि अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक श्री जगन्नियन्ता साक्षात् परमब्रह्म परमात्मा निराकार ब्रह्म छोटा-सा लाला बन पैरोंमें पैजनियाँ बाँध छमछम करता था, ब्रजकी रजमें ब्रह्म लोटपोट हुआ था। नंगे पांवों गैया मैया चराता, लाड़लड़ाता घूमा था। जिन मेरी गैया मैया को खा खा कर घोर नर्ककी तैयारी कर रहे हो उसे ही श्री कृष्ण ब्रह्म प्राणोंसे प्यारी और अपनी पूज्य इष्टदेव मान पूजता था। क्यों मि. जेम्स ! क्या है कोई तुम्हारे इंगलैण्ड अमेरिका, रूस, फ्रांस, जर्मनी, तुर्की आदि देशोंमें एक भी ऐसी महिला कि जिसकी पवित्र कोख हो और उससे निराकार ब्रह्म पुत्रके रूपमें प्रगट हुआ हो ? याद रखो यह मेरे परमपवित्र भारतकी श्रीदेवकी, श्रीयशोदा, श्रीरोहिणी, श्रीकौशल्या, श्रीसुमित्रा, श्रीकैकेई जैसी माताओंकी परम पवित्र कोख थी, कि जिनकी कोखसे निराकार परात्परब्रह्म प्रगट हुआ, शेषावतार श्रीबलराम लछमण प्रगट हुए। यह मेरे देशकी ही एक मात्र विशेषता है कि जिस देशमें ऐसी ऐसी दिव्य महिलाएं हुई कि जिन्होंने मृतक पतिको श्री यमराजके हाथोंसे छीनकर जीवित कर लिया, जिन्होंने अपने इशारे मात्रसे सूर्य भगवानको रोक दिया, जिन्होंने अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक भगवान् ब्रह्मा, विष्णु, महेशको बालक बना पालनेमें झुला डाला। जिन्होंने अपनी कोखसे निराकार ब्रह्मको राम, कृष्णके रूप में प्रगट कर दूध पिला डाला। जिन परमात्मासे समस्त ब्रह्मांड काँपता है, वही परमात्मा मेरे देशकी सनातन धर्मी यशोदा मैयाकी छड़ी देखकर कांपता है, वही परब्रह्म परमात्मा जीव मात्रको खिलाता है वही परमात्मा मेरे देशकी यशोदा मैयासे माखन मांगकर खाकर अपनी भूख मिटाता है। जो परमात्मा सारे जगतको, सूर्यको, चन्द्रमाको, सबको नाच नचाता है, वही परमात्मा मेरे देशकी ग्वालनियोंके सामने छाछ पर नाच नाचता है। जिसने समस्त संसारको गोदीमें ले रखा है, वही ब्रह्म श्री यशोदाकी, कौशल्याकी गोदमें बैठकर सुख मानता है।

जिन नैननकी सैनसों सृष्टि पलै नसाय।
तिन नैननमें कौसिला काजर दियो लगाय॥

जिनके नैनके इशारे मात्रसे सृष्टि पलती है और नाशको प्राप्त हो जाती है। उन्हीं नैननमें मेरी सनातनधर्मी मैया कौशल्या काजर लगाया करती है। कोई है ऐसी माता आपके देशमें ? कोई है ऐसी पतिव्रता सती साध्वी माता आपके देशमें ? नहीं है, नहीं है, नहीं है और न आज तक हुई है और न हो सकती है। यह तो मेरे देशको ही एक मात्र सौभाग्य प्राप्त है, मेरे ही दिव्य देशकी यह विशेषता है और किसी की नहीं। आपके देशमें हो भी तो भला कहां से हों जो दिन रात कुत्ते कुतिया पालें, और परमात्माकी प्यारी गैया मैयाको खाय, वह भला फिर क्यों न कुतिया जैसी बन जाय ? और वह भला क्यों न एक को छोड़ें दूसरेको करें और दूसरेको छोड़कर तीसरेको करें। दिन रात पति बदलें, फिर भी नारकीय कीड़ी न बन जाय ? दिन रात नये नये पति करने कराने वाली, छोड़ने वाली तलाक देने वाली कीड़ियोंकी दूषित कोखसे भला धर्मात्मा पुण्यात्माके जन्म लेनेका क्या काम ? जो कुत्ते पालें, खड़े खड़े मूतें, शराब, सोडा पीवें, नंगी लेडियोंके साथ नंगे होकर डांस करें। फिर वह कैसे नर्क न जायं। आपके सारे देशोंमें, करोड़ों घरोंमें है कोई ऐसा परमपवित्र घर जिसमें बैठकर किसी माताने भगवानको लाला बना पालनेमें झुला झुला कर दूध पिला आकाश मंडलके

समस्त देवी-देवताओंको इस अद्भुत दृश्य देखनेको लालायित किया हो ? है कोई ऐसा घर जिसमें अनंत कोटि ब्रह्माण्डनायिका जगज्जननी श्रीजनकनन्दिनी श्री श्री जानकी जी महारानी छोटी सी बिटिया बन छमछम आंगन में खेली हो ? यह तो मेरे देशके श्रीजनकजी को ही सौभाग्य प्राप्त था कि जिनके आंगनमें अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायिका जगज्जननी माता छोटी-सी लल्ली बनकर गाया करती थी और उनकी गोदमें बैठ तोतली बोली बोल देवी देवताओंको भी दुर्लभ अद्भुत आनन्द पहुंचाती थी। है कोई ऐसा एक भी घर आपका जिसमें भगवान् तो क्या देवी देवता तो क्या, साधु संत तो क्या कोई अच्छा आदमी भी कभी आया हो ? परन्तु यह मेरा ही देश है कि जिसमें राजर्षि जनकके अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायिका श्रीजानकी जी बिटिया बनी बैठी हैं और अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक साक्षात् परब्रह्म परमात्मा श्रीराम श्रीराजा दशरथका पुत्र बन श्रीमहाराज जनकजीके यहां दूल्हा बनकर आ रहा है और ब्रह्मका विवाह हो रहा है, जिसे देखने ३३ करोड़ देवी देवता साक्षात् भगवान् श्रीशंकर, श्रीगणेश, ब्रह्मा, इन्द्र, बड़े-बड़े तत्ववेत्ता, ऋषि महर्षि सभी आ पहुंचे हैं। क्या कभी तुम्हारे देशमें स्वप्नमें भी ऐसा हुआ है ? नहीं हुआ नहीं हुआ और न हो सकता है। मेरे देशके दो बहुत साधारण सनातनी संत श्रीस्वामी रामतीर्थ, विवेकानन्द तुम्हारे देशमें पहुंचे थे। उन्हींके कारण समस्त देशमें हलचल पैदा हो गई थी और करोड़ों अंग्रेज भूखों की तरह इन दो सन्यासियोंके श्रीचरणोंमें लोट शांतिकी भीख मांगने लगे थे और ईश्वर प्राप्तिका मार्ग पूंछने लगे थे। है कोई तुम्हारे देशका ऐसा कोई बड़ेसे बड़ा वैज्ञानिक जिसने न दीखने वाले निराकारको ब्रह्मको सबके सामने लाकर खड़ा कर दिया हो ? यह मेरे देशके ही वैज्ञानिक हैं कि जिन्होंने ऐसा अद्भुत आविष्कार किया कि परमात्माको जगतके सामने लाकर खड़ा कर दिया। गली गली घुमा दिया और जीवमात्रको मुक्तिका द्वार खोल दिया। तुम्हारे देशका वैज्ञानिक एटम बम, हाईड्रोजन बम बना सकता है जिससे करोड़ों प्राणी एक साथ मौतके घाट उतर जांय, तड़फ तड़फ कर मर जांय, अन्धे लंगड़े लूले हो जांय। पर मेरे देशकी तरह आपके देशमें श्रीभगीरथ जैसा नहीं हो सकता कि जो घोर तपस्या कर पृथ्वी पर पतित-पावनी कलिमल-हारिणी पतितोद्धारिणी श्री श्रीगंगाजी महारानीको उतार दिया। वह श्री गंगाजी—जो साक्षात् ब्रह्मद्रव है, जिसमें स्नान कर करोड़ो मनुष्य भवसागरसे पार उतर जांय, जन्म मरणके चक्करसे छुटकारा पा जांय ? तुम्हारे देशके करोड़ों मनुष्योंको मारनेके लिए हाईड्रोजन बम जैसे विनाशकारी बमोंका आविष्कार करने वाले वैज्ञानिकोंको जहां इन नारकीय कीड़ोंको कुत्तोंसे नोंचवाना चाहिये वहां वह उलटे लाखों रुपैया महीने लेते हैं और बड़े माने जाते हैं और संसारको फूंकनेकी, दुःख देनेकी बात सोचते रहते हैं। जो दिन रात अण्डे खाते हैं, चाय पीते हैं, शराब पीते हैं, सिगारके धुंवे उड़ाते हैं, खड़े खड़े मूतते हैं ऐसे पशु भला और क्या आविष्कार करेंगे ? मेरे देशके सारे विश्वको सुख पहुँचानेकी सोचने वाले लाखों रुपया लेना तो अलग चक्रवर्ती राज्यको भी तृणके सदृश पैरोंसे ठुकराते हैं, हवा फांक फांक कर अपने शरीर तकको भी सुखा डालते हैं और भवसागरसे सबको पार लगानेका मार्ग प्रस्तुत करते हैं।

अंग्रेज—वैल भगट रामशरणदासजी ! टुम जिस श्रीरामकृष्णकी अमसे इटनी टारीफ करटा है, उन्हें परमाटमा God मानटा है उन रामकृष्णको टुमारे एक महाट्मा तो काल्पनिक मानटे थे। उन्होंने एक बार अमसे सेवाग्राममें कहा था कि रामकृष्ण कोई ऐतिहासिक पुरुष नहीं हुये काल्पनिक है और महाभारट रामायण भी काल्पनिक हैं। उपन्यासकी टरहसे लिखे गये हैं, वास्तवमें कोई हुये नहीं हैं। उन्होंने अपनी पुस्टकमें भी ऐसा लिखा है। आपके विश्व कवि रविन्द्रनाथ टैगोरने भी रामलीलाको कविकी कल्पना ही माना है फिर टुम क्यूं मानटा है ?

मैं—मि० जेम्स ! वे बैरिस्टर महात्मा तुम्हारे इंग्लैण्ड आदि देशोंमें तुम्हारे अंग्रेजों के साथ रहनेके कारण और तुम्हारी म्लेच्छ भाषा अंग्रेजी पढ़ बैरिस्टर बन जाने के कारण, तुम्हारे घरका खाना खानेके कारण, तुम्हारी जूंठी प्यालियां चाटनेके कारण, ईसाई मुसाई सबके हाथका खानेके कारण, मौहम्मदअली, शौकतअली, अब्दुल-कलाम आजाद, मिस स्लेड, आफअली आदिके हाथका खानेके कारण, भंगियोंमें पड़े रहनेके कारण उनकी

बुद्धि भ्रम हो गया था जिसके कारण वह बिना सिर पैरकी निरर्थक बातें किया करते थे। अनंतकोटि ब्रह्माण्डोंके नियन्ता, साक्षात् परब्रह्म परमात्मा, समस्त विश्वके जीवनाधार भगवान् श्रीराम कृष्णको काल्पनिक लिखना, कहना, मानना पागलपन नहीं तो क्या है ? समस्त देवी देवता जिन मेरे श्रीरामकृष्णके गुणगान करते हैं। हिन्दू मात्र जिन्हें अपना प्राण समझते हैं, समस्त वेद शास्त्र, पुराण जिन्हें परब्रह्म मानते हैं, ऋषी मुनी, ज्ञानी, ध्यानी, त्यागी तपस्वी, योगी जिनका समाधीमें ध्यान लगाते हैं, साक्षात् सृष्टि रचयिता ब्रह्मा, भगवान् शंकर, सूर्य, चन्द्र जिनकी कृपाकी अभिलाषा लगाये रखते हैं, बड़े बड़े चक्रवर्ती सम्राट जिनके लिये अपना राजपाट त्याग जंगलोंमें जा धूनी रमाते हैं, भगवान् वेद व्यास, शुकदेव, सनकसनन्दन, महर्षि श्रीनारद जिनका दिनरात गुणगान करते हैं, उन्हीं हमारे प्राणप्यारे भगवान् श्रीराम कृष्णको बैरिस्टर महात्मा काल्पनिक ठहराते हैं और फिर भी अपनेको महात्मा कहते हैं यह कैसे आश्चर्यकी बात है ? यदि हिन्दुओंके प्राण भगवान् श्रीराम कृष्णको ही हिन्दुओंसे छीन लिया गया और उन्हें काल्पनिक ठहरा दिया गया तो हिन्दुओंके पास फिर रह ही क्या गया ? हिन्दुओंका सर्वस्व हरण कर लिया गया, इस प्रकार हिन्दू धर्म ही समाप्त कर दिया गया। हिन्दुओंका प्राण, जान, मान, सम्मान सब कुछ भगवान् श्रीरामकृष्ण हो हैं, जब बैरिस्टर साहबके कहनेसे उन्हें ही काल्पनिक मान लिया गया तो उनके पास बचा क्या रह गया ? यदि शरीरमें प्राण नहीं तो साढ़े तीन मन शरीरके रहनेसे क्या लाभ ? मुर्देके रखनेसे बीमारीके अतिरिक्त क्या मिला ? भगवान् श्रीराम कृष्णको काल्पनिक ठहरानेके पश्चात् उन्होंने डंकेकी चोट हाथमें गीता रामायण लेकर गीता में भगवान् श्रीकृष्णकी लिखी—

''चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः''

इस श्रीभगवद्वाणीकी कोई परवाह न कर वर्णाश्रम धर्मका खुलकर विध्वंस किया, वर्णव्यवस्थाको खूब मटियामेट किया, ब्राह्मण कन्याको अपने लड़केसे विवाहा था और भंगीकी लड़कीको ब्राह्मणसे, और ब्राह्मणकी पारसीको विवाहा था इस प्रकार खूब वर्णसंकरताका प्रचार किया। भगवान् श्रीकृष्णने जहां अपने श्रीमुखसे कहा है—

''अविद्यो वा सविद्यो वा ब्राह्मणो मामकी तनुः''

उन्हीं पूज्य प्रातःस्मरणीय ब्राह्मणोंसे आपने खूब टट्टियां कमवाईं और उनके देव मंदिरोंमें खूब चमार भंगियोंको घुसा घुसा कर उनके हृदयोंको चोट पहुंचाई। जहां भगवान् श्रीकृष्णने नंगे पांवों गायोंको चराया उनकी प्राणप्यारी गैया मैयाको खाने वाले गोभक्षक मुसलमानोंसे ही उन्होंने प्रेम बढ़ाया और गोभक्षकोंके हाथोंका खाया पीया और प्रत्येक हिन्दू मात्र मुसलमानोंके घरका खाने पीने लगे इसीलिये उन्होंने हिन्दू मुसलिम चाय पानी एक करने वाला बिल बनवाया और अंतमें गोभक्षकोंको पाकिस्तानके रूपमें देश देनेके बाद ५५ करोड़ रुपया दिला उनके लिये अपना प्राण भी दे दिया। मेरे गोपाल कृष्ण यदि गायोंका दूध पीते थे तो आपने गायोंका दूध न पीकर बकरीका दूध पीना शुरू किया, सब काम रामकृष्णके शास्त्रके विरुद्ध करने ही जो ठहरे। भगवान् श्रीराम जहां बंदरोंको अपना प्राणप्यारा समझते थे वहां आपने हजारों बन्दर उड़ीसामें मरवाये और अब उनके चेले करोड़ों मार रहे हैं। जहां भगवान् श्रीकृष्णने गायोंको इष्टदेव पूज्य मान उनकी सेवा करनेकी आज्ञा दी वहां महात्माजीने गायोंको हलोंमें जोतने, उनसे काम लेनेकी सलाह दी। जहां श्रीकृष्णने गायोंके दूधको पीना बतलाया वहां आपने इसके बिलकुल विपरीत अपनी पुस्तक आरोग्यकी कुंजीमें दूधको मांस लिखा और अण्डेको फल लिख मारा। संस्कृत हिन्दीको समाप्त करने के लिये उन्होंने अपनी मनमानी हिन्दुस्तानी भाषा घड़ी। वेदशास्त्र जहां श्रीरामायण, गीता, पुराणोंको पवित्र जगह में बैठकर पाठ करना बताते हैं आपने इसके विरुद्ध टट्टीमें बैठकर गीताके पाठ किये और करने बताये। जहां शास्त्र बीमारकी सेवा करना बतलाता है वहां आपने गायके बीमार बछड़ेको जहरका इंजेकशन देकर मार डाला और मछली खानेका समर्थन किया। सुनो मि० जेम्स ! जिस पूज्य महाभारतको हम पंचम वेद मानते हैं और जिसे श्रद्धा से सर झुकाते हैं उसे ही महात्माजी काल्पनिक ठहराते हैं। जिस महाभारतको साक्षात् परब्रह्म भगवान् श्री आदिदेव गणेशजी महाराजने अपने हाथोंसे लिखा हो, ऐरे गैरे पचकल्याणी नत्थू खैरेने नहीं, समस्त ३३ करोड़ देवी देवताओं में सर्व प्रथम पूज्य, सबसे बड़े देवता गणेशने लिखा हो

और साक्षात् भगवान् श्री वेद व्यासजी महाराजने जिसे लिखाया हो उसे ही झूँठा, असत्य, काल्पनिक ठहराना, रूपक बताना, उपन्यासकी तरह सिद्ध करना, और गोभक्षक ईसामूसा, मोहम्मद, टालस्टाय आदि म्लेच्छोंकी मनमानी पुस्तकोंको सत्य मान पढ़ना यह मूर्खताकी पराकाष्ठा, पागलपनकी हद और सड़ियल दिमागकी दुर्गन्ध नहीं तो क्या है ? जिन पूज्य प्रातःस्मरणीय महर्षि बाल्मीकीजी महाराज के दर्शनके लिए परब्रह्म परमात्मा भगवान् श्रीरामचन्द्र, भगवान् श्रीलषनलालजी, स्वयं उनके आश्रममें गये हों और उनके श्रीचरणोंको छू उनका आशीर्वाद प्राप्त किया हो, अनन्तकोटि ब्रह्मांडनायिका जगज्जननी श्रीजनकनंदिनी श्रीजानकीजी महारानी जिनके आश्रममें बहुत काल तक रही हों और भगवान् श्रीरामके सुपुत्र भगवान् श्री लव कुश जिनके यहां रहे हों ऐसे त्रिकालज्ञ पूज्य महर्षि बाल्मीकिजी महाराजको तो भंगी बताना और उनकी बाल्मीकिरामायण को काल्पनिक मानना, उनके प्राण धन भगवान् श्रीराम लक्ष्मणको कविकी कल्पना ठहराना यह इतिहासकी सबसे प्रथम मूर्खता पूर्ण घटना है । यह गोभक्षक मुसलमान ईसाईयोंके पात्रोंमें खानेका ही महान् भयंकर दुष्परिणाम है कि जो ऐसी ऐसी खुराफाती बातें दिमागसे निकलीं। मि० जेम्स ! जब पूर्वसे उदय होने वाले भगवान् सूर्यको भी तुम्हारे देश पश्चिमकी ओर जाने पर डूब जाना पड़ता है, पश्चिमकी ओर जाने पर जब सूर्यका तेज भी नष्ट हो जाता है तो बेरिस्टर महात्माका तुम्हारे देशमें जाने पर तुम्हारा खाने पर यदि बुद्धिका दिवाला निकल गया तो क्या आश्चर्य है ? भगवान्की बनाई वर्ण-व्यवस्थाके साथ खिलवाड़ करना, भगवान्की बनाई मर्यादाओंको मेटना क्या भगवान् को चुनौती देना और भगवान्के साथ वैर मोल लेना नहीं है ? जब एक सरकारी वृक्षकी एक डाली तोड़ने पर भी जेलमें जाना पड़ता है, जुर्माना देना पड़ता है तो भगवान् की बनाई वर्णव्यवस्थाको तोड़ने वर्णाश्रमका विध्वंस करने पर कौनसा घोर नर्क भोगना होगा यह तो भगवान् ही जानें।

अंग्रेज—क्या टुमको मालूम नहीं कि जिस महाभारट को टुम कहटा है कि गणेशने बनाया है उसे टो काशी का बाबू सम्पूर्णानन्द गणेश अनार्य डेवटा है ऐसा अपनी पुस्टकमें लिखटा है ?

मैं—मुझे यह भी मालूम है और अच्छी तरहसे मालूम है कि सम्पूर्णानन्दने भगवान् श्रीगणेशको अपनी पुस्तकमें अनार्य देवता लिखकर अपने हाथोंको गन्दा बनाया है, अपने नेत्रोंको दूषित किया है और अपनी जबानको बेलगाम बनाया है। ऐसी बेसिर पैरकी बातें महात्माके चेले बाबू सम्पूर्णानन्द जैसे काले अंग्रेजके मुखसे ही निकल सकती है। किसी भी राणा, शिवा, गुरु गोविन्दसिंह के हिन्दूके मुखसे कदापि भूलसे, स्वप्नमें भी नहीं निकल सकती। जब सम्पूर्णानन्दके इस अनर्गल प्रलापको सुन और भगवान् श्रीगणेशका घोर अपमान होते देख काशीसे तथा और भी कई जगहके बड़े बड़े सनातनधर्मी विद्वान् मैदानमें आये और शास्त्रार्थका चैलेंज दिया और उनकी पुस्तकका खंडन लिख कर देना प्रारम्भ किया तो बाबू साहब के छक्के छूट गये। सनातनधर्मी विद्वान् ब्राह्मणके सामने कोई माईका लाल नहीं कि जो मैदानमें डट सके । आज भी सनातनधर्मी जगत्की तरफसे हमारा खुला चैलेंज है कि यदि किसीकी माने धोखा खाया हो, दूध पिलाया हो तो वह मैदानमें आये और मेरे गणेश भगवान्को जरा अनार्य सिद्ध करके दिखाये । दस लाख उल्लुओंके और करोड़ों चमगीदड़ोंके यह प्रस्ताव पास करनेसे कि सूर्य कोई नहीं होता, होता तो हमें दीखता, इसलिये झूंठ है, क्या कहीं सूर्य चला जाता है ? क्या कोई उल्लू चमगादड़ोंकी बातको महत्त्व देता है ? क्या कोई उन्हें सत्यवादी हरिश्चन्द्र मानता है ? नहीं मानता कदापि नहीं मानता। इसी प्रकार भगवान् श्रीरामकृष्ण काल्पनिक हैं, श्रीरामायण, महाभारत काल्पनिक हैं, श्रीगणेश भगवान् अनार्य हैं आदि जो जी में आया लिखना, बकना, मानना कोई महत्त्व नहीं रखता।

अंग्रेज – अमे टुमारी बाटोंसे बहुट आनंड आया अम टुमको मानटा है।

मैं—अच्छा साहब अब बाकी बातें दो पहरके पश्चात् होंगी, कारण कि हमें शंकर पूजनके निमित्त मंदिर पर जाना है और आकर श्रीठाकुरजी महाराजको भोग लगाना है, अब हमारे पास समय नहीं ।

अंग्रेज—अम दो पहर बाद मिलेगा अब जाटा है। टुमने अमे अपना कीमटी टाइम दिया धन्यवाद देता है।

पंचगौड़सम्मेलन

[म० म० श्री पं० छज्जूरामजी शास्त्री विद्यासागर]
(संस्थापक अ० भा० संस्कृतप्रचारकमण्डल)

धर्म रक्षाके लिये वर्णधर्मकी रक्षा करना अत्यावश्यक है—

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयोवर्णा द्विजातयः।
चतुर्थ एकजातिस्तु शूद्रो नास्ति तु पञ्चमः॥

इस उपर्युक्त मनुस्मृतिके वचनानुसार चार ही वर्ण हैं। 'तेषु पूर्वः पूर्वो जन्मतः श्रेयान्' इस वेद वाक्यके अनुसार ब्राह्मणवर्ण चारोंमें श्रेष्ठ है। वह श्रेष्ठता भी जन्मसे है न कि केवल कर्मसे 'ब्राह्मोऽजातौ' इस पाणिनि सूत्रके अनुसार जन्मसे जाति मानने पर ही 'ब्राह्मणशब्द' सिद्ध होता है अन्यथा 'ब्राह्म' बनेगा। इस सूत्रका भाष्य करते हुए पतञ्जलिने भी तपः श्रुत हीन ब्राह्मणको 'जाति ब्राह्मण' माना है। श्रेष्ठ ब्राह्मण वही है जो जातिसे ब्राह्मण है। तपस्वी और विद्वान् हो। यही विशेषता अन्यत्र लिखी है।

'जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्कारैर्द्विज उच्यते।
विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभिः श्रोत्रिय एवच॥
अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहं चैव ब्राह्मणानामकल्पयत्॥'

इस मनु पद्यमें उपर्युक्त ६ कर्म ब्राह्मणोंके लिये नियत हैं। भगवद्गीतामें शम दम तप शौच आदि ब्राह्मणके स्वाभाविक कर्म माने हैं, आज सम्पूर्ण भारतीय ब्राह्मण सौमेंसे अस्सी कृषिकर्म करते हैं, पराशर और हारीत स्मृतिमें-ब्राह्मणोंके लिये कृषिकर्म भी करना श्रेष्ठ माना है, निन्द्य नहीं। वेदमें भी—'अक्षैर्मादीव्यः कृषिमित्कृषस्व' कह कर कृषिकर्मकी प्रशंसा की है। इन सब शास्त्रोंमें ब्राह्मणोंके कर्म तो बताये हैं परन्तु कहीं भी ब्राह्मण, द्विज, विप्र और श्रोत्रिय, इन भेदोंके अतिरिक्त—

'सारस्वताः कान्यकुब्जा गौड़ा उत्कल मैथिलाः॥
पञ्चगौड़ाः समाख्याता विन्ध्यस्योत्तरवासिनः॥'

ये भेद नहीं मिलते। ये सब भेद ब्राह्मणोंके तत्तद् देशोंमें निवास करनेके कारण हुए हैं, शास्त्रीय नहीं हैं—

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ। और
यःशास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परांगतिम्॥

इस भगवत् निर्णयके अनुसार ब्राह्मण जातिको संगठित होकर सब प्रकारका कल्याण प्राप्त करना चाहिये। अब पृथक् पृथक् खिचड़ी पकानेका समय नहीं है, 'आठ पूर्विया नौ चुल्हे' घृणित व्यवहार है। 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्' यजुर्वेदके इस मन्त्रके अनुसार हम ब्राह्मण जगदगुरु हैं, जब हम ही संगठित नहीं तो औरोंको क्या कहेंगे। भगवान् मनुने—

कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पाञ्चालाः सूरसेनकाः।
एष ब्रह्मर्षि देशो वै ब्रह्मावर्तादनन्तरः॥

इन चार विभागोंमें 'ब्रह्मर्षि देश' को विभक्त किया है। इसी ब्रह्मर्षि देशमें सब ऋषि मुनि विद्वान् ब्राह्मण जन्मे हैं और निवास करते आए हैं। इन्हींसे विश्वके समस्त मानव अपना अपना कर्तव्य सीखते रहे हैं। अब हम तपोविद्या-विशिष्ट, निग्रहानुग्रह समर्थ, अर्थात् शाप और वर देनेवाले ब्राह्मण नहीं हैं, केवल नाम मात्रके ब्राह्मण हैं। 'संघे शक्तिः कलौयुगे' इस कलियुगीय धर्मानुसार हम सबको रोटी बेटीमें सम्मिलित होना चाहिये। महर्षि पतञ्जलिने महाभाष्यमें लिखा है—

ब्राह्मणा ब्राह्मणैः सह भुञ्यन्ते क्षत्रियाः क्षत्रियैः।

यहां किसी भी देश विशेषका नाम नहीं है। बहुत सी ऐसी अशास्त्रीय एवं दैशिक कुप्रथाएँ चली हुई हैं जो संगठन होनेसे स्वयं दूर हो सकती हैं। मिथिला देशमें पहले बहु-विवाह प्रथा थी, अब वह नहीं रही। कान्यकुब्जोंमें असहभोज, पंजाबियोंमें अभक्ष्याभक्ष, मथुरावालोंमें विवाहमें सांटा, परन्तु अब वे प्रथाएं नष्ट होती जा रही हैं, यह सब परस्पर सम्पर्कका फल है। असमान गोत्रमें कन्याका विवाह करना शास्त्रीय है, चाहे वह सारस्वत ब्राह्मण है—

भाग्यफल

लेखक— श्री पं० नेमिचन्द्रजी शास्त्री ज्योतिषाचार्य

पौष मासमें जन्मे व्यक्तियोंका फलादेश

इस मासमें उत्पन्न हुए व्यक्ति आशावादी, दार्शनिक और प्रभावशाली होते हैं। ये स्वतन्त्रताके उपासक तथा अपने विचारोंको स्पष्ट व्यक्त करने वाले होते हैं। कभी-कभी आवेशमें आकर अनुचित काम भी कर डालते हैं, जिसका इन्हें पीछे पछतावा रहता है। धर्म और राजनीतिके ये जानकार होते हैं, वाद विवाद करनेमें इनकी प्रतियोगिता दूसरे व्यक्ति सरलतासे नहीं कर सकते। ये तार्किक और गणितज्ञ होते हैं, विचार इनके स्थिर नहीं होते और समय तथा परिस्थितिके कारण अपने विचारोंको एकाएक बदल डालते हैं। इनकी अनुभूति अत्यन्त गहरी होती है, ज्ञान का संचय और वितरण सुगमतासे कर सकते हैं उदारता और दिखावा इन्हें अधिक पसन्द होता है, अनेक विषयोंसे सम्बन्ध रखते हुए भी किसी एक विषयके ये पूर्ण पंडित होते हैं तथा उस अभीष्ट विषयकी ओर इनकी अभिरुचि सदा बनी रहती है।

ये परिश्रम अधिक करने वाले होते हैं, इनका बचपन विशेष अच्छा नहीं होता। पिताका सुख कम मिलता है तथा पैतृक सम्पत्ति भी अधिक नहीं मिलती। इन्हें शान्ति अधिक प्रिय होती है, और प्रत्येक कार्यको सुव्यवस्थित ढंग से सम्पन्न करना अभीष्ट होता है, दूसरों पर अनुशासनका कार्य भी ये अच्छी तरह कर सकते हैं। इनका स्वभाव साधारणत: मिलनसार होता है। इनमें एक विशेषता यह होती है कि अस्थिरताके कारण ये अपने ध्येयको सदा बदला करते हैं। यदि ये अपने ध्येयको निश्चित कर लें और उसके ऊपर सारी शक्ति लगाकर चलें तो इन्हें आशातीत सफलता मिलती है, तथा जनताके सम्माननीय हो सकते हैं। अपनी योग्यताका प्रदर्शन ये कानून, धर्म, गणित, इतिहास, ज्योतिष, लोक-व्यवहार और नीति द्वारा कर सकते हैं।

पौष मासमें जन्मे व्यक्ति शिक्षक, अकाउण्टेण्ट, लाइब्रेरियन, मैनेजर, क्लर्क, इंजीनियर, शिल्पकार, सुनार, लेखक, वक्ता, वकील, जज, सेनापति, वैज्ञानिक, घोड़ोंके व्यापारी, वस्त्रके व्यापारी, रबरकी वस्तुओंके व्यापारी, एवं रेशमके व्यापारी होते हैं। प्राय: इस मासमें जन्मे व्यक्ति धर्म, दर्शन और उपदेशके द्वारा भी आजीविका कमाते हैं। सबसे अधिक सफलता इस मासके जन्मे व्यक्तियोंको वस्त्र-व्यवसायमें मिलती है, सिल्कके व्यापारमें इन्हें अपरिमित लाभ होता है, घोड़ोंके व्यापारसे भी इन्हें धनागम होता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियोंको किसी कामके प्रबन्धमें अधिक सफलता मिलती है और ये व्यक्ति अपने विवेक और चतुराई द्वारा सफल प्रबन्धक होते हैं। जिस कार्यको अपने हाथमें लेते हैं उसे पूरा करके छोड़ते हैं। किसी खान या मिलमें नौकरी करने पर इस मासवाले अधिक लाभ उठाते हैं और धनसंचय भी इन्हीं कार्योंसे कर सकते हैं। इस मासवाले व्यक्ति उत्कोच (घूस) लेनेमें संकोच (परहेज)

अथवा कान्यकुब्ज, गौड़, उत्कल और मैथिल हो। वर योग्य हो कन्या सुलक्षणा हो। हम यहां तक संकुचित होते जा रहे हैं कि कुछ दिनोंमें शैवोंका शैवोंसे और वैष्णवोंका वैष्णवोंसे रोटी बेटी संबन्ध होने लगेगा। इन सब कारणोंसे हमारा दिनों दिन पतन होता जा रहा है। संगठनसे उसको रोकना चाहिए। अ० भा० संस्कृत प्रचारक मण्डलकी ओरसे एक महान् 'पञ्चगौड़-सम्मेलन' शीघ्र ही होने वाला है। पञ्चगौड़ विद्वानोंसे प्रार्थना है कि वे शीघ्रातिशीघ्र इस विषयमें अपने अनुमति एवं आनेकी स्वीकृतिका पत्र देनेका कष्ट करें जिससे मण्डलके कार्यकर्ताओंका उत्साह बढ़े। इस सम्मेलनमें पञ्चगौड़ोंकी संस्कृति भी एक ही हो यह भी पूर्ण प्रयत्न किया जावेगा। अनुमति एवं स्वीकृति पत्र निम्न पते पर भेजें। पं० छज्जूराम विद्यासागर, बगीचीमाधोदास लालकिला, देहली।

——

नहीं करते। तथा इधर उधरसे भी पैसा खींचा करते हैं, और धन संचय करनेमें प्रायः ये असफल होते हैं।

जिन व्यक्तियोंका जन्म शुक्ल पक्षमें होता है वे व्यक्ति धनी होते हैं, कृष्णपक्षमें जन्मे व्यक्तियोंके पास धन कम रहता है तथा सदा आय-व्ययका ब्यौरा बराबर रहता है। इनके चरित्रमें शिथिलता होती है, तथा संगतिके कारण ये बिगड़ जाते हैं, कभी-कभी अच्छा निमित्त मिलनेसे ये उन्नतिशील भी हो जाते हैं और इनका मानसिक विकास भी अच्छा हो जाता है। जिन व्यक्तियोंका जन्म कृष्णपक्षमें १, २, ३, ४, ५, ७, ८, १०, ११, १२, १४ और ३० को होता है वे व्यक्ति प्रायः मध्यम परिस्थितिके होते हैं और इनका जीवन सुखमय बीतता है। पौष मासमें इतवारको २१ घटी १७ पल इष्टकाल पर जन्म लेने वाले व्यक्ति भाग्यशाली होते हैं और सहकारी निमित्तोंके मिलने पर बहुत बड़े व्यक्ति हो सकते हैं। इसी दिन जिनका जन्म ३३ घटी ४० पल इष्टकाल पर होता है वे प्रायः प्रमादी और जुआरी होते हैं। पराधीन रहकर अपनी आजीविका उत्पन्न करते हैं तथा स्त्री-बच्चे आदि भी इनके स्वभाव और दुर्गुणोंसे तंग (परेशान) हो जाते हैं और अन्ततोगत्वा इनका जीवन भाररूप हो जाता है। सोमवारको ६ घटी १६ पल इष्टकाल पर जिन व्यक्तियोंका जन्म होता है वे सिल्कके व्यापारमें खूब धन कमा सकते हैं, ऊन और पटुआ के व्यापारमें भी उन्नति करते हैं।

सोमवारको २४ घटी ३६ पल इष्टकालके आसपास जन्म लेने वाले व्यक्ति प्रोफेसर और सैन्य संचालनमें निपुणता प्राप्त कर लेते हैं। इस समयमें जन्मे व्यक्तिका यश अन्तःराष्ट्रीय होता है तथा सम्मान इन्हें सब जगह से मिलता है। स्वभाव इनका नम्र और विनयी होता है, जहां रहते हैं वहीं इन्हें आदर और सम्मान मिलता है। ये मन्त्र-तन्त्र आदिके भी अच्छे जानकार होते हैं। लोकोपयोगी अनेक विद्याओंके ज्ञाता होते हैं, तथा अपने अदम्य उत्साह द्वारा समाजमें एक नया सुधार उपस्थित करते हैं, पहले-पहल हलका विरोध होता है परन्तु अन्तमें इन्हींकी विजय होती है। इस मासके मंगलवारको रातमें जन्म ग्रहण करने वाले व्यक्ति अत्यन्त धूर्त्त और चतुर होते हैं। ये व्यापार में इतने निपुण होते हैं कि बिना पूंजीके अच्छा रोजगार कर लेते हैं तथा थोड़े ही दिनोंमें अच्छा पैसा पैदा करते हैं। इसी दिन जिनका जन्म मध्यान्हमें होता है वे बड़े अच्छे तार्किक होते हैं, इनकी प्रतिभा विलक्षण होती है। तथा इनके द्वारा साहित्यका सृजन होता है, कवि भी ये हो सकते हैं तथा मानव मनकी कोमल एवं सूक्ष्म भावनाओं का निरूपण भी करते हैं, बुधवारकी रातमें जिनका जन्म होता है वे चालाक और कामुक होते हैं, इनका चरित्र भी दूषित होता है। ईमानदारी भी इनमें नहीं होती।

पौषके उत्तरार्द्धमें जन्म लेने वाले व्यक्ति मिलनसार और शिक्षित होते हैं। प्रायः इस मासमें जन्मे व्यक्ति एकान्त प्रिय होते हैं, इनका व्यक्तित्व विशाल होता है और ये अपने जीवनमें बड़े बड़े काम करते हैं। इनके विचार बड़े ही दृढ़ होते हैं, धार्मिकता इनके जीवनमें अवश्य रहती है। दीन और दरिद्रोंके प्रति इनके हृदयमें बड़ी भारी सहानुभूति होती है। प्रायः ये शांत गम्भीर होते हैं, इन्हें देख सहसा इनके विचलित होनेका कोई अनुमान नहीं कर सकता। विचारोंको दबा कर ऐसा रखते हैं कि औरोंको उसका वास्तविक पता चलना दुष्कर हो जाता है, इन लोगों को या तो पूर्ण सफलता मिलती या पूर्ण विफलता। कार्य-पटु होनेके कारण प्रायः सफलता अधिक मिलती है, इनमें साहस अधिक नहीं होता।

यदि कदाचित् साहस कर बैठें तो बड़े-बड़े कार्योंको विघ्न-बाधाओंके आने पर कर ही डालते हैं। प्रायः जब तक ये जीवित रहते हैं इनके कार्योंका जनता अभिनन्दन नहीं करती। मृत्युके पश्चात् इनके कार्य-कलाप बड़े आदरसे देखे जाते हैं। इस मासमें जन्मे व्यक्तियोंका स्वभाव एक सा नहीं होता। कुछ लोग क्रान्तिकारी, विप्लवी और स्वेच्छाचारी होते हैं तथा कुछ जीवनमें संयत, शांत और व्यवस्थित कार्य करनेवाले होते हैं।

विवाह और मित्रता—पौष मासमें जन्मे व्यक्तियों का विवाह प्रायः युवा अवस्थामें होता है। इन्हें पत्नियाँ अच्छी मिलती हैं। विवाहके वर्ष १७, १९, २०, २१, २२, २४, २७, २९, ३०, ३१ और ३६ माने गये हैं। प्रायः इस मासवाले व्यक्तियोंके दो विवाह भी होते हैं, इनमें वासना इतनी तीव्र रहती है कि ये उसे सरलतासे नहीं दबा पाते, फलतः इनका इधर-उधर अनुचित सम्बन्ध भी देखा

जाता है। प्रायः ये मुंहफट होते हैं अपने हृदयकी सारी बातें कह डालते हैं। जिनका जन्म इस मासमें १, ४, ७, ८, १०, ११, १२, १४ और १५ को होता वे प्रायः अधिक कामुक और प्रेमी होते हैं, इनका स्वभाव अधिक प्रेमिल होता है तथा प्रेमके कारण ये अनुचित कार्य भी कर डालते हैं। जिन लोगोंका जन्म ६ और १० का होता है उनके निश्चित तीन विवाह, या एक विवाह और दो उपपत्नियां होती हैं।

मित्रताकी दृष्टिसे विचार करने पर अवगत होता है कि इस मास वालोंकी मित्र-संख्या साधारण होती है। सच्चे और हितैषी मित्र प्रायः इन्हें नहीं मिलते। मनोरंजनके लिए इनके मित्र सदा इन्हें घेरे रहते हैं। शत्रुओंकी संख्या भी अधिक होती है। इनका स्वभाव जिद्दी होनेके कारण प्रायः सर्वत्र शत्रुओंका वातावरण रहता है।

अच्छा और बुरा समय—इस मासमें जन्मे व्यक्तियोंका जीवन साधारणतः सुखमय बीतता है। ३१ वर्ष की आयुसे लेकर ४२ वर्षकी आयु तक इनका समय बड़ा महत्वपूर्ण होता है। इनके जीवनके १७, ३५, ४४ और ६२ वें वर्षोंमें विशेष परिवर्तन होता है तथा इन वर्षोंका सदुपयोग होनेसे आगेका जीवन सुखी होता है। विशेष रूप से विचार करने पर २४, ३४, ३८, ३९, ४२, ४४, ४६, ४७, ४८, ५०, ५१, ५३, ५७, ५६, ६२, ६५, ६७ और ७२ वें वर्ष विशेष अच्छे होते हैं, इन वर्षोंमें व्यक्तिकी उन्नति अधिक होती है तथा वह यश और सम्मान खूब प्राप्त करता है। १६, १८, २२, २३, ३६, ४१, ४३, ५२, ६१, ७१ और ७७ वें वर्ष हानिकारक होते हैं। इन वर्षोंमें आर्थिक क्षति तथा कौटुम्बिक कष्ट होते हैं।

जिन व्यक्तियोंका जन्म पौष बदी १२ को होता है, उनका जीवन प्रारम्भसे १६ वर्षकी अवस्था तक अन्यके आश्रित रहता है तथा २४ वर्षकी आयुसे इनका भाग्योदय होता है। कृष्ण पक्षकी ३, ६, ८, ९, १० और ११ को जन्म लेने वाले व्यक्तियोंका अन्तिम जीवन सुखमय होता है तथा मध्य में कुछ कष्ट होता है। जिनका जन्म शुक्लपक्षमें ४, ५, ११, १२ और १४ को होता है। उनके लिए ४२ से ४५ वर्ष तकका समय विशेष सावधान रहनेका है।

घातक वर्ष—जिन व्यक्तियोंका जन्म पौष मासमें होता है, उन्हें ५, ६ वर्षकी आयु तक शारीरिक कष्ट रहता है। जन्म से १२, १७, २७, ३२, ४५, ४८, ५७, ५८, ६४, ६७, ७० और ७४ वें वर्ष अकालमृत्यु दायक होते हैं। ४४ वर्षकी आयुमें ही इनके स्वास्थ्यमें कुछ परिवर्तन नजर आते हैं तथा इस वर्षसे इनका स्वास्थ्य गिरना आरम्भ होता है। यदि इस वर्षको व्यक्ति सावधानीपूर्वक व्यतीत करदे तो फिर उसका स्वास्थ्य प्रायः जीवन भरके लिये अच्छा रहता है।

सन्तान-सुख—इस मासमें जन्मे व्यक्तियोंको सन्तान सुख साधारण होता है। जिनका जन्म शुक्लपक्षमें होता है उन्हें सन्तान सुख अधिक होता है। और जिनका जन्म कृष्णपक्षमें होता है उन्हें सन्तान कम होती है। कृष्णपक्षकी १, २, ४, ५, ६, १०, १२, १४ और ३० को जन्म लेने वाले व्यक्तियोंको अल्प संतान या ३ पुत्र और १ कन्या तथा इन्हीं तिथियोंमें सन्ध्या समय जन्म लेने वाले व्यक्तियोंको संतानाभाव होता है।

शुक्लपक्षकी ५, ७, १० और १४ तिथियोंको जन्म लेनेवाले व्यक्तियोंके ४ संतानें होती हैं।

गुरुवार, मंगलवार, सोमवार और शनिवारको जन्मे व्यक्तियोंको अच्छा संतान सुख एवं रविवार, शुक्रवार और बुधवारकी रातमें जन्म लेने वालोंको अल्प संतान सुख एवं इन्हीं दिनोंमें दिनमें जन्म लेनेवालोंको अच्छा संतान-सुख होता है।

अनुकूल समय—इस मासमें जन्मे व्यक्तियोंको अगहन (मार्गशीर्ष), माघ, श्रावण, और चैत्र मास अच्छे होते हैं। तिथियोंमें १, ३, ८, १३ और १५ अच्छी होती हैं। प्रत्येक पक्षकी ४ और ६ अनिष्टकारक एवं अवशेष तिथियां मध्यम होती हैं। वारोंमें बृहस्पतिवार विशेष अच्छा, रविवार हानिकारक और अवशेष साधारण होते हैं। जन्मसे २७वाँ वर्ष विशेष उन्नतिका होता है। इनकी आयुमें ३१ से ३९ वर्ष तक समय उन्नतिके लिये स्वर्णावसर बताया गया है।

आर्थिक स्थिति—इस मासमें जन्मे व्यक्तियोंको २४ वर्षकी आयुमें आय होती है। प्रारम्भमें इन्हें आर्थिक संकट रहता है। २४, २८, ३२, ३३, ४०, ४५, ४८,

५४ और ६२वें वर्षोंमें अधिक आय होती है। प्रारम्भके १६ वर्ष साधारण आर्थिक कष्टमय २३, २५, ३०, ४३, ४६, ५८, ६५, ६७ और ७०वें वर्ष आर्थिक संकटके हैं। साधारणतः इस मासके जन्मे व्यक्ति नौकरी पेशा करते हैं। व्यापारी कम होते हैं।

पौष मासमें जन्मी नारियोंका फलादेश

इस मासमें जन्मी नारियां अत्यन्त स्नेहशील, और दयामयी होती हैं। इनका स्वभाव मिलनसार और निराभिमानी होता है। व्यवस्था करनेमें बड़ी निपुण होती हैं। किसी भी कार्यको सुव्यवस्थित ढंगसे सम्पन्न करना इन्हें अच्छा आता है। इनके प्रेमिल स्वभावके कारण घरके लोग तो प्रसन्न रहते हैं पर अन्य पड़ोसी इत्यादि भी प्रसन्न रहते हैं। इनमें कार्य करनेकी बड़ी भारी क्षमता होती है और दिन-रात परिश्रम करती रहती हैं। लेखिका, नर्स और प्रबन्धकका कार्य बहुत अच्छी तरहसे कर सकती हैं।

इस मासमें जन्म लेनेवाली नारियोंको संतान अधिक उत्पन्न होती है। इनका विवाह प्रायः शिक्षित व्यक्तियोंके साथ होता है। दाम्पत्य-जीवन अत्यन्त सुखमय रहता है। जिनका जन्म १, २, ४, ८, १० और १४ तिथियोंको होता है वे नारियां बड़ी भाग्यशाली होती हैं तथा इनके कारण पतिकी उन्नति होती है। ११, १२ और १३ तिथियोंमें जन्म लेने वाली नारियां स्वतन्त्र प्रकृतिकी होती हैं, वे स्वयं आजीविका उत्पन्न कर सकती हैं। १७ वर्षकी आयुसे लेकर २१ वर्षकी आयुके बीचमें इन्हें स्त्रियोचित रोग होते हैं, जो देवियां खटाई मिर्च आदि तीक्ष्ण हानिकारक पदार्थोंका सेवन करती हैं उनका स्वास्थ्य इस आयुमें अवश्य बिगड़ जाता है इसलिए इस अवस्थामें सावधान रहना चाहिये। इन्हें संतान १६ वर्षकी आयुसे लेकर २१ वर्षकी आयुके बीचमें हो जाती है।

इस मासमें जन्मी नारियोंको ३६ वर्षकी आयुमें आर्थिक कष्ट होता है। इस समय अशुभ ग्रहोंके अनिष्ट प्रभावके कारण अर्थ जन्य कष्ट उठाना पड़ता है। आषाढ़, कार्त्तिक, फाल्गुन, पौष और चैत्र मासमें जन्मे व्यक्तियोंके साथ विवाह होनेमें सुखी होती हैं। जन्मसे ५, ८, १७, १६, २१, २४, २६, २६, ३२, ३६, ४५, ४८, ५४ और ६१वें वर्षोंमें रोग जन्य कष्ट होता है। अल्पायु कारक १७, २१ और ३६वें वर्ष बतलाये गये हैं।

याञ्चा

[आचार्य श्री पं० रमानन्द सारस्वत शास्त्री]

क्या मुझको वरदान न दोगे ???
हे मेरे चिर-सहचर ! मुझको-
अपने-पनका मान न दोगे ??
क्या मुझको वरदान न दोगे ???

मैंने कितनी आशा पाली,
पात्र भरा, फिर भी क्यों खाली।
रहा अभी तक, इस संशय का—
क्या मुझको अवसान न दोगे ??
क्या मुझको वरदान न दोगे ???

कितने युग-युगसे कहता हूँ !
जाने कहां बहा करता हूँ !!
मीठी चाह भरे सपनोंमें—
क्या मुझको प्रतिदान न दोगे ??
क्या मुझको वरदान न दोगे ???

सागर तट तक घूम चुका हूँ !
नद निर्झर सब चूम चुका हूँ !!
चिर अतृप्तिमय मृग-तृष्णाका—
क्या मुझको अनुपान न दोगे ??
क्या मुझको बरदान न दोगे ???

अब भी क्या, कुछ शेष रहा है ?
बोलो, क्या अवशेष रहा है ?
जिसे सौंपकर तुम से कह दूं—
आराधन, अभिमान न दोगे ???

हे मेरे चिर-सहचर ! प्रियवर !!
अपने-पनका मान न दोगे ?
क्या मुझको वरदान न दोगे ??



अनुभूत योग माला

[ले०—राजगुरु ज्योतिषालंकार श्री पं० तारादत्तजी राजज्यौतिषी]

(गताङ्कसे आगे)

जिस प्रकार लग्नेश—अष्टमेशसे आयुर्योगोंकी उपपत्ति होती है। उसी प्रकार शनि-चन्द्रमा, लग्न-चन्द्रमा और लग्न-होरा लग्नसे भी आयुर्योगोंकी उपपत्ति होती है।

पितृकालतश्च पितृलाभगे चन्द्रे चन्द्रमन्दाभ्याम् एवं मन्दचन्द्राभ्याम्। (जैमिनि सूत्र)

उपपत्ति—अष्टम स्थान आयुः स्थान है। शनि अष्टम स्थानका कारक है।

द्युमणिरमरमन्त्री भूसुतः सोमसौम्यौ
गुरुरिनतनयारौ भार्गवो भानुपुत्रः। (जा०पा०)

इस प्रकार आयुर्योग कारक सिद्ध होता है। चन्द्रमा आधान-लग्न है।

आधानेन्दु समं जनि लग्नम्। (संकेतनिधि)

इसलिए वह लग्नेश ग्रहके समान है।

अतएव लग्नेशके प्रतिनिधि चन्द्रमासे और अष्टमेशके प्रतिनिधि शनिसे भी आयुर्योगोंका विचार किया जाता है।

हृदय कमलके एक पत्रमें पञ्चतत्वोंका संचार समाप्त होनेमें नौ सौ श्वास होते हैं।

नागैर्नीचैर्निधिद्विश्रयनशुक मितैः श्वास पर्यायकैर्वा-
तोऽनलोऽम्बुक्षितिरपृथगुपर्यप्यथाधोऽप्यृजुत्वे।
व्यत्यासाचावनीतो हृदयकमलके पत्र एकत्र तेंन
श्वासा नानाधि ९०० संख्याननरसकमलेऽर्हनिशोस्ति
भ्रमोऽत्र॥ (समरसार)

(क) लग्नेशादष्टमेशाच्च योग एकः स्मृतो द्विज। होरालग्नाभ्यां द्वितीयं योगमेवं विचिन्तयेत्। तृतीयः शनि चन्द्राभ्यां चिन्तनीयः सदा द्विज। लग्नेन्दुर्मदने वापि चिन्तयेल्लग्न चन्द्रतः। (पाराशरी होरा)

एक होरामें नौ सौ श्वास होते हैं। इसलिए एक होरामें हृदय कमलमें पञ्चतत्वोंका संचार समाप्त होता है।

शरीरमें पञ्च तत्वोंका संचार समाप्त होने पर आयुः समाप्त होती है। इसलिए होरा लग्नसे आयुका विशेष संबन्ध प्रतीत होता है। अतएव लग्न-होरालग्नसे भी आयुर्योगोंका विचार किया गया है। जिस प्रकार लग्नेश और अष्टमेशसे आयुर्योगोंका विचार किया जाता है, उसी प्रकार वह लग्न और अष्टमसे भी योग्य है। परन्तु अष्टम स्थानके नाश स्थान होनेसे अष्टमस्थ राशि आयुर्योग करनेमें असमर्थ होती है। इसलिए अष्टमके स्थानमें अष्टमका कारक शनिग्रह लिया गया है।

लग्न राशि रूप है, शनि ग्रह रूप है। इसलिए शनिके साथ लग्नका प्रतिनिधि चन्द्रमा ग्रह लिया गया है।

जिस राशिका उदय होता है उसे लग्न कहते हैं।

यत्र लग्नमपमण्डलं कुजे तद् गृहाद्यमिह-
लग्नमुच्यते। (सिद्धान्तशिरोमणि)

उदय-कालमें अति तेजस्वी सूर्यकी शक्तियोंमें भी मृदुत्व होता है। इसलिए लग्नकी शक्तियोंमें अति मृदुत्व प्रतीत होता है। अतिमृदुत्वके कारण वे अतिशीता लग्नस्थ चन्द्रमाकी शक्तियोंसे विफला हो जाती है। सप्तमस्थ चन्द्रमा भी संमुखत्वसे शीत-प्रदान करता है। अतएव लग्न वा सप्तममें चन्द्रमाके होने पर लग्न क्रूर आयुका अधिष्ठाता सिद्ध होता है। शनि भी क्रूर आयुका अधिष्ठाता है। इस प्रकार चन्द्र युक्त और चन्द्र संमुखस्थ लग्नका शनि सादृश्य सिद्ध होता है। इसलिए यदि चन्द्रमा लग्न वा सप्तममें होता है तो योग और पूर्ण दृष्टिसे लग्नके साथ संबन्धके प्राबल्यसे ग्रहत्वसे स-जातीय शनिको छोड़कर राशिरूप शनि सदृश लग्न ही को आयुर्योग करनेमें अपने साथ स्वीकार कर लेता है।

होरालग्न राशि रूप है लग्न भी राशि रूप है। इसलिए होरालग्नके साथ लग्न लिया गया है।

इस लेखके साररूप स्वनिर्मित श्लोक—

लग्न प्रतिनिधिश्चन्द्रो—
मन्दोऽष्टम प्रतिनिधिर्यस्मात्॥
एवं मन्दचन्द्राभ्या—

प्राकृतिक स्वास्थ्य साधना—

अनेक रोगोंका सरल उपचार

[लेखक—श्री डा० हरिकृष्णदास डी० गांधी एम. ए. आयुर्वेदभिषग्वर]

"आहारका स्थान रोग-निवारणकी दृष्टिसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है"—इस सूत्रका स्वीकार आज सभी चिकित्सा-पद्धतियां कर चुकी हैं। प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतिमें तो आहारका उपयोग ही औषधिके रूपमें होता है। 'स्वास्थ्य सुधारके लिए आहारका सुधार किया जाये'—इस सिद्धान्त-पर ही प्राकृतिक चिकित्सा-विज्ञानका विकास हुआ है। यदि मानव आहार विषयक भूलें करता रहेगा, तो वह कभी भी रोग-मुक्त हो नहीं सकता। रोगोत्पत्तिके दो कारण प्रमुख हैं:—(१) शरीरमें आहारके उपयुक्त तत्वों-प्रोटीन्स, जीवन-तत्त्व, क्षार आदिका अभाव। (२) अनुचित आहारसे शरीरमें वृद्धिं-गत विष। प्राकृतिक चिकित्सक पहले रोगके कारणको दूर कर सुयोजित आहार द्वारा शरीरकी क्षतिपूर्ति करता है। अनुपयुक्त आहारके विषको वह शास्त्रीय उपवास द्वारा दूर कर शरीरको विशुद्ध निरोगी बनाता है। सुयोग्य प्राकृतिक चिकित्सक औषधिकी एक बूंदका भी उपयोग नहीं करता। वह केवल आहारमें समुचित परिवर्तन कर रोगीको आरोग्य-सम्पन्न बना देता है। प्राकृतिकचिकित्सामें आहार आरोग्यकी कुंजी है।

(१) शिर पीड़ा

शिर-पीड़ा कोई स्वतन्त्र रोग नहीं है। किडनी (गुर्दे) या विषाक्त रक्तके प्रभाव या सिफलिस (मूत्रदोष) के कारण मस्तिष्क विकृत हो जाता है; फलतः शिर-पीड़ा होने लगती है। स्त्रियोंको कभी-कभी ऋतुकालमें शिर-पीड़ा होती है।

शिर-पीड़ाके कारण

(१) अति थकावट या अति श्रम।
(२) कब्जियत।
(३) मानसिक बोझ।
(४) मानसिक आघात-प्रत्याघात।
(५) शुद्ध वायुका अभाव।
(६) नेत्र-विकार।
(७) आमाशय या यकृत्का विकार।
(८) अनुचित खान-पान और रहन-सहन।

एक मात्र उपाय

डाक्टरोंके पास केवल शिर-दर्दके चिन्हको दूर करने और ज्ञानतन्तुओंको निःस्पन्द कर देनेका उपाय है। बाजारमें बिकनेवाली पीड़ाशामक बाम, एस्प्रीन, केफीन आदि औष-धियां शिर-पीड़ासे मुक्ति प्रदान करती हैं, परन्तु इन औष-धियोंसे ज्ञानतन्तु, हृदय और शरीरके सजीव अवयव क्षतिग्रस्त होते हैं। शिर-पीड़ासे छुटकारेका एक ही उपाय है और वह है रोगके वास्तविक कारणको खोज निकालना चाहिए तथा उसे दूर करनेके लिए कटिबद्ध होना चाहिए। शिरमें कठिन पीड़ा होते समय उपवास करना चाहिए और खट्टे नींबूका पानी स्वेच्छापूर्वक पीना चाहिए। उपवास न किया जा सके, तो दूध, फल, छाछ आदि सादा भोजन करना वाञ्छनीय होगा। आहारमें प्रत्यम्ल पदार्थ विशेष रूपसे हों। एनिमा द्वारा आंतोंकी शुद्धि करते रहें। हरड़, त्रिफला, इसबगोलमेंसे किसी एककी आधा तोला फंकी रातमें सोते समय लेनी चाहिए। शिर-पीड़ाकी उग्रावस्थाके समय बिस्तरे पर पर्याप्त आराम लेना चाहिए। उत्तेजक स्नान भी उचित होगा। प्रथम गरम जलसे स्नान किया जाय, तदुप-

---

मित्याहु निर्णयं तस्मात् ॥१॥
तत्त्व संचार समाप्ति—
होरान्ते हृदब्ज पत्र एकस्मिन् ॥
यस्मात् तस्मात् प्राहुः,
पितृकालतश्चेति सिद्धान्तम् ॥२॥
लग्नस्य हि संबन्धी,
लग्ने वा सप्तमे चन्द्रः ॥
तत् पितृलाभगे चन्द्रे,
चन्द्रमन्दाभ्यामिति प्राहुः ॥३॥

रान्त तत्काल शीतल जलसे स्नान करना चाहिए। उत्तेजक स्नानसे शरीरमें रक्त संचालनकी क्रिया तीव्र गतिसे होती है; फलतः विषाक्त और विजातीय पदार्थोंका निष्कासन होकर स्फूर्ति और ताजगीका अनुभव होता है। शिर-पीड़ासे त्राण पानेके लिए औषधिका उपयोग कदापि न करें। इन औषधियों के मादक तत्व आपको बारंबार औषधि लेनेकी आदत डाल देंगे और एक समय वह आ पहुंचेगा, जब बिना औषधिके आप शिरःपीड़ासे व्यथित रहेंगे।

स्थूलता

चरबी शरीरको गरमी, शोभा और संरक्षण प्रदान करती है। चरबी यदि अवाञ्छनीय रूपमें बढ़ जाती है तो मधु-मेह, हृदय-रोग लागू हो जाता है। अधिक चरबीका सर्वाधिक दुष्प्रभाव पाचन व्यवस्थापर होता है। स्थूलताके प्रमुख कारण दो हैं—(१) आहारकी भूल और (२) पाचन प्रणालीकी अव्यवस्था। आहारपर समुचित ध्यान देनेसे चरबीकी वृद्धि-शील गति अवरुद्ध हो जाती है और अधिक चरबी कम हो जाती है।

स्थूलतामें आहारके नियम

अधिक मेदपूर्ण शरीरमें वजनको सन्तुलित रखनेवाला यन्त्र शिथिल हो जाता हैं। मेदप्रधान व्यक्तिको कम केलोरी-वाला आहार विशेष पसन्द करना चाहिए। स्वस्थ और वयस्क मानवको शरीरमें चेतना और गरमीके लिए २४०० से २५०० केलोरीकी आवश्यकता है। चरबीप्रधान मानवको ११०० से १२८० अर्थात् सामान्यकी अपेक्षा आधी केलो-रीका आहार उपयुक्त होगा।

(२) स्टार्च और चरबीप्रधान आहार स्थूलताकी वृद्धि करता है। सूखा मेवा, तिल, नारियलकी गिरी मेवा, मिठाई, घी, दूध, मक्खन, मलाई आदि पदार्थ चरबी उत्पन्न करने वाले हैं। ऐसे पदार्थ विशेष संयमके साथ लेने चाहिएँ।

(३) स्थूल व्यक्तियोंकी भूख अत्यन्त सतेज होती है। अतिआहार, बारंबार आहार और गरिष्ट आहार चरबी को बढ़ाता है।

(४) प्रोटीनप्रधान आहार गरमी उत्पन्न कर मेदको पचा देता है। मेदके रोगीको प्रोटीनप्रधान आहारपर विशेष रुचि रखनी चाहिए। प्रोटीनमें निहित नाइट्रोजनका तत्व स्नायुओंके स्वास्थ्य-संवर्धन और कार्य शक्तिके लिए आवश्यक है।

स्थूलतामें आहार

(क) हरे शाक, टमाटर और खट्टे नीम्बूका स्वेच्छया उपयोग करना चाहिए। खट्टे नीम्बूको गरम जलमें निचोड़कर पीते रहना चाहिए।

(ख) फल और फलोंका रस विशेष मात्रामें ग्रहण करना चाहिए। ऐसा करनेसे शरीरको क्षार, जीवनतत्व आदि उपलब्ध होते हैं। केला, आलू, कन्द, सूरन और डिब्बेमें संगृहीत फल लेना कदापि उचित नहीं।

(ग) खाद्यमें पुराने अन्नका उपयोग करें। जव, मूंग, छाछ-दही आदि विशेष रूपसे लेने चाहिए।

इन वस्तुओंसे बचें

(१) तले हुए, बासी और मसालेदार चटपटे आहारसे दूर रहें।

(२) पानी और नमकका उपयोग बहुत कम करें। यह दोनो ही चरबीको बढ़ानेमें सहायता करते हैं।

(३) आहार नियमित परिमित और हलका लें। भोजनके पश्चात तुरन्त बिस्तर पर न लेटें। दोपहरमें भोजन के बाद सोनेकी आदत छोड़ दें।

(४) चरबी कम करनेका स्वर्णसूत्र है—"श्रम द्विगुण किया जाय और आहार आधा :"

वजन बढ़ानेका आहार

हमारा समग्र समाज अति स्थूल या अति कृश—इन दो भागोंमें विभक्त है। अपर्याप्त पोषणमें हमारी गरीबी उतनी जिम्मेदार नहीं, जितनी कि हमारी आहार विषयक अज्ञानता है। अधिक खानेसे, माल मलीदा उड़ाने से, पाकों और रसायनोंका सेवन करनेसे वजन बढ़ता है, इस धारणाने अनेकशः लोगोंको स्थायी रोगका शिकार बना रखा है। अति पोषणके साथ अपर्याप्त पोषण भी अधिक हानिप्रद है।

वजनवर्धक आहार

वजनवर्धक आहारके पीछे अधिक धनकी नहीं, बल्कि कुछ समझदारीकी आवश्यकता है। वजन बढ़ानेमें शरीर

की क्षति पूर्तिके अतिरिक्त रक्त और मांसकी वृद्धि करे ऐसा आहार लेना चाहिए। स्थूल व्यक्तिको कम केलोरीका और पतले मानवको अधिक केलोरीका आहार मिलना चाहिए। पतले मानव ३००० से ३५०० केलोरी मिल सकें, ऐसा आहार लें। वजन बढ़ानेके इच्छुक मानवको जीवन-तत्व 'ए' और 'डी' का आहार लेना आवश्यक है। जीवन तत्वके समान ही चूना, पोटेशियम, लोहा इत्यादि क्षारों भी महत्व है। शाक रक्त-शुद्धि और उदर-शुद्धि करते हैं। कब्जसे वजन नहीं बढ़ता और शाक सब्जियाँ कब्जको दूर कर स्वास्थ्य और वजन बढ़ाती हैं। खाद्यमें दूधको अग्रस्थान देना चाहिए। दूध सर्वोत्तम और सम्पूर्ण आहार है। अस्थि और स्नायुओंकी रचना तथा विकास और पुनर्निर्माणके लिए आवश्यक शरीर संवर्धक द्रव्य दूधमें पाये जाते हैं। दही, मट्ठा, मलाई, छाछ, घी आदि दूधके रूपान्तर भी दुग्धाहारके समान ही हितकर हैं। दुग्धोपचार वजन बढ़ानेके लिए शत-प्रतिशत सफल प्रयोग है। स्वस्थ दुबले व्यक्ति चरबी और कारबोहाइड्रेट प्रधान आहार स्वेच्छानुसार ग्रहण करें। इन पदार्थोंमें शरीरके लिए आवश्यक गरमी, केलरी और चेतनाके तत्व विद्यमान हैं। घी, तेल मूंगफली, भात, आलू, मक्खन और मलाईका उपयोग भी वांछनीय है। वजन बढ़ानेके लिए सूखे फल अति उपयोगी होते हैं। छुहारा, अन्जीर, खजूर और ऐसी ही अन्य वस्तुएं प्रायः लेते रहना चाहिए।

दो उपयोगी प्रयोग

(१) एक गिलास ताजे दूधमें १ तोला शहद डालकर उसे धीरे-धीरे चूस-चूस कर पीना चाहिए।

पाचन शक्तिका ध्यान रखकर खूब पके केले को फोड़कर आधा सेर दूधमें उबालें। दूध ठंडा हो जाने पर केलेको भलीभाँति चबाकर खाते जायें और साथ ही घूंट घूंट दूध पीते रहें।

आहार और ऊंचाई

कम ऊंचे मानव या जातिका अध्ययन करने पर विदित होगा कि इन लोगोंका आहार पर्याप्त त्रुटिपूर्ण है। आहार और ऊंचाईके बीच घनिष्ट सम्बन्ध हैं। घी, दूध, मक्खन गेहूं आदि खाने वाले पंजाबियों और भात, इमली का पानी खाने वाले मद्रासियोंके बीचका शारीरिक अन्तर सुस्पष्ट है। गरीब और मध्यवर्ग के मानवकी कम ऊंचाई अल्प पोषण तथा धनिक वर्गकी कम ऊंचाई अधिक पोषणके फलस्वरूप होती है। ऊंचाई अस्थि संवर्धन और उचित पोषणपर निर्भर करती है एतदर्थ दो प्रकारके आहार, (१) कैल्शियम पोटाशियम और फासफरसयुक्त आहार, (२) विटामिन 'डी' युक्त आहारकी आवश्यकता होती है। दूध, गेहूं, सूर्यकी कोमल किरणें, उचित व्यायाम, शरीरकी समुचित स्थिति आदि ऊंचाई बढ़ानेके साधन हैं। बारम्बार मालिश कर सूर्यकी कोमल किरणों में बैठना चाहिए।

(२) निद्रा भी आहार है। काम और आराम के सूत्र पर आरोग्य स्थिर रहता है। अतः अतिकार्य—शारीरिक हो या मानसिक—शारीरिक विकासको अवरुद्ध कर देता है। समाजका एक वर्ग बैठे रहकर निष्क्रिय जीवन व्यतीत करता है। द्वितीय वर्ग तन-मनको क्षति पहुंचाकर जीवनको अकाल ही विस डालता है।

वीर्य स्राव

(१) अतिशय गरम, मसालेदार, अति तीक्ष्ण, खट्टे एवं पचनेमें भारी पदार्थ अग्राह्य है।

(२) कब्ज और बायु उत्पन्न करने वाली वस्तुएं न लेनी चाहिए।

(३) चाय, काफी आदि उत्तेजक पेय, प्याज-लहसुन आदि कामोत्तेजक पदार्थोंसे दूर रहना चाहिए।

(४) रातका भोजन सादा और सुपाच्य हो।

(५) दालों और मिठाइयोंके स्थान पर हरे शाकोंको विशेष स्थान दिया जाये।

(६) दूध और फलोंका भी पर्याप्त उपयोग करना चाहिए।

(७) बारंबार नींबूका रस जलमें निचोड़ कर थोड़ा शहद डाल कर लेना उपयुक्त होगा।

—

पाण्डू (पीलिया) रोगकी अनुभूत चिकित्सा)

[ले०—राजवैद्य डा० श्रीअमरदत्तजी मिश्र L. M. A. & H. M. D. S.]

इस वर्ष पाण्डुरोग (पीलिया) का जो भयानक प्रकोप हो रहा है वह सब जानते हैं। राजधानी दिल्लीमें इसका सर्वाधिक प्रकोप है और धीरे धीरे सर्वत्र फैलता जा रहा है अतः पाठकोंके लाभार्थ जन-सेवाकी दृष्टिसे पीलिया रोगका एक प्रयोग जो विशुद्ध आयुर्वेदिक है और जिसके द्वारा सैकड़ों पीलियाग्रस्त रोगियोंको लाभ हो चुका है वही थाती 'श्रीस्वाध्याय'की भेंट करता हूं। सर्व प्रथम पाठक वृन्दको इस रोगका संप्राप्तिपूर्वक रोग निदान संक्षेपसे समझा देना आवश्यक है, अतः इस रोगका निदान व्यक्त करता हूं, जिसे साधारण बुद्धि वाले जन भी सम्यक् समझ सकते हैं। पीलिया Jaundice रोग यकृत (Liver) की खराबीसे ही होता है। यकृत (Liver) एक रक्त बनाने वाला और खाद्य सामग्रीको पचाकर रस एवं रक्त रूपमें परिणत कर देने वाला देहमें एक महान् आवश्यक अंग है और इस यकृतके भीतर पित्ताशय नामक एक स्थान है जिसे Gall Blader कहते हैं। उस पित्ताशय से निकलता हुआ पित्त आंतोंमें न जाकर सीधा रक्तमें मिल जाता है इसी कारणसे पीलिया रोगीके नख, चमड़ी, नेत्र, मूत्र, मल और दृष्टि भी पीली हो जाती है, इसलिये ही इसका नाम पीलिया पड़ा। अंग्रेजीमें इसे जांडिश कहते हैं। यह रोग दो प्रकारका है—एक पित्तरोध जनित और दूसरा रक्तरोध जनित। पित्तरोध जनितHaepatogenus और रक्तरोध जनितको Haematigenus कहते हैं।

पित्तरोध जनित पाण्डुरोग Haepatogenus Jaundice जिन जिन कारणोंसे होता है उन उन कारणोंका संक्षेपमें विवरण निम्नलिखित है :—

(१) पित्तकी राह पर बाह्य दबाव Pressure पड़नेसे चाहे किसी भी कारणसे हो (२) पित्तनलीमें Bile ducts में विजातीय द्रव्योंके समावेशसे (३) पित्तनलीकी दीवारें शरीर क्रिया विकृतिसे तंग हो जाने पर (४) पित्ताश्मरीके कारण Gall Bladder (५) मन्दाग्निके कारण Dispepsia पित्तनलीकी श्लैष्मिक झिल्लियों पर शीताघात हो जानेसे।

पीलियाके लक्षण

सारी देह और मल-मूत्र त्वचा नेत्र स्वेद और दृष्टि आदि सब पीले हो जाते हैं। इस रोगके पूर्व ही अग्निमांद्य हो जाता है और पेटमें वायु भर जाना, आलस्य, जी मिचलाना, भोजनके बाद उल्टी हो जाना, दस्त हो जाना, कभी कब्ज constipatun, निर्बलता अत्यधिक आ जाना, चलने फिरनेमें भी श्वास भर जाना, नाड़ीकी गति इतनी मन्द हो जाती है कि एक मिनटमें ३०।४० बार ही चल पाती है। रक्तकी कमीके कारण यह सब होता है, और विशेषतया Cotarrbal inFlamatory Jaundice ही होता है। ऋतु प्रकोपके कारण चाहे जिस प्रकारका पाण्डू रोग हो उसमें यह अनुभूत प्रयोग अवश्य ही लाभ करता है। अनुभूत और रामबाण होनेसे ही यह जनता जनार्दनकी भेंट स्वरूप प्रसारित किया जाता है।

अनुभूत सिद्ध प्रयोग

काशीश भस्म उत्तम एक रत्ती, प्रवाल पिष्ठी एक रत्ती, मंडूर भस्म १ रत्ती, रौप्य माक्षिक १ रत्ती, ६४ प्रहरी १ रत्ती, मुक्ता शुक्ति पिष्टी १ रत्ती, नाग भस्म १ रत्ती, यह एक मात्रा है, इसे शहदमें मिला कर दिनमें ३ समय चटावें और दवा चटानेके पश्चात् मिश्री मिला गो दुग्ध अवश्य ही पिलावें। यदि रोगीको ज्वर भी रहता हो तो इस योगके साथ स्वर्ण मालिनी बसन्त वृहद् एक रत्ती या आधी रत्ती मिला देवें, इससे ताप सह पीलिया रोग मिट कर रोगी निरोग और सबल बन जाता है। इसके सेवनसे प्रथम सप्ताह में ही रोगीको आश्चर्यजनक लाभ होगा और दूसरे सप्ताह में रोगी पूर्ण स्वस्थ हो जावेगा। यदि औषधि ३ सप्ताह तक भी ली जावे तो कोई हानि नहीं। स्थायी लाभ हो जाता है। भोजनके बाद लोहासव डेढ़ तोला सम भाग जल के साथ काँच या चीनीके प्यालेमें मिलाकर पीवें। पथ्यमें गेहूं का फुलका, बिना घृतके मूंगकी पतली दाल, मेथी हरी तथा पालकका साग, नमक सैंधा और मिर्च काली ही प्रयोगमें लेवें। फलोंमें मीठा अनार, सन्तरा, टमाटर, गन्नेका रस और मौसम्बी लेवें। शेष अन्य पदार्थ मना है।

——

तीन मासका-व्यापार-भविष्य

[ले०—श्री प्रोफेसर बी० सी० महता० एम० आर० ए० एस० म्युनिसिपल कमिश्नर]

वास्तवमें हमने गत २० वर्षोंके अनुभवसे यह निश्चय जान लिया है कि बाजारोंकी तेजी-मन्दी ग्रहोंके योगायोगसे अवश्य होती है, परन्तु व्यापारिक ज्योतिषका अध्ययन पूर्ण रूपसे करनेकी आवश्यकता है। आजकल लोग तेजी-मंदी व चान्स बिना किसी खास अध्ययनके ही बताने लग जाते हैं, तथा प्रत्येक बड़े बड़े व्यापारिक नगरों और मंडियोंमें दो चार ज्योतिष कार्यालय केवल तेजी-मन्दी बतानेके लिए खुले हुए हैं। हमारे ब्यावर नगरमें भी दो तीन ऐसे ज्योतिष कार्यालय खुले हुए हैं, जिनका उल्लेख करते हुए भी हमारा जी दुखता है। कारण वे लोग ज्योतिष विद्याका 'क' 'ख' भी नहीं जानते और बहुत बड़ा ज्योतिषी होनेका दावा करते हैं, तथा उल्टे सीधे विज्ञापनों द्वारा व्यापारी वर्गको फंसाते रहते हैं। जिससे सही ज्योतिषीकी भी कद्र कम होती है और ज्योतिष जैसी महान् चमत्कारी विद्याकी भी दुर्गति होती है। इसलिए हम समय समय पर व्यापारी मित्रोंसे यही अनुरोध करते हैं कि प्रत्येक नये ज्योतिषीके चान्स मंगानेके पहले उनके दो तीन चान्स फ्री मंगवाकर उनको पहले आजमावे और फिर उनको पैसे देवें, ताकि धीरे-धीरे बोगस ज्योतिषियोंका अस्तित्व ही कम हो जावेगा। हमने गत अंकमें अक्टूबरसे जनवरी तकका बाजारोंका भविष्य आपके सामने प्रस्तुत किया था। अब हम इस लेखमें अप्रेल तकका भविष्य सब मुख्य बाजारोंका प्रस्तुत करते हैं, आप मननकर उसके आधार पर व्यापार कर सकते हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि आपको यह बहुत सहायक सिद्ध होगा।

हमारा यह लेख आपको ता० २३ जनवरी तक प्राप्त होगा। जनवरी मास भी ग्रहोंकी दृष्टिसे उल्लेखनीय है। इस मासके प्रारम्भमें ही शनि राहु और मंगलग्रहका वृश्चिक राशिमें इकट्ठा होना अत्यन्त महत्वशाली योग है। इस राशिमें ये तीनों ग्रह लगभग ६० वर्षोंमें एकत्रित हुए हैं, जिससे कई तरहकी आश्चर्यजनक घटनायें देशमें होनेकी सम्भावना है। जिसका प्रभाव बाजारों पर भी यथेष्ट पड़ेगा। इस योगसे चांदी सोनेमें विशेष तेजीकी सम्भावना है। कच्ची चीजोंमें अच्छी दुतरफी घटाबढ़ी होगी, तथा ट्रेण्ड तेजीका ही रहेगा। ता० ३ से ६ जनवरी तक तेजी, ता. १० से १३ तक मन्दीका झटका। तारीख १४ से २४ तक तेजीका फोर्स प्रत्येक मारकेटमें उत्तम मध्यम रहेगा, उत्तरी भारतके गुड़, गुवार, मटरा, सरसों आदि बाजारोंमें भी थोड़ी तेजी आ सकती है।

फरवरी १९५६ ई०

फरवरी मासमें उच्च राशिमें शुक्र ता० ५ को ही प्रवेश करता है। यह योग फिर तेजीका जनरल ट्रेण्ड पैदा करेगा, चांदी सोना शेयर, रुई कपास, गुड़, सरसों, तैलवाना, जूट आदिमें फिर तेजी आ सकती है। गवर्नमेण्ट कुछ ऐसे नये कानून बनायेगी जिससे जनतामें खलबली मचेगी और सोने चांदीका स्तर ऊंचा तथा भाव बढ़ेंगे।

रुई कपास कपासियेमें भी ता० ५ फरवरीसे १४ फरवरीके बीच एक तेजीका जोश आवेगा और फिर बाजारमें नर्माई आ जावेगी सो वजटके पहले घटाबढ़ीके साथ कई बाजार विशेष नर्म चलेंगे।

मार्च अप्रैल १९५६ ई०

मार्च मासमें बाजारोंकी पोजिशनमें फिर सुधारा आवेगा, क्योंकि शनि राहुका योग थोड़ा समीप आवेगा, किन्तु ता० १२ मार्चको जब शनि बक्री होगा तब प्रत्येक कच्ची वस्तुओंमें बड़ी मन्दी आ सकती है। आप बेधड़क मन्दीका व्यापार कर सकते हैं, रुई जरीला, कपास, कपासिया तेलवाना विशेष घट सकता है। शेयर, सोना चान्दीका ट्रेण्ड तेजीका ही रहेगा।

अप्रेल मासमें मंगल उच्चका होता है तथा शनि राहुसे सेक्सटायल योग बनाता है। इसका प्रभाव भी बड़ी घटा बढ़ी व तेजी सूचक है। व्यापारियोंको बहुत सावधानीसे कार्य करना चाहिये। हमने 'श्रीस्वाध्याय'के ग्राहकों व पाठकोंके लिये पहले ही घोषणा कर दी है कि हम केवल आधी फीसमें ही अपने प्रत्येक चान्स व रिपोर्ट उनको दे सकेंगे।

त्रैमासिक चांदी सोनेका स्पेशल चांस

[ले० राजवैद्य डा० अमरदत्त मिश्र H. M. D. S. कॉमरशीयल एस्ट्रॉलॉजर]

'श्रीस्वाध्याय'के प्रिय पाठकोंको इस बार फरवरी मार्च और अप्रैल १९५६ के खास खास चांस भेंट करता हूँ। आशा ही नहीं निश्चित विश्वास है कि इस लेख द्वारा आप यदि विवेकपूर्ण काम करेंगे तो अवश्य ही किये हुए सौदेमें नफा लेकर ही घर लौटेंगे, और हमारे चांसोंकी सत्यता पर पूर्ण विश्वास हो जाने पर आप एक ग्राहक 'श्रीस्वाध्याय' का अवश्य ही नया बनावें और आवश्यक समझें तो हमारी दैनिक रिपोर्ट मंगानेका प्रयत्न करें, ताकि आप और अधिक लाभान्वित हो सकेंगे। रिपोर्ट तब, ही मंगावें यदि लेखके स्पेशल चांस सही उतरें तब अन्यथा ईश्वर चिन्तन करें। इसमें ही इहलोक और परलोककी सिद्धि हो सकेगी—

मास फरवरी १९५६ ई०

यह मास भी वायदेके लिए बड़ा क्रांतिकारी सिद्ध होगा इस मासमें कई अच्छे योग बनते हैं। जिससे चांदीके बाजार में काफी हेरफेर होगा और निम्न तारीखें अवश्य ध्यानमें रखें। इनमें यदि आपका भाग्य साथ देवे तो काम करें, अवश्य ही लाभ मिलेगा। ज्योतिष शास्त्र एक दीपक है। अतः व्यापारीको चाहिए कि वे इस ज्योतिष रूपी प्रकाश में जो चांस देखनेमें आवें उनमें काम करके सफलता प्राप्त करें। चांस निम्न प्रकार हैं—मास फरवरीमें तारीख २-३-४ और १३ बड़ी महत्वकी हैं, इनमें चांदीमें अवश्य ही तेजी आवेगी। यह तेजीका प्रभाव चांदीकी अपेक्षा सोना में विशेष होगा। चांदीमें ३) ४) की तेजी आना सम्भव है, सोनेमें विशेष लाभ।

मार्च १९५६

यह मास गत मासकी अपेक्षाकृत महत्वशाली अवश्य है। किन्तु इसका महत्व गत मासकी अपेक्षा विपरीत ही प्रतीत हो रहा है। इस मासमें निम्न तारीखें स्पेशल समझें—प्रारम्भमें २ मार्चको स्पेशल तेजी और ३ को मंदी। पुनः ६ मार्च से १० मार्च तक चांदीका बाजार मंदा ही रहेगा। यह चांस सही उतरे तब आप एक नया ग्राहक 'श्रीस्वाध्याय' का अवश्य ही बनावें और हमारी विस्तृत दैनिक रिपोर्ट ३५) रु० मनीआर्डर द्वारा एडवांस भेजकर मंगा लें। जिससे और अधिक लाभ उठा सकेंगे।

अप्रैल १९५६

इस मासमें प्रारम्भमें ही १ तारीखको सोनेमें तेजी आयेगी और ता० ६ मन्दीकी है, चांदीमें फिर बाजार स्टेडीमें ही चलेगा और ता० ८ से १० और ११ तक बाजार चांदी का अवश्य ही तेजीमें चलेगा। जो सज्जन विवेकके साथ सच्चिदानन्द घनश्यामका चिंतन करता हुआ व्यापार करेगा उसे अवश्य ही लाभ मिलेगा। यह मास अति महत्वका है, इस मासमें मोटी तेजी आवेगी। जो ज्यादा टिकेगी नहीं—विशद विवरणके आकांक्षी दैनिक रिपोर्ट मंगावें।

———

सन् १९५६ का वार्षिक व्यापार-भविष्य

[ले०—श्री पं० कृष्णदत्त शर्मा ज्योतिषरत्न]

प्राचीन आचार्योंने व्यापार सम्बन्धी साहित्यका सूत्र रूपसे सृजन किया था। किन्तु कालकी विचित्र परिस्थितियों के कारण वह साहित्य लुप्तप्राय हो गया। वर्तमानमें कुछ दैवज्ञगणोंने परिश्रम करके उन व्यापारिक सूत्रोंको उपलब्ध करके अनुसन्धान द्वारा इस ओर श्रेष्ठ प्रगति की है, उसी संशोधित प्रणाली द्वारा यह सन १९५६ ई० का वार्षिक व्यापार भविष्य लिखा जा रहा है।

सन् १९५६ ई० में बार्हस्पत्य मान द्वारा सौम्य सम्वत्सर रहेगा, जिसका फल समस्त जनता प्रसन्न रहे, धान्यकी उत्पति श्रेष्ठ हो, वर्षा समयानुकूल होवे। शासक वर्ग शत्रु हीन हों, ब्राह्मण अपने कर्ममें तत्पर रहें, उपजकी दृष्टिसे यह वर्ष श्रेष्ठ सिद्ध होवे। यथा—

सौम्याब्दे निखिला लोका बहुसम्यार्घष्टष्टिभिः।
विवैरिणो धराधीशा विप्राश्चाध्वरतप्तराः॥

ता० १२-१३ जनवरीको पौषकी अमावस्या गुरु-शुक्र वारी है अतः आगे अनाजका भाव पर्याप्त मन्दा होवे—

यदि भवति शशांको मंडलं चोष्णरश्मेः।
बुध-गुरु-भृगु सोमे मृत्तिकातुल्यमन्नम्॥

ता० ६ जनवरीसे १२-१३ फरवरी तक वृश्चिक राशि में मंगलके साथ पहिले शनिकी फिर राहुकी युति हो रही है जो इस बातकी आगाही कर रही है कि इस समयमें वस्तु मात्रमें मंदीका दौर चालू होवे, जो भयंकर मंदी होगी। अतः बिज्ञ व्यापारियोंको प्रथम ही सतर्क रहना चाहिए। क्योंकि आगे भी ग्रह चाल मंदीकी धारणा वाली ही है। ता० १२ फरवरीको सूर्यदेव कुम्भ राशिमें प्रवेश कर रहे हैं जिस पर गुरुदेवकी पूर्ण दृष्टि पड़ेगी, फिर १८ फरवरीको धनुः राशिमें मंगलके प्रविष्ट होते ही देवाचार्य अपनी दृष्टिमें ले लेंगे, ता० २ मार्चको शुक्रके मेष राशिमें प्रसार करते ही देवगुरु अपनी नवम पूर्ण दृष्टिसे देखेंगे। ता० ६ मार्चको बुध कुम्भ राशिमें प्रवेश करता है, इसे गुरु ग्रह पूर्ण सप्तम दृष्टिसे देखेगा, ता० १२ मार्चसे शनैश्चर वक्रावस्थामें चलने लगेगा, वृहस्पति महाराज पहले ही वक्रावस्थामें चल रहेहैं, जब ये दोनों ही बड़े ग्रह इकट्ठे वक्रावस्थामें चलते हैं, तो वस्तु मात्रमें मन्दीका दौर चालू कर देते हैं, जैसे सन् १९५५ ई० के फरवरी मार्चमें किया था, अतः सावधान! यह मंदी का दौर अप्रैलके प्रथम सप्ताहमें समाप्त होगा।

अप्रैलके प्रथम सप्ताहके अन्तमें ग्रह चाल तेजीकी ओर अग्रसर होगी। ता० ४ अप्रैल सायंको मंगल मकर राशिमें प्रवेश करेगा जिस पर शनिकी पूर्ण दृष्टि ता० ६ अप्रैलसे चालू होती है, जिसका पूर्व रूप १८ अप्रैल के प्रातः तक, फिर उत्तर रूप २६ अप्रैल तक रहेगा। आगे राहुकी एक पाद दृष्टि भौम पर चालू होती है जो ११ मई तक चलेगी जिसके कारण लाल रंगकी समस्त वस्तुओं व खाद्यान्नों तथा तैल तिलहनमें तेजीकी प्रतिक्रिया होगी—

स्वोच्चे स्वभे मित्रगृहे तु राशौ
यावद्दिनै स्तिष्ठति पापखेटः।
तत्तुल्यकाले सकलं महर्घं
बर्णानुगं च तस्य वस्तु भूयः॥

ता० ११ मईसे मंगलकी दृष्टि गुरु पर आती है, यहां पर गुरु दो ओर से विद्व है। क्योंकि ता० २६ अप्रैलसे राहुका गुरुको बेध चालू है, वेध भी चरण बेध। ता० १२ मईसे २२ मई तक मंगलका गुरुको वाम बेध रहेगा, अतः यह दिन खास तेजीके होंगे। ता० ६ अप्रैलसे आगे शुक्र, पीछे सूर्य, मध्यमें बुध रहेगा जो २५ मईके प्रातः तक है, वह वस्तु मात्रमें तेजी कारक है। यथा—

अग्रे चलति यदा शुक्रः पृष्ठे सप्ताश्ववाहनः।
मध्ये सोमसुतो याति भवत्यन्न महर्घता॥

वैशाखकृष्णपक्षकी त्रयोदशी मंगलवारी है अतः स्निग्ध वस्तु (घी तेलादि) लाल वस्तु गुड़ादि तथा पान सुपारी आदि तेज होवे। यथा—

वैशाखे कृष्णपक्षे च त्रयोदश्यां रविः कुजः।
महर्घं खण्ड ताम्बूलं स्निग्धं च रक्तचन्दनम॥

इन सबका सारांश यह है कि जनवरीके प्रथम सप्ताहमें ऊंचे भावोंसे मंदी चालू होवे जो मंदी अप्रैलके प्रथम

या द्वितीय सप्ताह तक चालू रहे. अप्रैलके प्रथम सप्ताहसे मई के चतुर्थ सप्ताह तक तेजी चलती रहे।

ता० २५ मईको ज्येष्ठ वदी प्रतिपदा शुक्रवारी है, अतः पृथ्वी पर समयानुकूल वर्षा हो, जिससे संसार धन-धान्य से युक्त होवे। यथा—

ज्येष्ठस्यागमने प्रोक्ता या तिथिः प्रथमा भवेत्।
आयाति केन वारेण तामन्वेपय यत्नतः ॥
गुरुभार्गवसोमानामेकोऽपि यदि जायते ।
वर्षाप्लुता भवेत् पृथ्वी धन-धान्य समाकुला ॥

ज्येष्ठ शुदी पूर्णिमाको मूला नक्षत्र है अतः वर्षा श्रेष्ठ, अनाजका भाव मंदा। आषाढ़ शुदी द्वितीया और नवमीको सोमवार है अतः श्रेष्ठ वर्षा और वस्तुओंमें मंदा हो।

आषाढ़शुक्लपक्षे च द्वितीया नवमी दिने।
चन्द्रे ज्यभृगुवाराः स्युः सुवृष्टिश्च समर्घता ॥

आषाढ़ वदी तृतीयाको श्रवण नक्षत्र है अतःअनाज भाव मंदीमें खरीदना चाहिए। मईके चतुर्थ सप्ताहसे जुलाईके प्रथम सप्ताह तक मंदीका दौर चालू रहे।

ता० ५ जौलाईसे ग्रह चाल शनैः शनैः फिर तेजीकी ओर अग्रसर होगी। प्रथम राहुका बुधको वेध फिर सूर्य-देवका गुरुदेवको वेध करना, मंगलका वक्रावस्थामें चले जाना और २२ अगस्तसे शनिकी युति मंगलके क्षेत्रमें चालू हो रही है, जिसका प्रारूप ता० १७ अक्टूबर तक चलेगा वह समस्त खाद्यान्नों तथा ताम्रादि धातुओंमें तेजीके वेग उत्पन्न करेंगे। यथा: –

भौमक्षेत्रे शनौ राहौ ताम्रादीनां महर्घता।
तथा वै सर्व धान्यानां महर्घं राजविग्रहम् ॥

अक्टूबरके प्रथम सप्ताहसे फिर मंदीका रिएक्शन चलती तेजीकी लाईनमें पड़े, क्योंकि ता० ११ अक्टूबरको मंगल मार्गी होगा और शनि-राहु युतिका उत्तर रूप तथा तुलाके सूर्यसे नैपच्यूनकी युतिका होना यह वातावरण नवम्बरके प्रथम सप्ताह तक चालू रहे। नवम्बरके प्रथम सप्ताहके अन्तिम दिनोंमें फिर क्रूर ग्रहोंके आपसी वेधों द्वारा मार्केटमें तेजी वालोंका जोर चले। यह तेजी अन्तिम दिसम्बर तक चालू रहे।

—

स्वर शास्त्रसे कुछ स्पेशल लाइनें

[ले०—पं० श्यामसुन्दरजी ज्योतिषी]

इस बार हम अपने और भी अधिक चमत्कारी स्वर शास्त्रके अनुभव द्वारा तैयार की हुई विशेष सीधी लाइनें आपकी सेवामें भेंट कर रहे हैं। आशा है व्यापारी भाई हमारी सेवाको सार्थक करके अवश्य लाभ उठायेंगे।

ता० २२ जनवरीसे ४ फरवरी तक सब चीजोंमें भयानक मंदी आयगी। गुड़ २) गुवार १।) सरसों २॥) ३) रु० टूट जायगी। चांदी सोना भी ७) ५) रु० क्रमशः टूटेगा।

ता० ७ फरवरीसे ११ फरवरी तक हर चीज झटकेसे बढ़ेगी। तूफानी तेजीका झटका है। ११ से १८ फरवरी तक मंदी। १८ से २२ फरवरी तक फिर तेजी बन रही है। इस बार तेजीका पावर काफी बढ़ा हुआ है। हर चीज बढ़ेगी।

१७५ वर्ष तक जीवित रहनेका उपाय

एक सोवियत प्रोफेसरने मास्को रेडियोपर कहा कि चिन्ता मत करो तो तुम १७५ वर्ष तक जीवित रह सकते हो। सोवियत विज्ञानकी ऐसी धारणा है कि मनुष्य सामान्य रूपमें १५० से १७५ वर्षो तक जीवित रह सकता है, जब कि वह चिन्ता रहित रहे। चिन्तासे आयु जल्दी ढलने लगती है।

दीर्घजीवी होनेके लिए उन्होंने अपनी एक पुस्तकमें निम्नलिखित सुझाव दिया है—

(१) कार्यका समझदारीसे आयोजन करो।

(२) सामर्थ्यसे अधिक कार्य मत करो।

(३) साप्ताहिक छुट्टियों तथा अन्य छुट्टियोंमें वास्तविक विश्राम करो।

(४) मध्य आयुमें ८ घंटे सोओ।

(५) प्रतिदिन १५ से २० मिनट तक व्यायाम करो। इसमें बूढे या जवानका कोई भेद भाव नहीं।

(६) दिनमें ३ या ४ बार हल्का भोजन करो।

(७) न शराब पिओ और न धूम्रपान करो।

(८) तबियतके साथ नहाओ और खुली वायुमें पर्याप्त टहलो।

प्रोफेसरने किसानका जो सामूहिक फार्म पर कार्य करता था, उल्लेख करते हुए कहा कि वह ४वर्ष पहले १४३ वर्षकी आयुमें मरा था। वह १४३ वर्षकी आयु तक पूर्ण स्वस्थ ढंगसे कार्य करता रहा। परन्तु यह ज्ञात नहीं कि वह इन शाश्वत नियमोंका पालन करता था या नहीं।

रुई-सोना-चांदीकी अनुभूत रिपोर्ट

(ले०—ज्योतिर्भूषण श्री पं० गिरिधारीलालजी शर्मा)

पहला सप्ताह—

पौष शुकला १० सोमवार ता० २३ जनवरी १६५६ से ता० २८ तक बाजार घटबढ़से पहले घटेगा। जिसमें चांदी नहीं घटेगी रुई घटेगी। घटके उतना ही बढ़ जायेगा। ता० २३ को सोना चांदी बढ़ेगा। चाहे सायंकाल तक बढ़े। रुई घटबढ़में, ता० २४ को शेयरोंमें रुईमें बहुत घट बढ़। २ बजे बाद सबमें तेजी। ता० २५-२६ को रुईमें अच्छी तेजी, दोनोंमें नहीं तो १ अचूक तेज़ी। ता० २५ को मोटी घट-बढ़ होगी। ता० २७ २८ को घटबढ़से तेज। ता० २७ को न भी होवे तो २८ को अवश्य।

दूसरा सप्ताह—

ता० २६ जनवरीसे ५ फरवरी तक रुईमें घटबढ़ होगी। पहले १०) १५) टका बढ़ेगा, पीछे घटेगा। ता० ३० को २ बजे बाद तेजी। ता० ३१ को चांदीमें न होवे तो रुईमें अच्छी तेजी। ता० १-२ को घट बढ़से मन्दी, ३ को दिन भर घटबढ़ रहेगी। ता० ४ को ता० ३ से विपरीत रहेगा। यहां शनि राहु मंगलका योग है। उत्पाती समय है। व्यापार सोच समझके करना चाहिए।

तीसरा सप्ताह—

ता० ६ से ११ फरवरी तक रुई चांदी सोनामें तेजी होगी। हो सकता है एक बार घटके बढ़े। घटने पर खरीदो, ता० ६ को मन्दी, ता० ७ को बहुत घटबढ़ रुईमें और चांदीमें, परन्तु चांदी घटते ही बढ़ जायेगी। रुई पड़ी रहेगी। ता० १०-११ को दो तरफा लगाना बहुत अच्छा है, अचूक चान्स है। हमारा ध्यान तेजीमें है।

चौथा सप्ताह—

ता० १२ से १६ फरवरी तक रुई तेज चांदी मंदी या सामान्य, परन्तु जनरल ध्यान तेजी का रखो। ता० १३ को सब वस्तु तेज। ता० १४ को घटबढ़ से मन्दी, रुई की नहीं कह सकते। ता० १५ को सायंकाल मंदी, ता० १७ को चांदीमें तेजी। तेज रहे तो १६ तक या २६ तक तेजी। मंदी रहे तो मंदी। हमारा ध्यान तेजी का है। ता० १८-१६-२० को शेयरमें अवश्य तेजी।

पांचवां सप्ताह—

ता० २० से २६ फरवरी तक रुई घटे भाव खरीदो। बढ़के घटेगा। सोना चांदी अवश्य तेज। ता० २० को ३ बजे बाजार पहले जिस तरफ चल रहा है उससे विपरीत चलेगा। ता० २१ को रुईमें तेजी, चांदी घटबढ़ में रहेगी। ता० २३ से घटबढ़ अच्छी चलेगी।

नोट– ता० १२ से २८ फरवरी तककी स्पेशल रिपोर्ट कार्यालय से मंगावें। देखें किस तरहसे बाजार चलता है।

छठा सप्ताह—

ता० २७ फरवरी से ४ मार्च तक जनरल ध्यान तेजी का रखो जिसमें ता० २७-२८ तो एक तेजी १ मन्दीमें रहेगी। ता० २६ से या १ मार्च की सायं कालसे अवश्य तेजी। ता० २ को तेजी होके मन्दी होगी। ता० ३-४ को अवश्य तेजी, ता० ३ को रात्रिमें बहुत घट-बढ़ होगी।

सातवाँ सप्ताह—

ता० ५ से १२ मार्च तक रुई चांदी दोनों ही मंदी में झूलती रहेंगी। कभी ५) टका या ॥) बढ़ गया तो डबल घटेगा। चांदी १-२ दिन तेजीके भी झटके देगी वह इन तारीखोंमें समझो, चांदीकी तेजीकी तारीख ६के व दोपहर में, ता० १० प्रातः कालमें ता० १२ को घटबढ़ मंदीसे होवे चाहे तेजीमें एक तरफा बाजार रहेगा।

आठवां सप्ताह—

ता० १३ से २० मार्च तक साधारण घटबढ़ होके कुछ मंदी होगी। मंदी २) २॥) हो जाय, जब ही तेजी का व्यापार कर लेना चाहिए, मन्दी होगी वह ता० १५-१६ में हो लेगी। ता० १७ से २० तक तेजी रहेगी। ता० १६ २० दोनों तेजी नहीं भी तो १ तेजी कोई नहीं रोक सकता।

नौवाँ सप्ताह—

ता० २१ से २६ मार्च तक साधारण घटबढ़ रहेगी कभीमन्दी कभी तेजी। ता० २१-२२ तेजी, ता० २३-२४ मन्दी।

त्रैमासिक व्यापार-रुख

[ज्योतिषाचार्य रमलाचार्य प्रो० श्री गणेशशंकर शर्मा]

(ता० २३ जनवरी से ता० २३ अप्रैल ५६ तक)

जनवरी १९५६

ता० २३ जनवरी को वक्र गतिमें चलता हुआ बुध अस्त हो रहा है यहां अचानक मंदी चांदी में ३) ३॥) की आना पाया जाता है, ता० २५ को बुध शुक्र का द्विर्द्वादश योग इस योग में रुई, चांदी, मटर गुवार गुड़ शेयर सुवर्ण सरसों आदि समस्त वस्तुओं में मंदी का झटका आकर रहेगा।

ता० २७ को सूर्य बुध की युति होगी गत कलम में जिन २ वस्तुमें मंदी आ गई है उनको खरीदो, यहां चांदी २) २॥) टका बढ़नापाया जाता है। इसी अनुसार अन्य वस्तु समझो।

ता० २८, २९ सू० रा० केन्द्र से तेजी, यह तेजी ता० २७ से ३१ तक रहेगी हर घटे भाव खरीद नफा लेलें।

फरवरी १९५६

ता० ३ फरवरी सूर्य मंगल त्रिएकादश योग यह भी सब बाजारोंमें तेजीके योगको प्रबल बनाता है। ता० ६ फरवरी मंगल राहु युति गुड़, चांदी, सरसों, रुई बेचो अच्छा लाभ मंदी वालोंको होना पाया जाता है। ता० १३ फरवरीको शुक्र-शनि त्रिएकादश योग बाजारों को ऊपरमें ले जायेगा, यह धोखेकी तेजी है।

ता० १६ फरवरी से १९ मार्च तक मेरे ध्यान में यहां चांदी नीचेमें ५८) ६०) का आँकड़ा पकड़ लें। इस योगको अवश्य ध्यानमें रखना। रुई १००) १२५) गुड़ २) २॥) सरसों ३) ३॥) की मंदी इस समय आ जानेके योग आये हैं।

ता० १६ सूर्य गुरु दृष्टि बेचो, खुलते बाजार ही। ता० १८ को बंद बाजार तक अच्छी मंदी आ जायेगी। तीन दिन की मंदी खेलो, ता० २० सूर्य नैपच्यून त्रिकोण यह फिर तेजी वालोंको शान्ति देने आया है होशियारको इशारा काफी होता है। ता० २२ शुक्र राहु त्रिकोण, दोनों योग महान् मंदी करने वाले हैं। ता० २९ तक हर आये उछाले बेचो और नफा लेते रहो बेचकर लेवें।

मार्च १९५६

ता० ३ मार्च सूर्य-राहु केन्द्र सब वस्तुओंमें अच्छी घटा बढ़ी चलेगी नजराने (गली) निगलते रहेंगे। ता० ४ को घटे खरीदो ता० ६ तक तेजीके नफे लेते रहो। ता० ७ बुध गुरु दृष्टि आये उछाले बेचो चांदी, सोना शेयर सरसों गुवार, मटर, गुड़, रुई आदि सब में ता० ८ को बंद तक मंदी। ता० ११ को बुध नैपच्यून त्रिकोण, तेजी

[शेष पृष्ठ ४२ पर]

दशवां सप्ताह

ता० २७ मार्च से ४ अप्रैल तक कभी तेजी कभी मंदी जैसा ही रहेगा। ता० २७-२८ में एक तेजी। ता० २९ को मन्दी होके सायंकाल तेजी, ता० ३० को घटबढ़। ता० ३१ को १२ या २ बजेसे तेजी। ता० १ अप्रैलके बन्द बाजारमें रुई मन्दी, ता० २ को भी ठण्डा झोंका ही लेती रहेगी। चांदीकी नहीं कह सकते यह भी हो सकती है। ता० ३-४ को जैसा बाजार रहेगा वही बज्र हो जायेगा।

ग्यारहवाँ सप्ताह—

ता० ५ से ११ अप्रैल तक मन्दीका ध्यान रखो, ता० ५-६ में कुछ तेजी होगी वहां बेचो, ता० ७ से ११ तक मन्दी रहेगी, ता० ९-११ को अवश्य मन्दी होनी चाहिए, चांदी अवश्य मन्दी।

बारहवाँ सप्ताह—

ता० १२ से १९ अप्रैल तक चांदी तेज, रुईमें घट-बढ़से तेजी, ता० १२ को जोटा लगाओ या तेजी खेलो। ता० १३-१४-१६ में कितनी ही घटबढ़ होवे अन्तमें तेजी होगी। ता० १७ को घटबढ़से मन्दी, ता० १८ को १२ या २ बजे बाद अच्छी तेजी। ता० १९ को घटबढ़ अच्छी होगी। आगे सर्वज्ञ ईश्वर है।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र

रोगोत्पातादि पर शनि राहु और मंगलका प्रत्यक्ष प्रभाव
भारतीय गणराज्यके सातवें वर्षका भविष्य

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य]

शनि एक राशिमें मध्यम मानेन २॥ वर्ष, राहु १॥ वर्ष और मंगल १॥ मास तक रहता है। शनि अपनी १२ राशियोंका भचक्र भ्रमण पूर्ण करके ३० वर्ष बाद फिर उसी राशिमें प्रवेश करता है और राहु १८ वर्ष बाद फिर उसी राशिमें जाता है। शनिके तीसरे और राहुके पांचवें भचक्र भ्रमणके पूर्ण होने पर ६० वर्ष बाद फिर उसी राशिमें इन दोनों ग्रहोंकी युति होती है। मंगल मध्यम मानेन १॥ वर्ष बाद पुनः उसी राशिमें आ जाता है। अतः मंगलका शनि राहुसे संयोग १॥ दो वर्षके बाद हो जाता है। जिस समय शनि-मंगलका क्रूर राशिमें संयोग होता है उस समय संसारमें भयंकर विस्फोट उत्पात दुर्भिक्ष रोग भूकम्प राजनैतिक सामाजिक वा धार्मिक संघर्षादि अनेक क्रांतिकारक घटनाएं घटित होती हैं। शनि श्रमिकवर्ग अनार्य प्रकृतिके स्वार्थप्रिय प्राणियोंका प्रतिनिधि और दुःख शोक मृत्यु भय आतंकका कारक माना गया है। मंगल का सेना, शस्त्रास्त्र, क्रोध, अग्नि, भूमिपति, शासक और उग्रकर्मा क्षत्रियवर्ग पर आधिपत्य है। भौतिक जगत्‌में जितने भूकम्प, युद्ध, रक्तपात, महामारी आदि उत्पात हुए हैं वे सब शनि-मंगल-राहु-गुरु सूर्य चन्द्रमाके पारस्परिक संयोगसे घनिष्ट सम्बन्धित थे। कांगड़ा, बिहार, क्वेटा आदिके सभी भयानक भूकम्प अमावस्या तिथिको चतुः पंच षड्ग्रही योगमें शनि मंगल गुरु राहुकी अशुभ स्थिति में हुए हैं। वृश्चिक राशि कालपुरुषके अष्टम स्थानमें होनेसे मृत्यु, रोग, षड्यन्त्र, उत्पात, अपघात कारक मानी गई है, यह जलतत्व राशि भी है, भूमि खान, पर्वत, जंगल और गुप्त स्थानों पर भी इसका अधिकार है।

इस वर्ष वृश्चिक राशिमें शनि राहुका योग ६० वर्षके बाद हुआ। इसका विवेचन हमने गत वर्ष अपने 'श्रीविश्व-विजय पंचांग' में किया था। वृश्चिक राशिमें जब शनि जाता है तो एक वर्षके उपरान्त इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली)के लिए भी अनिष्ट (रोगोपद्रवादि) लिखा है—

यदा वृश्चिकगः सौरिर्मेदिनी दुःखसंयुता।
वर्षमात्रमथोचोर्ध्व मिन्द्रप्रस्थो विनश्यति ॥

शनि राहु दोनों एकत्र हों तो अनिष्ट प्रभाव अनाचार अधिक होते हैं। इस वर्ष अधि.भाद्रपद शु० १ ता० १८ अगस्त १९५५ को राहुने वृश्चिक राशिमें प्रवेश किया, उसी समय गोवा सत्याग्रहके गोलीकाण्डने भारतकी जनताको क्षुब्ध किया और संघर्ष जोरसे छिड़ा। द्वि० भाद्रपद शु० १५ ता० १ अक्टूबरको गुरुने अपनी उच्च राशि कर्क को छोड़ कर सिंहमें प्रवेश किया। इसने आते ही अक्टूबरमें पंजाब, बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश दिल्ली पाकिस्तान आदिमें अतिवृष्टि जलप्लावनसे भयानक खण्डप्रलयका सा दृश्य उपस्थित कर दिया। ऐसी भयानक बाढ़ विगत ६० वर्षों के इतिहासमें नहीं मिलती। यह राहु और गुरुने प्रत्यक्ष चमत्कार दिखाया। इस जलप्लावनका उल्लेख हमने अपने पंचांग, हिन्दुस्तान, नवभारत, मकरन्द, और श्री-स्वाध्यायके गतांकमें किया था। कार्तिक कृष्ण १२ ता० ११ नवम्बरको शनिदेवने भी वृश्चिक राशिमें पदार्पण किया। इनके आने पर बम्बई, मध्यभारत, मध्यप्रदेश, विन्ध्य पंजाब आदि प्रान्तोंकी जनतामें राज्यपुनर्गठन आयोगकी रिपोर्टसे असन्तोषकी स्थिति बनी, श्रमिक वर्ग में हड़तालकी भावनाएं विशेष रूपसे जागृत होने लगीं और दिल्लीमें पाण्डुरोग (पीलिया) का भयानक आक्रमण प्रारम्भ हुआ। अब तक केवल दिल्ली नगरमें ५० सहस्र प्राणी इस रोगमें ग्रसित हो चुके हैं और अब यह संक्रामक रोगकी भांति अन्यान्य नगरोंमें भी न्यूनाधिक रूपमें फैलने

लगा है। ७०-८० वर्षके वृद्ध भी कहते हैं कि इस हेमन्त ऋतुमें ऐसा पीलिया हमने कभी नहीं देखा जैसा अब चल रहा है। यह सब शनि राहुके वृश्चिक राशिमें आनेका प्रत्यक्ष प्रभाव है। शनि वृश्चिकमें आनेके एक वर्ष बाद दिल्लीमें बुरा प्रभाव होना लिखा है परन्तु इस वर्ष राहु पहलेसे ही वृश्चिकमें आ गया इस कारण शनिने आते ही अपना प्रभाव दिखा दिया।

ता० १४ जनवरी १९५६ को सूर्यदेव मकर राशिमें जा रहे हैं इसी दिन शनि मंगलका युद्ध है। इस युतिके बाद (१४ जनवरीके बाद) पीलिया रोगका प्रभाव दिल्लीमें कम होने लगेगा। आगे माघ कृष्ण ८ ता० ४ फरवरीको मंगल राहुकी अंशसाम्य युति होगी। यह समय जब तक गुरु सिंहमें है (ता० १४ जनवरीसे १४ मार्च तक) उत्पातक रहेगा। इसमें आधिदैविक आधिभौतिक उत्पात होंगे। संसारके अनेक भागोंमें कहीं शीतकी लहर कहीं हिमपात ओलावृष्टि और शीतवायु प्रकोपसे हानि होगी। समुद्रमें तूफान आवेगा। दो तीन भयानक यान दुर्घटनाएं और अग्निकाण्ड भी होंगे। गोवामें एक बार फिर दमन चक्र जोरसे चलेगा। गोवामें पुर्तगीज शासनका अन्त वृश्चिकके शनिमें दो वर्षके अन्दर निश्चित रूपमें होगा। परन्तु अभी सितम्बर १९५६ तक पुर्तगाली अधिकारी उत्तरोत्तर अधिक क्रूर बनते जावेंगे। और शक्ति प्रदर्शनके साथ सभी उचित अनुचित उपायोंको अपनायेंगे। शान्तिपूर्वक सत्ता त्याग नहीं करेंगे। अक्तूबरमें शनि राहुकी पूर्णांशयुतिके समय गोवाकी स्थिति गम्भीर बनकर अन्तमें विवश होकर पुर्तगालको गोवा छोड़ना पड़ेगा। श्रमिकवर्ग में असन्तोष बढ़ेगा। कई स्थानोंमें अवांछनीय प्रदर्शन होंगे। ता० ४ फरवरी तक पीलिया और इन्फ्लूएन्जा रोगका यत्रतत्र थोड़ा बहुत प्रकोप रहेगा। आगामी वर्षमें जब राहु अपनी वक्र गतिसे शनिके दीप्तांशोंमें प्रवेश करेगा उस समय फिर भारतमें कहीं पीलिया, कहीं विषूचिका, कहीं उदर विकार श्लेष्मा खांसी ज्वर प्रकोपादिका उपद्रव बढ़ेगा। मेष, वृष, सिंह, वृश्चिक और धनुः राशि वाले व्यक्तियों तथा राष्ट्रोंके लिए यह शनि राहु संयोग नानाविध अशांति कारक रहेगा। इस युद्धमें मंगल स्वक्षेत्री बलवान् है और शनि निर्बल शत्रु क्षेत्रमें, अतः पश्चिमी राष्ट्र युरोप अमेरिकादि राष्ट्रों और अनार्य प्रकृतिके प्राणियोंको विशेष कष्ट उठाने पड़ेंगे। आर्य राष्ट्र भारतको कोई विशेष भय नहीं है।

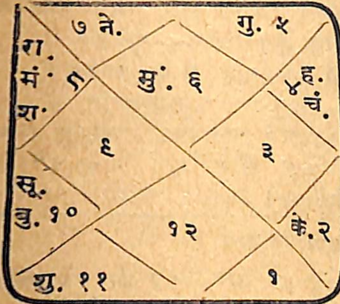
जो लोग ग्रहोंके प्रभावको नहीं मानते वे सोचें कि ८० वर्षके बाद ऐसी भयानक बाढ़ इस वर्ष ही क्यों आई? और दिल्लीमें ऐसा अश्रुतपूर्व पीलिया रोग वृश्चिकके शनि राहु योगमें ९० वर्ष बाद अभी क्यों फैला? ता० २९ दिसम्बरसे शनिके दीप्तांशमें मंगलके प्रवेश करनेके बाद शनि मंगलवारको ही छोटी बड़ी रेल मोटर ट्रक दुर्घटनाएं अधिक क्यों होने लगी हैं? अभी कल मंगलवार ता० १० जनवरीको झांसीके पास भयानक रेल दुर्घटना हुई है। अभी शनि मंगलकी युति होना शेष है। यह आगे भी कोई और बड़ी घटना करेगा। अतः मानना पड़ेगा कि भौतिक जगत् पर ग्रह नक्षत्रोंका प्रभाव निश्चित रूपसे होता है। इस विज्ञानका यदि व्यवस्थित रूपमें विशेषज्ञों द्वारा अन्वेषण अनुसन्धान सरकार एवं जनताके सहयोगसे प्रारम्भ किया जावे तो यह भारतीय ज्योतिर्विज्ञान संसारके लिए महान् उपकारक सिद्ध हो सकता है।

भारतीय गणराज्यका सातवाँ वर्ष

गत वर्ष सं० २०१२ के पंचांगमें हमने गणराज्यके छठे वर्षका जो विस्तृत भविष्य विवेचन किया था उससे पाठक परिचित ही हैं। राष्ट्रकी जन्म एवं वर्ष कुण्डलीके साथ राष्ट्रके प्रधान पुरुष (राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री) की जन्म-कुण्डलियोंके ग्रहोंका राष्ट्रकी प्रत्येक गतिविधिमें महत्वपूर्ण स्थान होता है। गत छठे गणराज्य वर्ष प्रवेशके लग्न और गणराज्यकी जन्मकुण्डलीके साथ महामहिम राष्ट्रपति श्री डा० राजेन्द्रप्रसादजी और प्रधान मंत्री श्री पं० जवाहरलाल नेहरूकी जन्मकुण्डलियों पर तुलनात्मक दृष्टिसे विचार करते हुए गत वर्षके पंचांग 'श्रीस्वाध्याय' और 'नवभारत टाइम्स' 'हिन्दुस्तान' आदि समाचार पत्रोंमें ग्रहयोगों पर विवेचना करते हुए स्पष्ट घोषित किया था कि"......अतः इन दोनों राष्ट्र नायक महापुरुषोंके द्वारा राष्ट्रका और राष्ट्रके द्वारा इनका गौरव संसारमें खूब बढ़ता रहेगा। ......श्रीनेहरूजी के द्वारा भारतकी सर्वतोमुखी उन्नति होगी। विदेशोंमें गौरव बढ़ेगा।......यद्यपि आरम्भमें अनेक आन्तरिक कठिनाइयाँ उत्पन्न होती दिखाई देंगी तथापि गुरु चलितमें

लग्नमें आ गया है एतदर्थ अन्तमें सभी कठिनाइयों पर विजय पा ली जावेगी······।'' इत्यादि।

अब २६ जनवरी १९५६ से प्रवेश होने वाले भारतीय गणराज्यके ७ वें वर्षकी कुण्डली यह है—सं० २०१२ पौष शु० १४ गुरुवार इष्ट घट्यादि ४०।४६ सूर्य ९।१२ लग्न ५।२७।



गणराज्यका यह सातवां वर्ष भारतके लिए सुख शान्ति समृद्धिका सन्देश लेकर आ रहा है। नये वर्षके सम्राट् गुरु और महामात्य शुक्र संसारको विनाशकी ओरसे विमुख करके स्नेह सद्भावनाकी ओर प्रेरित करनेवाले हैं। गणराज्य वर्ष लग्न कन्या है। महामहिम राष्ट्रपतिजीका जन्म लग्न और राशि इस लग्नसे केन्द्रकोणस्थ है और महामात्य श्री नेहरूजीका लग्न और राशि लाभ स्थानमें बलवान् चन्द्रमाके साथ है। अतः इस व र्ष भी भारतके इन दो महामानवों द्वारा विश्व-शान्तिके विशेष प्रयत्न होंगे, इनकी विश्व-व्यापी यश प्रतिष्ठा एवं लोकप्रियतामें वृद्धि होगी। श्री नेहरूजीके द्वारा भारतकी सर्वतोमुखी उन्नति होगी। भारतके शत्रुओंको मुंहकी खानी पड़ेगी। छोटे-बड़े विविध उद्योगोंसे उत्पादन बढ़ेगा, देशकी गौरव वृद्धि होगी। आर्थिक लाभ भी होगा। द्वितीय पंचवर्षीय योजनाके विकासोन्मुखी कार्योंमें प्रगति होगी। यथा—

शत्रुक्षयं मानसतुष्टि लाभं
प्रताप वृद्धि नृपतेः प्रसादम्।
शरीरपुष्टिं विविधोद्यमाँश्च
ददाति वित्तं मुथहा तनुस्था॥
जन्माब्दाङ्गर रन्ध्रपाब्द मुहथा-
नाथा बलाढ्यास्तदा।
रम्यं वर्षमुशन्ति सर्वमतुलं
सौख्यं यशोऽर्थागमः॥

जहां राजनैतिक, व्यावसायिक औद्योगिक दृष्टिसे भारत उन्नति करेगा वहाँ कुछ आन्तरिक उलझनें और स्वार्थी स्वजनोंके मतभेद (फूट) व विग्रहसे राष्ट्र नायकोंको क्लेश भी पहुँचेगा। क्योंकि वर्षराज गुरु व्ययमें और महामंत्री शुक्र भाग्येश धनेश होकर षष्ठस्थ हैं, ये स्वजनोंसे वैर, अन्तःकलह, रोगोत्पातादि और अपव्ययके द्योतक भी हैं—

स्वजनैर्विग्रहो दुःखं क्षयोत्पत्तिर्धनव्ययः।
प्रवासो नृपतेर्भीतिर्देवेज्ये व्ययसंस्थिते॥
वातश्लेष्माभवा पीड़ा क्षयोत्पत्तिर्धनक्षयः।
महाभयं गृहे कष्टं वर्षे षष्ठगते भृगौ॥

ये गुरु शुक्र आश्विन कृष्ण ११ ता. ३० सितम्बरसे मार्गशीर्ष कृष्ण १ ता० १९ नवम्बर १९५६ तक एक राशि में रहेंगे तथा इसी मार्गशीर्ष कृ० ३० ता० २८ नवम्बरको सूर्य ग्रहण और वृश्चिक राशिमें पंचग्रह योग बन रहा है, अतः यहांसे आगेका समय विशेषकर पश्चिमी संसार और साधारणतः भारतके लिए भी उत्पातकारक है। इसमें रोग दुर्भिक्ष अतिवृष्टि अनावृष्टि भूकम्प, पड़ौसी राष्ट्रों और राष्ट्रीयजनोंमें पारस्परिक मतभेद, सीमाविवाद, कहीं गृहयुद्ध तोड़-फोड़ दुर्घटनादिसे भी हानि संभव है। यथा—

गुरुशुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्।
अकाले वा भवेद् वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः॥
एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पंचखेचराः।
प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा॥

इस वर्षका उत्तरार्ध आश्विनसे आगेका समय विशेष राजनैतिक हलचल, सांठ-गांठ और गुप्त षड्यन्त्र तथा उत्पातका द्योतक है। गणराज्य लग्न और वर्षलग्न दोनोंसे धनेश त्रिकमें है, अतः वैसे तो सारा संसार ही आर्थिक संकटका अनुभव करेगा। अमेरिका और रूस में आर्थिक घुड़दौड़ सी प्रारम्भ होगी। परन्तु इस वर्ष अमेरिकाके अर्थबलका जादू जागृत एशिया पर न चल सकेगा। वर्षराज गुरुके कारण भारत संसारमें धनकी अपेक्षा सिद्धान्त और आत्मगौरवकी प्रतिष्ठा बढ़ावेगा। भारतमें चौर डाकुओंके उत्पात और विदेशी गुप्तचरोंकी गतिविधि भी बढ़ेगी। कुछ असन्तुष्ट अनार्य लोग राष्ट्रद्रोहमें पकड़े जावेंगे। गणराज्य कुण्डलीमें धनेश शुक्र छठे बैठकर चतुर्थेश सप्तमेश व्ययस्थ गुरुसे प्रतियोग कर रहा है अतः प्रचार कार्य सुरक्षा नवनिर्माणमें व्यय विशेष होगा। द्वितीय पंचवर्षीय योजना और अन्यान्य छोटी बड़ी योजनाओंमें राष्ट्रिय निधिका कुछ स्वार्थी लोगोंके द्वारा दुरुपयोग होगा। इस सम्बन्धमें अनेक भ्रष्टाचारी अधिकारियोंका भण्डा-

फोड़ होगा। स्त्रियोंका प्रभाव प्रत्येक क्षेत्रमें बढ़ेगा। धार्मिक भावना जागृत होगी। गोरक्षा और गोवाका प्रश्न वर्षान्तमें समाधान कारक बनेगा। काश्मीर और पाकिस्तानकी समस्या यथापूर्व बनी रहेगी। संस्कृत हिन्दीकी उपयोगिता बढ़ेगी। भारत विज्ञान आविष्कारमें अभूतपूर्व प्रगति करेगा। भूगर्भसे धातु तैल आदिके नवीन स्रोत उपलब्ध होंगे। दूसरा घर कुटुम्बस्थान भी है अतः अधिकारियोंमें कुटुम्ब पोषणकी भर्त्सना होगी। कुटुम्बमें वास्तविक प्रेम नहीं रहेगा। सीमाके पड़ौसी प्रान्तों और पति-पत्नी, भाई भाई एवं भागीदारोंमें भी पारस्परिक मनोमालिन्य बढ़ेगा। गुरु शुक्र हैं तो शुभ ग्रह, परन्तु परस्पर शत्रुभाव रखते हैं, अतः इस वर्ष ऊपर ऊपरसे दिखावेके लिए तो सब मित्र बनकर विश्वशांतिके लिए सद्भावना का भरसक प्रयत्न करेंगे, किन्तु अन्दरसे सब स्वार्थ-साधनमें तत्पर रहकर शक्तिसंचय करते रहेंगे। पश्चिम और पूर्वका आन्तरिक सन्देह वा अविश्वास दूर नहीं होगा।

भारतीय गणराज्यकी जन्मकुण्डली और इस सातवें वर्षलग्न तथा जगल्लग्न, श्रीराष्ट्रपति और प्रधान मन्त्री श्रीनेहरूजीकी ग्रहस्थितिका सम्यक् विचार करनेसे ज्ञात होता है कि इस वर्ष विश्वयुद्धका योग नहीं है। भारतकी कुण्डली में अनिष्टयोगकारक ग्रहोंकी अपेक्षा शुभयोगकारक ग्रह और पराक्रमेश बलवान है, अतः इस वर्षमें भारत सभी प्रकारकी सम्प्राप्त परिस्थितियोंका साहसपूर्वक प्रतीकार करता हुआ विश्वमें प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा, यह निश्चय है।

व्यापार व्यवसाय

इस वर्ष वृश्चिक राशिमें शनि राहुका योग ६० वर्ष बाद हुआ है। इसका विवेचन हम पहले कर चुके हैं। वृश्चिकका राहु और वृषभका केतु व्यापार व्यवसायमें क्रान्तिकारक उलटफेर करता है। धान्यपदार्थोंमें वृषका केतु तेजीकारक रहता है। इस कारण हमने गतवर्ष अपने 'श्रीविश्वविजय पंचांग' पृष्ठ ३६ पर व्यापार व्यवसाय शीर्षकमें श्रावणसे खाद्य पदार्थोंमें तेजी और कार्तिकसे माघ तक रुईमें तेजीका स्पष्ट उल्लेख किया था। हमारे विचारमें अभी माघ शुक्ला ७ ता० १८ फरवरी तक (जब तक मंगल भी वृश्चिकमें रहेगा तब तक) वस्तुमात्रमें तेजी का रुख रहेगा। ता० ५ फरवरीको मंगल-राहुकी अंश-साम्य युति हो रही है, इस कारण १०-१५ दिन पूर्व मंदी का एक झटका आ सकता है, किन्तु यह मंदी स्थायी नहीं होगी। माघ शु० ७ ता० १८ फरवरीके बाद प्रत्येक वस्तुमें पर्याप्त मंदी आवेगी। चांदी सोनामें ५) ७) और गुड़ गुवार सरसों अलसी अरंडामें २) ३) टूट जावेंगे। क्योंकि ता० १८ फरवरीको मंगल धनुराशिमें प्रवेश करके राशीश गुरुसे दृष्ट होगा। और माघ शु० सप्तमी को भरणी नक्षत्र भी है, यह संसारमें सुभिक्षकारक एवं रोग नाशक है। यथा—

माघमासस्य सप्तम्यां भरणी यदि जायते।
रोगनाशस्तदा लोके वसुधा बहुधान्यभृत् ॥

चैत्र शुक्लसे आगे व्यापारमें फिर भारी उलटफेर होगा उसका विवेचन आगामी अङ्क और सं० २००१३ के 'श्रीविश्वविजय-पंचांग'में देखिये।

[पृष्ठ ३८ का शेष]

कम तथा मंदी अधिक रहे। ता० १३ को बुध-शनि केन्द्रसे माल खरीदो, ता० १४ को बंद बाजार तक सब वस्तुओंमें तेजीका नफा आ जायेगा। ता० १५,१६ में उतनी ही मंदी आये, इसको दुतर्फा चांस कहते हैं। ता० १६ सूर्य नैपच्यून त्रिकोणयोगसे अच्छी घटा-बढ़ी चले नजराने निकल जायेगें सब वस्तुओंमें तेल पदार्थोंको छोड़कर ही व्यापार करें। ता० २३ सूर्य-शनि त्रिकोण योगसे भारी तेजी चालू हो जायेगी, यहाँ मंदी वाले मुंह ताकते रहेंगे। ता० २५ बुध गुरु षडष्टक योगसे समस्त बाजारोंमें मंदी चल पड़ेगी, बेचने वालों को ता० ३० तक लाभ। विशेष जानकारीके लिये हमारी 'व्यापार-रुख' देखें।

अप्रैल १९५६

ता० ३ अप्रैलसे बुध-राहु त्रिकोण, ता० ६ को सूर्य-बुध युति, ता० ७ को शु०-श० दृष्टि, ता० ११ को सूर्य-गुरु त्रिकोण इन चारों योगोंके अनुसार ता० ३ अप्रैलसे ता० १२ अप्रैल तक रुई ४०) ५०), चांदी ४) ४॥), सरसों अलसी बारदाना ३) ३॥), गुड़ गुवार मटर शेयर १।) १॥) तेजी पकड़ लेंगे। ता० १४ को बुध-शनि षडष्टक ता० १५ को शुक्र राहु दृष्टि ता० १८ को बुध-राहु षडष्टक, ता० १९ को सूर्य नैपच्यून दृष्टि, ता० २१ को बुध-शुक्र द्विर्द्वादश, ता० २२ को सूर्य-शनि षडष्टक यहां ता० १४ से २३ तक मंदी कारक योगोंकी लाइन बंध गई है, यहां हर उछाले माल बेचने वालोंको अच्छा लाभ होगा, योग महान् मंदीके चल पड़े हैं।

त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजय-पंचाग' से]

जनवरी १९५६ ई०

ता० २४ मंगलवार—पुत्रदा एकादशी व्रत
२५ बुधवार—प्रदोष व्रत
२६ गुरुवार—भारतीय गणराज्य स्थापना दिवस ६
२७ शुक्रवार—पौषी पूर्णिमा सत्यव्रत माघस्नानारम्भ
३० सोमवार—श्रीगणेश ४ संकटहरणी चौथव्रत चंद्रोदय स्टैंडर्ड टाइम रात्रि ९-५९

फरवरी १९५६ ई०

ता० ७ मंगलवार—षट्लिता एकादशी व्रत
९ गुरुवार—प्रदोष व्रत
११ शनिवार—शनैश्चरी मौनी अमावस प्रयागस्नान
१२ रविवार—कुम्भ संक्रांति मु० १५ पुण्यकाल दूसरे दिन, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती
१३ सोमवार—चन्द्रदर्शन मु० १५ संक्रांति पुण्यकाल
१६ गुरुवार—वसन्त पंचमी श्री ५
१८ शनिवार—रथसप्तमी अचला ७
१९ रविवार—भीष्माष्टमी
२२ बुधवार—जया एकादशी व्रत
२३ गुरुवार—प्रदोषव्रत भीष्म द्वादशी
२५ शनिवार—सत्यव्रतपूर्णिमा श्रीललिता जयन्ती
२६ रविवार—माघी पूर्णिमा माघस्नान समाप्ति
२९ बुधवार—श्रीगणेश चौथव्रत चन्द्रोदय ९।५७

मार्च १९५६ ई०

४ रविवार—श्री सीता ८ जयन्ती
८ गुरुवार—विजया एकादशी व्रत
९ शुक्रवार—प्रदोषव्रत
१० शनिवार—श्रीमहाशिवरात्रि १४ व्रत
११ रविवार—मेला शिवचचतुर्दशी
१२ सोमवार—सोमवती अमावस्या
१३ मंगलवार—चन्द्रदर्शन मीन संक्रान्ति मु. ४५ पुण्यकाल दूसरे दिन
१४ बुधवार—फुलहरिया २ संक्रान्ति पुण्यकाल
२२ गुरुवार—आमला एकादशीव्रत गुरुपुष्यामृतयोग
२४ शनिवार—शनिप्रदोष व्रत
२६ सोमवार—सत्यव्रत पूर्णिमा होलिका दहन
२७ मंगलवार—छारंडी धूलिवन्दन आम्रकुसुम प्राशन
३१ शनिवार—रंगपंचमी

अप्रैल १९५६ ई०

ता० २ सोमवार—श्रीशीतला सप्तमी
६ शुक्रवार—पाप मोचनी एकादशी व्रत स्मार्त
७ शनिवार—एकादशी व्रत वैष्णवसम्प्रदायका
८ रविवार—प्रदोषव्रत
१० मंगलवार – मेला पृथूदक (पिहोवा) चैत्र १४
११ बुधवार—अमावस्या।
१२ गुरुवार—चान्द्रसंवत्सरारम्भ, नवरात्रारंभ, घटस्थापन, चन्द्रदर्शन, श्रीगौतमजयन्ती
१३ शुक्रवार—मेषसंक्रान्ति मेला वैशाखी गणगौरी ३
१८ बुधवार—श्री दुर्गाष्टमी मेला श्रीमनसादेवी
१९ गुरुवार—श्रीरामनवमी व्रत

[पृष्ठ ७ का शेष]

न होगा। धर्मने एक समय इस देशकी एकताको सुरक्षित रखा। पर वह एकता इस देशमें राजनैतिक और प्रशासकीय एकताके साथ सांस्कृतिक एकताको पुष्ट करनेकी आवश्यकता है। आज बौद्धिक भारत अंग्रेजीमें सोचता और विचारता है और इसने बौद्धिक विचार-विनिमय और एकताको सुरक्षित रखा है। पर जब अंग्रेजी न रहेगी तब बौद्धिक भारत किस भाषामें सोचेगा और विचार करेगा? विश्वविद्यालयों की शिक्षाका माध्यम जब तक हिन्दी न होगी और उच्च-न्यायालयोंका सारा कार्य हिन्दीमें न होगा, यह बौद्धिक एकता स्थिर नहीं रह सकती। संस्कृत और अंग्रेजीने एक समय जो कार्य किया, वह कार्य आज हिन्दी ही कर सकती है। भारतकी ही नहीं, एशियाकी एकताका प्रतीक भी हिन्दी है। किन्तु खेदकी बात है कि संकीर्ण मनोवृत्ति और अदूर-दृष्टिके कारण इस सत्य और भविष्यकी इन सम्भावनाओं को हमारे वृद्ध राजनीतिज्ञ और शिक्षा-शास्त्री नहीं देख पा रहे। परन्तु सत्य यह कि भारतकी सांस्कृतिक एकताकी रक्षाके लिए हमें उच्च-शिक्षाका माध्यम हिन्दीको बनाना चाहिए। क्या इस तथ्यको हम अनुभव करेंगे।

भारत सरकारसे ज्योतिर्विदोंकी मांग

[अभी गत ता० ६ दिसम्बरको उत्तरभारतके ज्योतिर्विज्ञानाचार्योंके एक शिष्टमंडलने महामहिम श्री राष्ट्रपतिसे मिलकर भारतीय ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नति के लिए राजकीय सहयोगकी मांग की थी। शिष्टमंडलने ता० ११ दिसम्बरको अपनी प्रारम्भिक योजना को आवेदन-पत्रके रूपमें राष्ट्रपतिजीकी सेवामें प्रस्तुत किया उसे हम यहां अविकल रूपमें प्रकाशित कर रहे हैं ।]

नई दिल्ली
११ दिसम्बर १९५६ ई०

सेवा में—

श्रद्धेय राष्ट्रपति भारत सरकार, नई दिल्ली

मान्यवर महोदय !

हम त्रिस्कन्ध ज्योतिश्शास्त्रके जानकार निम्न ज्योतिर्विद् आपकी सेवामें यह निवेदन करना चाहते हैं कि हमारे इस आवेदन पत्र पर सहानुभूति एवं कृपापूर्वक विचार किया जाय।

भारतीय खगोल-विद्या, ग्रह नक्षत्र-विद्या और अन्तरिक्ष-विद्याकी गिरती अवस्थासे हमको अति वेदना पहुंची है और हम इस कारण बहुत चिन्तित हैं। इसके वास्तविक विद्वानोंकी संख्या दिन-प्रति-दिन घट रही है और इस विज्ञान पर कलंक लगाने वालोंकी संख्या दिन प्रति दिन बढ़ रही है। पुराने पण्डितोंमेंसे बहुत थोड़े पारंगत विद्वान् बचे हैं। हमें भय है कि कहीं इस विषयके पण्डितों और विद्वानोंका ही लोप न हो जाय।

प्राचीन भारतने गणित, खगोल-विद्या, और ग्रह-नक्षत्र विज्ञानमें जो प्रगति की थी, वह वस्तुत हम सबके लिए गर्वकी बात है। हमारे 'सिद्धान्त' के अनुसार वर्णित सूर्य चन्द्र आदि ग्रहोंकी गतिका ठीक ठीक ज्ञान आधुनिक विज्ञानसे सर्वथा मेल खाता है। इस विषयका ज्ञान और इसका व्यवहार हमारे समाजके ढांचेके साथ ओत-प्रोत है और हमारे दैनिक जीवन और संस्कृतिका एक आवश्यक भाग है। जिन लोगोंने हमसे यह ज्ञान सीखा था वे प्रगति पथ पर बहुत आगे बढ़े हुए हैं और हम बहुत पिछड़ गए हैं।

इस गिरावटके कारणोंको खोजना कठिन नहीं। प्राचीन भारतमें अच्छे ज्योतिषीकी पूजा की जाती थी और सब वर्गोंके लोगों—सर्वोच्चसे लेकर निम्न श्रेणि तक लोगों—द्वारा समानभावसे अत्यधिक आदर किया जाता था। हमारे शास्त्रोंके अनुसार 'सिद्धान्तों' के पूर्ण पण्डित और पारंगत विद्वान्के दर्शन मात्रासे पिछले दश दिनोंके पाप नष्ट हो जाते हैं—"दशदिन कृत पापं हन्ति सिद्धान्त-वेत्ता"। परन्तु अब नकली ज्योतिषियोंकी वृद्धिके कारण वास्तविक ज्योतिषी भी कुछ लोगोंकी आंखोंके कांटे हो गए हैं, कुछ उनकी ओर से उदासीन हो गए हैं और कुछ उनको नापसन्द करते हैं।

हमें इस बातका अभिमान है और हमारा मस्तक इस कारण गर्वसे उन्नत है कि विश्वमें एकमात्र हम ही लोग ऐसे हैं जिनके पास वैयक्तिक और राष्ट्रीय क्रिया-कलापका नियन्त्रण करने वाला 'मुहूर्त शास्त्र' वेला-पत्रक है। अन्य कोई भी राष्ट्र इस प्रकारकी सिद्धिका गर्व नहीं कर सकता। किन्तु इसका उचित अध्ययन न होने और इसका भाव और इसकी भावनाको ठीक ठीक न समझनेके कारण यह विषय भी तिरस्कार का हो गया है और लोग इसके विषयमें भ्रान्ति फैलाते हैं, इसका दुरुपयोग करते हैं। हमारा विचार है आप हमारी इन बातोंसे सहमत होंगे।

प्राचीन ऋषियोंने सरकारसे किसी प्रकारकी आर्थिक सहातया न ग्रहण करते हुए इस विज्ञानकी थाहका पता लगाया था, यद्यपि उनको भी आक्रमणोंके विरुद्ध राज्य-संरक्षणकी आवश्यकता होती थी। किन्तु आजकी बदली परिस्थितियों और अवस्थाओंमें सरकारी आर्थिक सहायताके बिना अन्य प्रगतिशील देशोंकी तुलनामें इस शास्त्र और विज्ञानका अध्ययन करना सम्भव नहीं रहा है। भारतीय समाजके नियंत्रणमें ज्योतिषीका सदा प्रमुख भाग रहा है। यदि उचित रीति और बुद्धिमत्तापूर्ण उपायसे उससे काम लिया जाय तो वह आज भी आधुनिक समाजको रूप देने उसका नियंत्रण करने और नियमन करनेमें महत्पूर्ण भाग ले सकता है। हम भगवद् गीताके इस सिद्धान्तमें

पूर्णतः विश्वास करते हैं कि भगवान्‌को हमें प्रसन्न करना चाहिए तो वे हम पर स्वतः कृपा करेंगे और अपने हृदयमें हमारे लिए स्थान रक्खेंगे। पारस्परिक सहायता और सद्भावना द्वारा हम सर्वोच्च पूर्णता और कल्याण प्राप्त कर सकते हैं। हम अपनी सरकारके साथ पूर्ण रूपसे सहयोग करनेको उत्सुक हैं जबकि सरकार भी हमारी सेवाएं देशके कल्याणके वास्ते लेनेको उत्सुक हो। अब तक सरकारने इस विषयका वैज्ञानिक आधार पर अध्ययन और अनुसन्धान करने और इस विज्ञानके पुनरुज्जीवनके वास्ते कुछ भी नहीं किया है। यदि पूर्वजों द्वारा दिए इस ज्ञानदीपको हम प्रज्वलित न रखेंगे तो हम वस्तुतः प्राचीन ऋषियोंके ऋणसे उऋण न हो सकेंगे।

इस श्रेष्ठ व उन्नत विज्ञानके प्राचीन गौरवको बनाए रखने—जोकि वेदाङ्गोंमें सर्वप्रथम है, और आधुनिक खोजों व आविष्कारोंसे प्रवृद्ध इस शास्त्रके पुनरुज्जीवन एवं वैज्ञानिक आधार पर अध्ययन—के वास्ते हमने एक साधारण योजना बनाई है, यह प्रारम्भिक योजना है और इसका समय समय पर विस्तार किया जा सकता है। यह इसका प्रारम्भ मात्र है, अन्त नहीं।

योजना इस प्रकार है—

महाराज सवाई जयसिंह द्वारा निर्मित वेधशाला, जोकि नई दिल्लीमें है और 'जन्तर-मन्तर' के नामसे प्रसिद्ध है, अब केवल कौतुकका विषय रह गया है। यह वेधशाला अब वेधशालाके रूपमें काम नहीं कर रही। यहाँ ग्रह-नक्षत्रोंका पर्यवेक्षण करनेके उद्देश्यसे इसका निर्माण किया गया था, पर वह कार्य अब यहाँ नहीं हो रहा। इसमेंसे कुछ क तो ढाँचा भी टूट रहा है, और कुछ पर अंकित अंक अस्पष्ट हैं वे पढ़े भी नहीं जाते।

हमारा निवेदन है कि यह वेधशाला हमको हस्तान्तरित कर दी जाय, आवश्यक परिवर्तन एवं परिवर्धनके साथ हम यहां अनुसन्धान केन्द्र स्थापित करेंगे और इसको चलती एवं काम करती वेधशाला बना देंगे। हमारे सर्वश्रेष्ठ और अनुभवी विद्वान् प्राचीन प्रणाली द्वारा दीर्घकालिक भविष्य वाणी करनेमें सरकारकी सहायता करेंगे। आधुनिक आवह-विद् पर्यवेक्षण और ग्राफ द्वारा तीन दिन पहलेकी वायुकी घनताका माप, दिशा व दबाव, ताप व आर्द्रताके विषयमें भविष्यवाणी कर सकते हैं। इसकी यथार्थता और निश्चितता का प्रतिशत बहुत ऊंचा नहीं है। हम इस प्रकारकी भविष्य वाणी छः मास पहलेकी कर सकते हैं। इस दिशामें हमें अंशदान करनेसे पहले कुछ संगठनकी आवश्यकता होगी। हम प्राचीन पांडुलिपियोंका संग्रह करेंगे, उनका सम्पादन कर उनको प्रकाशित करेंगे। वेधशालाके केन्द्रीय अद्भुता-लयमें प्रत्येक प्राप्त प्राचीन ज्योतिषके उपकरणोंका जो कि व्यक्तियों और सरकारोंके पास है, संग्रह करेंगे। प्रथम वर्षके व्ययका यह अनुमान है। इसके लिए अगले पांच वर्षोंके वास्ते भी प्रतिवर्ष यही राशि अपेक्षित होगी। अतः आगामी पंचवर्षीय नियोजनमें इसको भी सम्मिलित करना चाहिए।

१. वेधशालामें भूमध्य रेखाका १० इंच व्यासका दूरवीक्षण यंत्र (टेलिस्कोप) कैमरा सहित	४००००)
२. केन्द्रीयपुस्तकालयमें पुस्तकों के लिए	२००००)
३. भवन निर्माण	२००००)
४. कार्यकर्त्ताओंका वेतन	३००००)
५. विविध व्यय	५०००)
योग	१२५०००)

अग्रिम वर्षोंमें वेधशाला अन्य आधुनिक साज सामान जैसे संक्रमण-चक्र, एलटाजिमैथ, साइडिरीयल घड़ी आदि से सुसज्जित होगी। ये उपकरण अन्तरिक्ष पर्य-वेक्षणके वास्ते आवश्यक हैं। इसके अतिरिक्त आवहके उप-करण जैसे एनीमोग्राफ (वायुका वेग चित्रित करनेका यन्त्र) बारोग्राफ, थर्माग्राफ हाइड्रोग्राफ और धूप लेखक (सन-शाइन रिकार्डर) आदि भी लिए जावेंगे।

हमारे सौभाग्यसे हमारे मध्य कुछ ऐसे पंडित और विद्वान् हैं जो प्राचीन शास्त्रोंके जहां पंडित हैं वहां आधु-निक ज्योतिर्विज्ञानके भी ज्ञाता हैं और वे आधुनिक उपकरणोंके समान आधुनिक यंत्रोंका भी उपयोग करनेमें सिद्धहस्त हैं। उन्होंने विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन किया है और हम प्राचीन विज्ञान के साथ साथ आधुनिक विज्ञानका लाभ उठानेको उत्सुक हैं। हम सबको विश्वास है कि आप हमारे विचार और संकल्प का आदर करेंगे और उनकी सचाईमें विश्वास करेंगे, तथा राष्ट्रके कल्याणकी शुभेच्छा और सद्भावनामें हमारे साथ

सहयोग करेंगे। हम आशा करते हैं कि इन विचारोंको शीघ्र ही मूर्तरूप देनेमें आप हमारी सहायता करेंगे। धन्यवाद और आशीर्वाद।

हम हैं आपके विश्वस्त—
(हस्ताचर) गोस्वामी गणेशदत्त।
हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य।
काशीराम शर्मा B. A. ज्योतिषाचार्य
गोस्वामी गिरिधारीलाल शास्त्री।

[शिष्टमण्डलके शेष सदस्य दूसरे दिन ही आवश्यक कार्यवश यह कहकर चले गए थे कि "आवेदन पत्र लिखकर श्री प्रो० काशीरामजी और पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी श्री राष्ट्रपतिजीकी सेवामें प्रस्तुत कर दें, हम सब सहमत हैं। इस कारण उपर्युक्त पत्रमें शेष सदस्योंके हस्ताचर न हो सके :]

नम्र निवेदन

ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नतिके लिए हमने जो यह प्रयत्न प्रारम्भ किया है इसमें सम्पूर्ण भारतके सभी ज्योतिर्विज्ञानाचार्योंके सहयोगकी आवश्यकता है। भारतमें कहीं भी ज्योतिष-शास्त्रके किसी भी अङ्गके जो विशेषज्ञ अनुभवी विद्वान् हों वे कृपापूर्वक इस सम्बन्धमें अपना परामर्श निम्न पते पर हमें अवश्य भेजें। जिन सज्जनोंको ऐसे अनुभवी विद्वान् विशेषज्ञ दैवज्ञोंका परिचय हो वे उनका पूरा पता भेजें। पारस्परिक सहयोग और संगठनसे ही इस प्राचीन विज्ञानकी वास्तविक सेवा हो सकेगी।

भारतके सौभाग्यसे हमें राष्ट्रपति ऐसे मिले हैं जिनके हृदयमें प्राचीन भारतीय विद्या, कला और संस्कृतिके प्रति अनन्य अनुराग है। आप अत्यन्त नम्र तत्त्वदर्शी अजातशत्रु राजर्षि हैं, वास्तविक प्राचीन भव्य भारतके आप प्रतीक हैं। शिष्टमण्डलके जिन सदस्योंने निकटसे आपके दर्शन नहीं किये थे उन्होंने उस दिन लौट कर यही कहा कि 'आज हम ने सत्तात् विदेह जनकराज स्वरूप राष्ट्रपतिके दर्शन किये।' शिष्टमण्डलके प्रवक्ता द्वारा ज्योतिषकी वैज्ञानिकता पर चर्चा चलनेके मध्य महामहिम श्री राष्ट्रपतिजीने यह भी कहा कि—"अनेक धर्मार्थ संस्थाओंके पास पर्याप्त सम्पत्ति है। वे संस्कृत-विद्यालय खोल रहे हैं, कुरुक्षेत्रमें भी संस्कृत-विश्वविद्यालय खुलने वाला है, ऐसे लोगोंको चाहिए कि ज्योतिषका एक विशाल विश्वविद्यालय स्थापित करें। संस्कृतके विद्यालय तो बहुत हैं पर ज्योतिषका कोई नहीं।" इससे आप समझ सकते हैं कि महामहिम राष्ट्रपतिके हृदय में भारतीय ज्योतिर्विज्ञानके प्रति कितनी निष्ठा है।

इस समय यदि भारतके सभी विशेषज्ञ विद्वान् संगठित होकर कार्य-क्षेत्रमें उतर पड़ेंगे तो राजकीय सहयोग भी अवश्य प्राप्त होगा और हमारा यह प्राचीन ज्योतिर्विज्ञान पुनः पूर्व पदपर प्रतिष्ठित होकर विश्वका कल्याण कर सकेगा।

विनीत—
हरदेव शर्मा त्रिवेदी
श्रीस्वाध्याय सदन, सोलन (शिमला)

रो रही है गाय !

[श्री शान्त शास्त्री 'शाव्हिास']

रो रही है विश्वधाय गाय हाय ! निस्सहाय।
तीस कोटि-पुत्र धाय हो रही सतत-अकाय॥
हिन्दमें स्वराज्य है,
गवाश भी न प्राज्य है।
तो तक्र शक्रको अलभ्य-
क्यों, अप्राप्य आज्य है ?
कह रहे हैं नेतृगण कि आज राम राज्य है !!
फिर प्रजाकी भावना बनी हुई क्यों त्याज्य है ?
पूछती है बे-जबान-गाय क्या यही सुराज ?
सैकड़ों ही कट रही हैं बेकसूर हाय ! आज !!
न्याय है यही ? कि पुत्र, मातुको ही काट खाय ?
रो रह है निस्सहाय हाय ! गाय विश्वधाय॥१॥
कृषि-प्रधान देश में !
ऋषि-प्रधान देश में !
अघन्य धेनु कट रही है !
वृष्टि धान्य देश में !!
धर्म-प्राण राष्ट्रकी, सुप्राण भूत धेनु यह !
रही न शेष तो भला बचेगी राष्ट्र रेणु यह !!
क्यों न सोचते हैं हानि लाभ हम स्वयं भला ?
घट रही है राष्ट्रकी क्यों आज संपदा कला ?
विचार का नहीं समय, है ग्राह्य आज यह उपाय-
कटे न हिन्दू-भूमि पर कि आजसे कदापि गाय।
करे रुदन न विश्वधाय बनी रहे न निस्सहाय।

भोग

[श्री सम्पूर्ण दत्तजी मिश्र एम० ए० कविपुण्डरीक]

कमलरस पानकी लिप्सा मधुपको शाप बन बैठी ।
विषय रस भोगकी तृष्णा मनुजको ताप बन बैठी ॥
किया करते पुरुष सम्मान सब सुन्दर युवतियोंका ।
बनी हैं हेतु विषकन्या नृपोंकी नाशगतियोंका ।
नहीं देता इसी आधार पर धिक्कार नारीको ।
बना लेती हमारी बुद्धि साधन सृष्टि सारिको ।
प्रकृतिमें रूप गुणवत्ता कहीं अभिशाप बन बैठी ॥१॥

समझता विश्व, जीवनमें सुखोंके योग आते हैं ।
अचम्भा क्या उन्हींमें जो बुरे दिन भी समाते हैं ।
अनिष्टापत्तिमें सबके हृदयको दुःख होता है ।
मनुज अनुकूलताके कूल पर सानन्द सोता है ।
वियोगीको विगतचिन्ता सुखद सन्ताप बन बैठी ॥२॥

सभीके सामने संन्यासियोंके शङ्ख बजते हैं ।
यहीं फिर भी सदा रथ रागियोंके साथ सजते हैं ।
सुना है कर्मके बल पर कभी दुष्कृति बदल जाती ।
कभी संस्कारकी तेजस्विता पर धूल पड़ जाती ।
तनिक या मोह या पशुता नियतिका बाप बन बैठी ॥३॥

न जाने किन क्षणोंमें कौन क्या बलिदान कर जाते ।
कहें क्या कौन किस ढंगसे किसे क्या दान कर जाते ।
प्रशंसामें किसीकी लोक ये झण्डे हिलाता है ।
किसीके नाम ले-लेकर मुखर हो गीत गाता है ।
प्रयासोंकी सफलता मान्यताका माप बन बैठी ॥४॥

समूहोंकी नियोजित मृत्युमें संसार जीता है ।
कभी पीयूषके अथवा गरलके कंस (प्याले) पीता है ।
परस्पर तन्तुसे उलझे हुए वल्ली वितानोंमें ।
रमी जो व्यक्ति यौवनकी विलसती मोहतानोंमें ।
चलाती थी कभी चर्चा विषय वह आप बन बैठी ॥५॥

इसीका भान कर कुछ वीर जगको छोड़ जाते हैं ।
बदलने पर तुले इस रूपसे मुख मोड़ जाते हैं ।
कहीं जो आज सच है वह कभी होता नहीं सपना ।
ला फिर कौन ऐसा जो यहां कुछ त्यागता अपना ।
जगत्में दोषकी सत्ता विरतिका चाप बन बैठी ॥६॥

सतत आघात कर जन-तार पर वीणा बजाते हैं ।
किसीके सभ्य रोनेकी था उस पर सुनाते हैं ।
चुभा दूं जो सुई गायक ! कहो कैसा सुहायेगा ?
थपकती तालसे संगत किधर संगीत जायेगा ?
विलापीके स्वरों की योजना आलाप बन बैठी ॥७॥

सूचना—पंचांगकार्यमें व्यस्त रहने और अस्वस्थताके कारण समालोचनार्थ प्राप्त पुस्तकोंकी आलोचना नहीं लिखी जा सकी। आगामी अंकोंमें उन पुस्तकोंका परिचय दिया जावेगा। समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो प्रतियाँ भेजनी चाहिएं। —सम्पादक

दैवीचांस कार्यालयके नियम

(१) हमको गुरु-कृपासे चिरकालकी साधनाके अनन्तर इष्टदेवका अनुग्रह प्राप्त हुआ है, जिनके अनुग्रहसे अनुष्ठान द्वारा इच्छित वस्तुमें सीधी लाइनका दैवीचांस प्राप्त किया जाता है। हम अपने प्रेमी ग्राहकोंको दैवीचांसके अनेक चमत्कार गत तीन चार वर्षोंसे बराबर दिखाते चले आ रहे हैं। हम विशेषकर रुई, कपास, सोना, चांदी, सरसों, गुड़, गुवारा, चनाके वायदा तथा हाजर, अरण्डी वायदा बम्बई और काटन वायदा बम्बईके ही दैवीचांस प्राप्त करते हैं, अतः इन्हींके सम्बन्धमें ही पत्र-व्यवहार करें।

(२) कोई सज्जन किसी खास एक वस्तुका भाव अथवा अपनी विशेष समस्याका समाधान दैवीचांस कार्यालय द्वारा जनना चाहें तो वे पांचसौ रुपया भेजकर अपना अनुष्ठान करवाके इच्छित वस्तुका दैवीचांस अथवा अपनी समस्या का समाधान प्राप्त कर सकते हैं। यदि कोई सज्जन अपने स्थान पर ही बुलाकर अनुष्ठान कराना चाहें तो स्थान और समयकी परिस्थितिके अनुसार फीस १०००) से ५०००) तक देनी होगी।

(३) १०१) रु० पेशगी भेजकर लाभमें से धर्मपूर्वक दशांश देनेकी प्रतिज्ञा करने वाले व्यापारीको एक वस्तुकी एकतर्फा तेजी अथवा मंदीकी लाइन बताई जाती है। एक वस्तुमें पूरी मंदी और तेजीकी वर्ष भरकी सम्पूर्ण लाइनकी फीस २५१) रु० है। इन सम्पूर्ण लाइन वालोंको भी लाभका दशांश एक लाइन पूरी होते ही सौदा काट कर साथ साथ भेजना होगा।

(४) जो व्यापारी वर्षारम्भमें पहले एक मुश्त ५००) रु० भेजकर एक वर्षके लिए स्थायी ग्राहक बन जायेंगे उनको वर्षभरमें सभी दैवीचांसोंकी जनरल लाइनें यथासमय पत्र द्वारा एवं विशेष परिस्थितिमें तार द्वारा वर्ष भर तक दी जावेगी। लाभका दशांश इन्हें भी साथ ही साथ भेजना पड़ेगा।

(५) जो ग्राहक लाभका दशांश धर्मपूर्वक पूरा नहीं देंगे वा देनेमें आनाकानी करेंगे ऐसे स्वार्थी व्यापारी आगेके लिए दैवीचांससे लाभ नहीं उठा सकेंगे।

(६) ५००) रु० भेजने वाले स्थायी वार्षिक ग्राहकोंको जनरल लाइनोंमें जो मंदी तेजीके रियेक्शन आते रहते हैं उनकी भी यथासमय सूचना अपने तत्कालीन दैवी अनुभवों द्वारा दी जाती है।

(७) व्यापारमें किस वस्तुसे लाभ कब होगा? और ग्रह-स्थिति भाग्योदय लाभकारक है भी या नहीं? इसका निर्णय किसी योग्य विद्वान्से जन्मपत्र वर्षफल द्वारा करवा लेवें। यदि हमारे द्वारा निर्णय करवाना चाहें तो कुण्डलीके साथ फीस ५१) भेजें। अथवा असमर्थ व्यापारी प्रश्न तिथि तारीख और समय (टाइम) के साथ ५) भेजकर प्रश्न-कुण्डली द्वारा भी अपने भाग्यका निर्णय करा सकते हैं।

(८) यदि किसीको हमारे दैवीचांसों पर विश्वास न हो तो वे सज्जन अपनी फीस भारतके सुप्रसिद्ध इस पत्र 'श्रीस्वाध्याय' के सम्पादक श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी सोलन (शिमला) के पास अथवा हमारे नगरके किसी भी प्रतिष्ठित व्यक्तिके पास इस शर्त पर जमा करा देवें कि चांस सत्य होने पर ही वह रुपया हमें मिले, अन्यथा आपको वापस लौटा दिया जाये। इससे अधिक हम और क्या विश्वास दिला सकते हैं।

(९) फीसमें किसी प्रकारकी न्यूनता करने वा बादमें देनेके लिए व्यर्थ पत्र लिखकर समय नष्ट न करें। उत्तरके लिए जवाबी पत्र अथवा टिकट भेजें।

(१०) दैवीचांस किसी दूसरे व्यक्तिको नहीं बताना चाहिए, अन्यथा लाभ न उठा सकेंगे।

पता—ज्योतिर्विद् वैद्य पंचानन शर्मा मौद्गल्य, दैवीचांस कार्यालय, श्रीधन्वन्तरि फार्मेसी
मु० पो० लहरागागा मण्डी, जि० संगरूर (पैप्सू)।

तीसरी बार महामहिम आचार्य छप गया

श्रीमदमृतवाग्भवप्रणीत

श्रीराष्ट्रालोक

राष्ट्रभाषानुवादसहित

राष्ट्रवादी ही आर्य हैं। आर्य ही शान्तिकी स्थापना कर सकते हैं।

भारत भारतीयोंका है

स्वातन्त्र्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। राष्ट्र हमारा पिता है, माता है और आचार्य है। हम सदा उसके सेवक हैं। हमारा राष्ट्र हमें भोग और मोक्ष दोनों देता है।

हम सच्चे राष्ट्रिय हैं

अभारतीय भारत के अतिथि हो सकते हैं, राष्ट्रिय नहीं

हम संक्रान्तिका सदा आदर करते हैं। हमें ऐसी शान्ति नहीं चाहिए जो राष्ट्रको परतन्त्र बनाए।

राष्ट्रिय राष्ट्रके पुत्र हैं, पति नहीं

भारतीय अपने आपको हिन्दू माननेमें गौरवका अनुभव करते हैं। भारतीय आदर्शके विपरीत क्रान्ति किंक्रान्ति है संक्रान्ति नहीं। यदि आप इन भावोंसे स्नेह करते हैं तो 'श्रीराष्ट्रालोक' अवश्य पढ़िये।

श्रीराष्ट्रालोक परम पवित्र भारतीय आदर्शका एक जीवन शास्त्र है।

राष्ट्रप्रेमी इसका आदर कर रहे हैं। जनता हाथों-हाथ अपना रही है। आप भी आज ही मँगाइये। मूल्य ॥) मार्ग व्यय -) 'श्रीस्वाध्याय' और 'श्रीविश्वविजय-पंचाङ्ग' के स्थायी ग्राहकों तथा विद्यार्थियोंको मार्गव्यय सहित ।=) में।

महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्यप्रणीत

श्रीआत्मविलास

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्ग प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है, जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगत् में हलचल-सी मच गई और सैंकड़ों प्रतियां हाथों-हाथ लग गईं। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शांत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है? परमात्मा क्या है? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है। हम क्या हैं और हमें क्या करना चाहिए? दर्शन किसे कहते हैं? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां होता है? उनकी उपपत्ति क्या है? आदि-आदि आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भलीभांति परिचित होकर आत्मसाक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिये। आपके सभी सन्देह दूर होकर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा। मूल्य २) मार्ग व्यय ॥=) अलग।

श्रीपञ्चस्तवी

द्वितीय संस्करण प्रस्तुत है। इसमें प्रथम लघुस्तवकी ७०० वर्ष प्राचीन संस्कृत टीका तथा भारतकी वर्तमान राष्ट्रभाषानुवादके साथ मुद्रित है। शेष चार स्त्रोत मूल मात्र है। मूल्य ॥) डाक व्यय दो आने अलग।

श्रीमहानुभवशक्तिस्तव

संस्कृत तथा हिन्दी व्याख्याके साथ मूल्य ॥) आठ आने। यह पुस्तक कितनी उपयोगी एवं महत्त्वमण्डित है यह सब देखने पर ही विदित होगा।

महामहिम आचार्य श्री १०८ अमृतवाग्भव विरचित—

प्रकाशित होने वाले ग्रन्थ

१. श्रीपरशुरामस्तोत्र, सचित्र राष्ट्रभाषानुवादसहित।

२. श्रीसप्तपदी-हृदय, द्वितीय-संस्करण, संस्कृत टीका तथा राष्ट्रभाषानुवाद सहित।

३. श्रीसंक्रांति-पंचदशी, संस्कृत टीका भाषानुवाद स.।

व्यवस्थापक—'श्रीस्वाध्याय' सोलन शिमला।

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस दिल्लीमें छपकर 'श्रीस्वाध्यायसदन' सोलन (शिमला) से प्रकाशित।

महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य प्रणीत

श्रीआत्मविलास

(सुन्दरी राष्ट्रभाषा व्याख्या सहित)

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्गप्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक् जगत्में हलचल-सी मच गई और सैंकड़ों प्रतियां हाथोंहाथ लग गईं। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शान्त होता है, संसार बाहर भीतर सम्पूर्ण रूपसे आनन्दमय प्रतीत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है? परमात्मा क्या है? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है? हम क्या हैं और हमें क्या करना चाहिए? दर्शन किसे कहते हैं? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां होता है? उनकी उत्पत्ति क्या है? आदि आदि आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भली-भांति परीचित हो कर आत्म-साक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिये। आपके सभी सन्देह दूर होकर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा। मूल्य २) रु० मात्र।

'श्रीस्वाध्याय' के संस्थापक उक्त आचार्यचरणों द्वारा निर्मित 'श्रीपरशुरामस्तोत्र' और 'श्रीसप्तपदीहृदय' राष्ट्रभाषानुवाद सहित तथा आप हीके द्वारा सम्पादित 'श्रीपञ्चस्तवी' ये तीनों अद्भुत पुस्तकें 'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहकोंको मार्ग व्ययके लिये दो आनेके टिकट प्राप्त होने पर भेजी जाती हैं। पुराने ग्राहकोंको उक्त पुस्तकें अब नहीं मिलेंगी।

'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्क

प्रथम वर्षकी फाइल—

१—शरदङ्क १।।) रु० २—हेमन्ताङ्क २।।) रु०

३—वसन्ताङ्क १।।) रु० ४—ग्रीष्माङ्क १।।) रु०

चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य ६) रु०

द्वितीय वर्षकी फाइल—

१—शरदङ्क ४) रु० २—हेमन्ताङ्क २) रु०

३—वसन्ताङ्क १।।) रु० ४—ग्रीष्माङ्क १।।) रु०

चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य १०) रु०

तृतीय वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ५।।) रु० २—हेमन्ताङ्क २) रु०

३—वसन्ताङ्क १।।।) रु० ४—ग्रीष्माङ्क १।।।) रु०

चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य १०) रु०

चतुर्थ वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क अप्राप्य २—हेमन्ताङ्क १) रु०

३—वसन्ताङ्क ३) रु० ४—ग्रीष्माङ्क २) रु०

तीनों अङ्कोंका इकट्ठा मू० ६।।) रु०

पंचम वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ५) रु० २—हेमन्ताङ्क १) रु०

३—साहित्याङ्क २) रु० ४—ग्रीष्माङ्क अप्राप्य

तीनों अङ्कोंका इकट्ठा मूल्य ७) रु०

छठे वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ३) रु० २—हेमन्ताङ्क ४) रु०

३—वसन्ताङ्क १) रु० ४—ग्रीष्माङ्क १) रु०

चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य ७) रु०

सातवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ३) रु० २—हेमन्ताङ्क ४) रु०

३—वसन्ताङ्क अप्राप्य ग्रीष्माङ्क १) रु०

आप व्यापार कैसे करें ?

'श्रीस्वाध्याय' से व्यापारी वर्गका भी विशेष स्नेह है। उन्हीके आग्रहसे हम भारतवर्षके प्रसिद्ध गण्यमान्य ज्योतिषियोंके व्यापार पर प्रकाश डालने वाले अनेक विशेष लेख इसमें निरन्तर प्रकाशित कर रहे हैं। हमारी इस योजनासे भारतके हजारों व्यापारियोंने पर्याप्त लाभ उठाया और उठाते जा रहे हैं।

इस आधुनिक सट्टे के व्यापारका प्राचीन ग्रन्थोंमें कहीं स्पष्ट उल्लेख नहीं है। विद्वान् दैवज्ञ यथाशक्ति इस पर अभी अपना-अपना अनुसन्धान कर रहे हैं। जब तक इस विषय पर सामूहिक रूपेण पूर्ण अनुसन्धान (रिसर्च) न हो जाये तबतक किसी एक ज्योतिषीकी राय निश्चित रूपमें शतप्रतिशत सदा ठीक उतरना सर्वथा असम्भव है। एक ज्योतिषीकी रायसे व्यापारियोंको उतना लाभ सम्भव नहीं जितना कि भारतके पांच सात अनुभवी ज्योतिषियों की रायके समन्वय या मिलानसे हो सकता है। यदि कोई व्यापारी ठीक ठीक मिलान करके अपनी लाइन न बना सकें या कोई बात समझमें न आवे तो वे सज्जन 'व्यवस्थापक' श्रीस्वाध्याय सदन सोलन (शिमला) के पते पर उत्तरके लिए टिकट भेज कर ठीक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

आपके लाभकी बात

'श्रीस्वाध्याय' निरन्तर सात वर्षोंसे आपकी सेवा कर रहा है। आपकी राष्ट्रिय सामाजिक और पारिवारिक समस्याओंके सुझावोंके साथ-साथ आपको व्यापारिक बल भी दे रहा है।

स्वतन्त्र भारतकी इस विकासोन्मुखी वेलामें इष्ट मित्रोंके परामर्शसे हम 'श्रीस्वाध्याय' को मासिक करनेका विचार कर रहे हैं। वर्तमान प्रेस-सम्बन्धी असुविधाओं पर विचार करते हुए यह भी निश्चित किया है कि 'श्रीस्वाध्याय' अपने ही प्रेसमें छपाया जाय, जिससे ग्राहकोंको 'श्रीस्वाध्याय' यथासमय प्राप्त हो और हम भी व्यर्थ परिश्रममें अपना समय न लगाकर देशकी समस्याओंके सुझावोंमें लगा सकें

'श्रीस्वाध्याय' जनताका पत्र है, इसलिए हम प्रेस भी जनताका ही चाहते हैं। अतः जो सज्जन हमारे इस कार्यमें सम्मिलित होना चाहें वे हमें सूचित करें।

प्रेस-सम्बन्धी-विचारधारा

(१) 'श्रीस्वाध्याय'के इस प्रेसका नाम 'श्रीमुद्रणालय' (Shree Press) रखा जायगा।

(२) यह प्रेस कमसेकम ५० हजारकी रकमसे प्रारम्भ किया जायगा।

(३) ५० हजार रुपयेके ऐसे अर्थभाग (शेयर) रहेंगे जिन्हें कोई भी व्यक्ति खरीद कर इस प्रेसमें अपना भाग स्थापित कर सकेगा। प्रेस भागों [शेयरों] का मूल्य इस प्रकार होगा—

(क) साधारण अर्थभाग (शेयर) १००) रु० (ख) मध्यम अर्थभाग (शेयर) ५००) रु०

(ग) उत्तम अर्थ-भाग (शेयर) १०००) रु० (घ) विशेष अर्थभाग (शेयर) ५०००) रु०

(४) विशेष अर्थभाग खरीदने वाले कुछ व्यक्तियोंकी एक समिति होगी, जिन पर प्रेसका उत्तरदायित्व रहेगा।

(५) इस प्रेस सम्बन्धी विचारधारा (स्कीम) के अन्तर्गत 'श्रीस्वाध्याय' मासिकपत्र 'श्रीविश्वविजय-पंचांग' तथा 'श्रीग्रन्थमाला' भी रहेगी।

(६) विशेष अर्थ-भाग खरीदने वालोंको प्रेस २) प्रतिशत वार्षिक ब्याज देगा।

(७) उत्तम अर्थभाग (शेयर) खरीदने वालोंको १) प्रतिशत वार्षिक ब्याज देगा।

(८) साधारण और मध्यम अर्थभाग (शेयर) खरीदने वाले व्यक्ति केवल आयके ही भागी होंगे।

(९) प्रेसके अर्थभाग (शेयर) कभी भी किसीको बेचे जा सकते हैं।

हमें आशा एवं विश्वास है कि यह कार्य शीघ्र ही सम्पन्न होगा। आपका सहयोग प्रार्थनीय है। विशेष जानकारीके लिए लिखिये —

व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन [शिमला]

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस दिल्ली में छपकर श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला) से प्रकाशित।